समालोचना

६१६
ज०२६

आयुर्वेदमार्त्तण्ड

पं० जगन्नाथ शर्म्मा राजवैद्य

विद्यासागर रचित

ज्वर चिकित्सा

प्रथम भाग

वैद्यवर पं० अमरनाथ शर्म्मा

बी. ए. एल एल. बी. द्वारा

पुनः संस्करण ।

ज्वर चिकित्सा ।

प्रथम भाग

जिसको स्वर्गीय आयुर्वेदमार्त्तण्ड पण्डित जगन्नाथ शर्म्मा
राजवैद्य विद्यासागर ने लोकोपकारार्थ सुश्रुतादि
ग्रन्थों की सहायता लेकर वर्त्तमान देश
कालानुसार सप्रमाण देवनागरी
शुद्ध भाषा में रचा ।

जिसमें ज्वर का प्राग्रूप, निदान, ज्वर वाले को कैसे
मकान में रखना, कैसा जल पिलाना, किसे लंघन
कराना किसे न कराना बड़ी उत्तमता के साथ
लिखा गया है । सैकड़ों बार परीक्षा से
सिद्ध और परीक्षित २ औषधियां
जिनसे असंख्य रोगी आरोग्य
हुये हैं लिखी गई हैं ।

जिसे

पं० अमरनाथ शर्म्मा बी. ए. एल एल. बी. ने पुनः
संशोधन कर निज एडवर्ड यंत्रालय प्रयाग में
मुद्रित करा के प्रकाश किया ।

दूसरी बार ५००] सन् १९१६ ई० [मूल्य ॥)

Arya Bhasha Pustakalaya
Nagari Pracharini Sabha
BENARES CITY.

ज्वर चिकित्सा ।

ज्वर ।

भाषा में इसे बुखार, अंगरेजी में फीवर और यूनानी में तप कहते हैं। ज्वर वह रोग है जिसका अधिकार देश मात्र पर सर्वदा सर्व काल में बनाही रहता है, किसी २ वर्ष में सर्व देशों अथवा एक दो देशों में ज्वर का इतना प्रचंड वेग बढ़ता है कि मनुष्य मात्र को जड़ी भूत कर देता है उस समय लोगों की यह दशा होती है कि कोई किसी को पानी तक देने लायक नहीं रहता। इसके रोकने के लिये आयुर्वेद बिद् बिद्वानों ने तथा यूरोपीय चिकित्सकों ने अनेक उपाय और यत्न किया परन्तु कोई अत्यन्त उपयोगी तथा लाभ-दायक यत्न न निकला और न कोई ऐसी औषधी किसी से निकली जो मनुष्य मात्र के ज्वर को एक मात्र दूर कर देय, यही सबब है कि जो प्रत्येक खण्ड के चिकित्सकों ने ज्वर कोही सब से बड़ा और भयानक रोग समझ कर अपने २ ग्रंथ और चिकित्सा कर पुस्तकों में ज्वर का बिस्तार और विशेष वर्णन और प्रतीकार लिखा है, इस लिये अधिकांश ग्राहकों के अनुरोध से आज हम भी भूत पूर्ब्ब आर्य्य चिकित्सकों के मतानुकूल ज्वर रोगकी प्रधानता और पूर्ब्ब रूप, नाम आदि कारण और परीक्षित चिकित्सायें लिखते हैं। आशा है कि देश हितैषी गण अवश्य हमारे इस प्रमाणित वर्णन पर ध्यान देंगे और निम्न लिखित लक्षणों से पूरा २ निदान एवं चिकित्सा करके महा कराल ज्वर रोग ग्रसित रोगियों के दुःख को दूर करेंगे॥

"ज्वरोत्पातिः"

पूर्व्व काल में महर्षियों ने ज्वर को सब रोगों का स्वामी और रुद्र कोप करके माना है और इसी को मृत्यु राज और प्राण नाशक ठहराया है और महादेव जी के उस ऊर्द्ध नयन से इसकी उत्पत्ति लिखी है कि जिसके स्पष्ट खोलने से प्रलय होती है—

ज्वरोरोगपतिःसाक्षान्मृत्युराजोसनोन्तकः ।
क्रोधोदक्षाध्वरध्वंसो रुद्रोर्द्धनयनोद्भवः ॥

जैसा कि सुश्रुत में लिखा है।

दक्षापमानसंक्रुद्ध रुद्रनिःश्वाससंभवः ।
ज्वरोऽष्टधापृथग्द्वंद्व संघातागतुजःस्मृतः ॥

अर्थात् दक्षप्रजापति ने यज्ञ में शिवजी का ऐसा अपमान किया कि उनसे न सहा गया उस अवस्था में जो रुद्र को महा क्रोध हुआ उसी क्रोध की निः श्वास से ज्वर उत्पन्न हुआ जिसकी कथा पुराणों में बिस्तार पूर्व्वक लिखी है–सो ज्वर आठ प्रकार का है। बात ज्वर, पित्तज्वर, श्लेष्म (कफ) ज्वर, द्वंद्वज (दो के मिलने से) अर्थात् बात पित्तज्वर, बात कफज्वर, पित्त कफज्वर, त्रिदोषज जिसको सन्निपातज्वर कहते हैं और आगन्तुक ज्वर, इसी प्रकार सुश्रुतादि सब ऋषियोंने अपनी २ संहिता में ज्वर की उत्पत्ति और भेद लिखे हैं परन्तु बीच के चिकित्सकों ने देश काल के परिवर्तन होने से जब जैसा कुछ ज्वरादि रोगों के लक्षणों में भेद पाया वैसाही ज्वर के नाम और चिकित्सा भी भिन्न २ पूर्वोक्त ऋषियों के ग्रन्थों में लिखते गये जैसे सन्निपात ज्वर मत भेद से १३ प्रकार के हैं॥

१ सन्धिक सन्निपात ज्वर२ अन्तक स० ज्वर ३ रुग्दाहस० ज्वर ४ चित्तभ्रम स० ज्वर ५ शीतांग स० ६ तंद्रिक स० ७ कंठकुब्ज

स० ८ कर्णक स० ९ भुग्ननेत्र स० १० रक्तष्ठीवी ११ प्रलाप स० १२ जिह्वक स० और १३ वां अभिन्यास सन्निपात ज्वर है। इसी प्रकार ५ प्रकार के विषमज्वर उसमें भी कई भेद करके जीर्ण ज्वरादि अनेक हैं जिनके नाम लक्षण और चिकित्सा नीचे लिखेंगे। ज्वर का प्रथम ही ऋषियों ने क्यों वर्णन किया है इस विषय में लोलिम्बराज कहते हैं॥

यतःसर्वेषुरोगेषु प्रायशोबलवान्ज्वरः।
अतस्तस्यप्रतीकारं प्रथमंब्रूमहे वयम्॥

सब रोगों में ज्वर रोग अति बलवान है इस हेतु से हम सब से प्रथम ज्वर ही का उपाय लिखते हैं, ऐसा सुश्रुतादि ने भी कहा है॥

अन्यच्च।

ज्वरमादौ प्रवक्ष्यामि यतो वै रोगराट्स्मृतः।

श्रीमच्चरकः।

रोगराट्सर्वभूतानामंतकृद्दारुणोज्वरः।
तस्मात्तस्यविशेषेण यतेत प्रथमंभिषक्॥

इसी कारण से हमने भी आरोग्य दर्पण में प्रथम ज्वरही का प्रकरण लिखना आरम्भ किया है, आशा है कि सुयोग्य पाठक महाशय ज्वर की उत्पत्ति उसका पूर्व रूप और आदि कारण निदान चिकित्सा आदि शास्त्रानुकूल तथा वर्त्तमान देश कालानुसार प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सिद्ध एवं अनुभूत प्रकरण को हृदयस्थ करके ज्वरातुर प्राणियों के दुःख दूर करेंगे तो हम अपने परिश्रम को सुफल समझेंगे॥

ज्वरोत्पत्ति में (दक्षापमान०) यह श्लोक लिख आये हैं (संक्रुद्ध) इस पर जो ऋषियों ने अपनी सम्मति दी है उसे दिखलाते हैं

क्योंकि ऐसे २ विषय याद न रखने से चिकित्सक शीघ्रही रोगी को मार डालता है, महर्षि चरक की राय है ॥

क्रुद्धरुद्रनिःश्वाससंभूतत्वेनज्वरः स्वभावात् पैत्तिकइतिबोध्यतेयदुक्तंचरकेण । क्रोधात् पित्त-मित्यादि ॥ तेनसर्वज्वरासुपित्तोपशमकारिणा-चिकित्साकर्तव्या ॥

"रुद्रनिः श्वास संभवः" इस बचन का अभिप्राय यह है कि ज्वर की स्वाभाविक प्रकृति पैत्तिक जैसा कि चरक ने लिखा है कि शिवजी के क्रोध करने में श्वास (आह) द्वारा जो ज्वर की उत्पत्ति है इस लिये ज्वर को स्वभावज पैत्तिक जानना (क्रोधात्पित्तं) क्योंकि क्रोध से पित्त होता है, इस लिये सब ज्वरों में पित्तशमनकारक चिकित्सा करनी चाहिये इसमें बाग्भट्टादि सब ऋषियों ने सहानुभूति प्रकाश की है ॥

जैसा—अष्टाङ्गहृदयेचिकित्सास्थानम् प्रथमाध्याये ।

उष्णपित्तादृतेनास्तिज्वरोनास्त्यूष्मणा विना । तस्मात्पित्तविरुद्धानित्यजेत् पित्ताधिकेऽधिकम्॥

उष्ण अर्थात् गरमी पित्त के बिना नहीं होता और ज्वर गरमी के बिना नहीं है इस लिये पित्त बिरोध करने वाली दवा ज्वर रोग में कदापि न देवै और पित्त ज्वर में तो कभी धोखे से भी न देय ॥

इसमें सन्देह नहीं कि ज्वर में पित्त पर ध्यान न देके पित्त के बिरुद्ध दवा देने तथा उपाय करने से शीघ्रही मस्तिष्क में खून जम कर सन्निपात (सरसाम) या एक प्रकार के नवीनलक्षण युक्त जिसे अंगरेजी में (एपोप्लेक्स) कहते हैं, हो जाता है और उस रोग को न थामँने से रोगी जल्द मर जाता है लेकिन वैद्य लोग इस पर बहुत कम ध्यान देते हैं यहां तक कि आम ज्वर पर (कच्चा बुखार)

में भी उष्ण क्वाथ या रस देके पित्त बिगाड़ देते हैं, हां, कुछ २ हकीमों का ध्यान इधर रहता है लेकिन वे भी पित्त में ठन्ढक अधिक पहुंचा देते हैं। जैसेमूढ़ वैद्य लोग शीत से डरा करते हैं कहीं शीत न आ जाय, वैसाही अज्ञान हकीम लोग भी गरम से डरते हैं कि कहीं गरमी शिर पर न चढ़ जाय, इस लिये ज्वरकी चिकित्सा बहुत बिचार के साथ करना चाहिये ॥

ज्वरसंप्राप्ति हेतु (ज्वर होने का सबब)

मिथ्याहारबिहाराभ्यां दोषाह्यामाशयाश्रयाः ।
वहिर्निरस्यकोष्ठाग्निं ज्वरदाःस्यूरसानुगाः ॥

(मिथ्याहार) ऋतु की प्रकृति के विरुद्ध भोजन, जून कजून भोजन, बिना भूख में खाना, भूख लगने पर न खाना, कच्चे फलों को खा कर पानी पीना, बासी भात माठा या तेल का बरा खाना अथवा तेल दूध, दूध या दही मूली एक साथ में खाना इत्यादि (मिथ्या बिहार) बहुत धूप में अथवा अग्नि के सन्मुख रहना बाद अति काल तक पानी में भीजना, बर्षा में बहुत बौछार में रहना, रास्ते से बहुत थके हुये आन कर तत्क्षण जल पी लेना या स्नान कर डालना, कभी छाया कभी ओस में सोना, जुखाम की रक्षा न करना, प्रभात काल में स्त्री प्रसंगादि इन्हीं कारणों से आमाशय में स्थित जो वातादिक दोष बिगड़ कर रस धातु में मिल के जठराग्नि (जिस्से खाना पचता है उस) को बाहर निकाल ज्वर रोग को उत्पन्न करते हैं ॥

"ज्वरपूर्वरूपम्"

श्रमोरतिर्विवर्णत्वंवैरस्यंनयनप्लवः ।
इच्छाद्वेषौमुहुश्चापिशीतबातातपादिषु ।

जृंभांगमर्दोगुरुतारामहर्षारुचिस्तमः।
अप्रहर्षश्चशीतंचभवंत्युत्पत्स्यतिज्वरे ॥
सामान्यतोविशेषात्तु जृंभात्यर्थंसमीरणात्।
पित्तान्नयनयोर्दाहःकफान्नान्नाभिनन्दनम् ॥

निम्नलिखित लक्षण यदि किसी व्यक्ति में पाये जांय तो जानना कि उसे ज्वर आने वाला है। जैसे विना चले फिरे थकाई मालूम होना, किसी बात में मन न लगना (बिवर्णत्व) शरीर का रंग और का तौर होना, अक्सर ज्वर के पहले शरीर का रंग कुछ बदल जाता है। मुख बे स्वाद, नेत्र में आंसू भरि आना (जैसे अभी सो के उठा हो) शीत हवा और घाम कभी अच्छा लगे कभी बुरा मालूम हो, जंभुआई, शरीर में दर्द, देह भारी, रोम खड़े होना या जाड़ा मालूम होना अरुचि आंख में गरमी मन उदास और ठण्ढ का लगना यह सब लक्षण उपस्थित हो या दो चार लक्षण कम भी हो तो निस्सन्देह यह लक्षण ज्वर आने के पहले होता है यह सामान्य लक्षण है॥

अब विशेष लक्षण सुनिये-अत्यन्त जमुहाई और शरीर में दर्द वा ऐंठन हो तो जानना कि इसे वात ज्वर होगा। नेत्र में दाह कुछ शिर दर्द पित्त ज्वर आने वाले के पहिले और अन्न पर अनिच्छा कफ ज्वर आने वाले के पहिले होता है॥

ज्वर का सामान्य रूप केवल इतना ही है कि पसीना का न आना, शरीर बहुत गरम और सम्पूर्ण शरीर जकड़ सी जाय या दर्द करै बस॥

वातज्वर लक्षणम्।

वेपथुर्विषमोवेगःकंठोष्ठमुखशोषणम्।
निद्रानाशःक्षवःस्तंभोगात्राणांरौक्ष्यमेवच॥

शिरोहृद्गात्ररुग्वक्त्रवैरस्यंबद्धविट्कता ।
शूलाध्मानेजंभणंचभवत्यनिलजेज्वरे ॥

बातज्वर में इतने लक्षण रहते हैं । शरीर में कंप, ज्वर कभी बहुत जादा तेज हो जाय कभी कुछ कम हो जाय, गला, ओठ और मुख सूखे, नींद और छींक न आवै शरीर रूखी, शिर छाती और हाथ पैर वगैरह में दर्द या फाटन हो, मुख का जायका खराब, कोष्ठबद्ध (दस्त न हो और हो भी तो सूखा और थोड़ा सा) पेट में कुछ हलकी पीड़ा और पेट फूलासा रहै एवं जमुहाई आना इतना सब लक्षण अथवा कुछ कम होने से बातज्वर जानना ॥

पित्तज्वर लक्षणम् ।

बेगस्तीक्ष्णोऽतिसारश्चनिद्राल्पत्वंतथाबमिः ।
कंठौष्ठमुखनासानांपाकःस्वेदश्चजायते ॥
प्रलापोवक्त्रकटुतामूर्च्छादाहोमदस्तृषा ।
पीतविण्मूत्रनेत्रत्वक्पैत्तिकेभ्रमएवच ॥

बुखार बहुत तेज हो, दस्त पतला, नींद कम, बमन, गला ओठ मुख और नाक इनसे गरम भाफ निकले और वे सुर्ख हो जांय, पसीना बहुत आवै या कम आवे परन्तु कुछ न कुछ आता ही रहै, (प्रलाप) बड़ बड़ाना, आन तान बकना, मुख कटु, बेहोसी पेट में जलन या समस्त शरीर में दाह, नेत्र में जलन या नसा सा मालूम हो, पिपासा बहुत, दिशा, पेशाब, आंख और शरीर कुछ पीली मालूम दे और घुमरी, यह लक्षण पित्तज्वर वाले के होते हैं ॥

श्लेष्म (कफ) ज्वर लक्षणम् ।

स्तैमित्यंस्तिमितोबेगआलस्यंमधुरास्यता ।

शुक्लमूत्रपुरीषत्वकस्तंभस्तृप्तिरथापिच ॥
गौरवंशीतमुत्क्लेदोरोमहर्षोऽतिनिद्रता ।
प्रतिश्यायोऽरुचि:कास:कफजेऽक्ष्णोश्चशुक्लता ॥

अब कफ ज्वर का लक्षण कहते हैं। बहुत मन्द ज्वर रहै, देह चिप चिपाय, आलस्य, मुख मीठा, मल मूत्र का रङ्ग सफेद, शरीर जकड़ी सी रहै, जैसे खूब खाये हुये का पेट भरा रहै, शरीर भारी, जाड़ा मालूम होना, जी मचलाना, रोम खड़ा होना, नींद अधिक आना, नाक बहना, अरुचि, खांसी और आंख सफेद हो तो जानना कि कफज्वर है ॥

द्वंद्वज ज्वर के लक्षण का श्लोक न लिख कर खुलासा रीति पर दिखलाये देते हैं कि जिस ज्वर में कुछ वातज्वर के लक्षण और कुछ पित्त के लक्षण मिले तो वात पित्त ज्वर जानना ॥

वात कफ ज्वर में-वात ज्वर और कफ ज्वर के कुछ २ लक्षण और जोड़ों में दर्द एवं शिरका जकड़ना यह विशेष लक्षण मिलते हैं ॥

पित्त कफ ज्वर-जिस ज्वर में मुख लसलसा और कडुआ, नेत्र में झांपी सी लगी रहै, बेहोसी, खांसी, पियास कभी दाह कभी जाड़ा लगै उसे पित्त कफज्वर जानना, अब उपरोक्त ज्वरों की चिकित्सा लिख करबाद सन्निपातादि के लक्षण लिखेंगे ॥

ज्वर रोग में लंघन विचार ।

ज्वर चिकित्सा का पहिला अङ्ग यही है ।

तिसमें प्रथम लोलिम्बराज का वचन लिखते है ॥

अधुना शृणु तन्वि लंघनं ज्वरितानां प्रथमं प्रशस्यते । हेतन्वंगि अधुना इदानीं त्वंशृणु, ज्वरितानांज्वरयुक्तानां प्रथमंलंघनं (उपवासः) प्रशस्यते, सप्तदशद्वादशदिनानि वातपित्त कफक्रान्तानां, (वातिकःसप्तरात्रेण दशरात्रे-णपैत्तिकः । श्लेष्मिकोद्वादशाहेन ज्वरःपाक मुपैतिह) इति वाक्यात्, आदौज्वरी तु लघनं कुर्यात् ॥

हे सूक्ष्मांगि ! इस समय तुम सुनो ज्वर वाले मनुष्य को प्रथम ही (ज्वरारम्भ) में लंघन (उपवास) कराना उत्तम है क्योंकि वात ज्वर सात दिन में पित्त ज्वर १० दिन और कफ ज्वर १२ दिन में पचता है इस वचन से प्रथम ज्वर वाले को उपवास कराना ही अच्छा है ॥

अन्यच्च ।

ज्वरादौलंघनंकुर्य्याज्ज्वरमध्येतु पाचनं—

हमारे वैद्यों में ज्वर में उपवास कराने की परिपाटी ऐसी बिगड़ी है जिसका कुछ ठिकाना नहीं, बरसों से ज्वर क्यों न आता हो वैद्यराज पहुंचतही डाटैंगे कि खाने को क्यों दिया उपवास

कराओ, रोगी भूख से चिल्ला रहा है कहा खबरदार खाने को न देना यह वायु की भूंख है, बस पाठक गण इतना ही में जान सक्ते हैं वैद्य लोग आयुर्वेदविद् विद्वानों के लेख पर भी ध्यान नहीं देते हैं ॥

लंघन कराने का कारण ।

वाग्भटश्चाह ।

आमाशयस्थोहत्वाग्निं सामोमार्गान् पिधापयेयत् । विदधातिज्वरंदोष स्तस्माल्लंघनमाचेरत् ॥

अस्यान्वयः—आमयुक्तोदोषः आमाशयेस्थित्वामार्गान् आच्छाद्य अग्निंहत्वा ज्वरंविदधाति तस्मात् लंघनं आचरेत् ॥

चक्रदत्ताः ।

तरुणंतु ज्वरंपूर्वं लघनेनक्षयंनयेत् ।

अन्यच्च ।

ज्वरितंषड्हेतोते लघनं प्रति भोजितं ।

लंघनार्थमुक्तं सुश्रुतेन ।

शरीरलाघवकरं यद्द्रव्यंकर्मवा पुनः ।
संलंघनंइतिज्ञेयं (कर्मोपवास लघ्वाहाराद्यैः)

तथाचधन्वन्तरिः ।

ज्वराभिभूतः षड्हेऽव्यतीते विपक्वदोषःकृतलंघनादि ।
योभेषजंखादतिवैद्यवर्यो निःसंशयंहत्याचिरात्सरोगान् ।

आदिशब्दात्परिपाक वारिपान निवातसदन वासादि ॥

भावार्थः—महर्षि वाग्भट्ट कहते हैं कि दोष (वातादि) आम में स्थित हो के उठराग्नि को ढांप और स्रोतों के मार्गों को रोकता हुआ ज्वर को उत्पन्न करता है इस वास्ते लंघन कराना उचित है। चक्रदत्त—कहते हैं कि तरुण ज्वर में प्रथमही उपवास कराने से दोष पच जाते हैं और छ दिन ज्वर गत होने पर लंघन युक्त रोगी को पथ्य देना चाहिये। लंघन के विषय में श्री महर्षि सुश्रुत जी कहते हैं कि जिस औषध से अथवा जिस कर्म से दोष पच कर शरीर हलकी हो उसको भी लंघन जानना, क्योंकि जो फायदा लंघन में है वही हलके भोजन में है—

यथा-येगुणालंघनेप्रोक्तास्तेगुणालघुभोजने।

धन्वन्तरि जी की राय है कि ज्वर आये हुये छ रोज हो जाय और लंघन कराने से दोष पच गये हों उस समय औषध खिलाने से निस्सन्देह शीघ्रही ज्वर दमन होता है।

अन्यच्च।

सर्वज्वरेषुसप्ताहं मात्रावद्भोजनंहितम्।
अन्नकालेह्यभुंजानः क्षीयतेम्रियतेऽथवा ॥

सम्पूर्ण ज्वरों में सात दिन तक बहुत हलका भोजन देना क्योंकि भूख लगने पर भोजन न देने से रोगी कमजोर हो या मर जाय इत्यादि अनेक प्रमाण मिलते हैं ग्रन्थ बढ़ जाने के भय से नहीं लिखा, इन सब बचनोंसे ठीक साबित होता है कि बिना आद्योपांत बिचारे रोगी को अंधाधुन्ध लंघन न करावै, भूख लगने पर हलका भोजन अवश्य देवै।

अस्नेहनीयोऽशोध्यश्च संयोज्योलङ्घनादिना।

जो ज्वर रोगी स्नेह पान और वमन बिरेचन कराने लायक

नहीं है उसको लंघनादि कराना, इस्से पुष्ट होता है कि यदि रोगी बलवान हो तो दोषाधिक्य देखके बमन जुलाब से मल निकाल कर ज्वर आराम करना चाहिये ऐसी अवस्था में उपवास कराना निस्फल है यदि उक्त कर्म लायक न हो तो दो चार दिन उपवास कराके दोष पचाय देना उचित है-

अन्यच्च ।

आनद्धस्तिमितैर्दोषैर्यावंतः कालमातुरः ।
कुर्यादनशनंतावत्ततः संसर्गमाचरेत् ॥

जब तक बात पुरीष (हवा का छूटना दस्त का होना) बन्द रहै और दोष बढ़े हों तब तक उपवास करावे बाद उसके मिश्रित उपाय करना उचित है ।

अन्यच्च ।

ज्वरस्यप्रथमोत्थाने लघनंचदिनत्रयं ।
नदेयंक्वथितंवारि नभैषज्यंचदापयेत् ॥

ज्वर के आरम्भ में पहले तीन दिन लंघन करावै, न क्वाथ का जल पीने को दे और न किसी किस्म की औषध खिलावै जैसे जलके अधिक उद्वेग में मेंड़ बांधना उसकी शक्ति को नहीं रोक सक्ता और क्रोध की तरुणावस्था में उपदेश और शान्ति कारक बचन क्रोध को अधिक भड़काता है ऐसेही ज्वर की अति तरुणावस्था में औषध क्रिया उसके बेग को कई गुना बढ़ाती है ।

ज्वर रोग में उपवास कराने का नियम सिर्फ बैद्यक शास्त्र में है यूनानी और डाक्टरी में इसका कुछ नियम नहीं है और वे लोग इस पर कुछ ध्यान भी नही देते हैं कैसाहू ज्वर तेज हो रोगी के मांगने से पथ्य दे देते हैं इसी से वे लोग ज्वर रोग बहुत कम आराम कर सक्ते हैं ज्वर के आरम्भ में यदि ज्वर तेज बना हो तो दो तीन दिन तक रोगी के मांगने से भी खाना न देना चाहिये

लेकिन उसके बल को देख के जब देखे कि ज्वर धीमा हो गया और दोष भी पच गये हैं एवंरोगी भी खाने को जिद्द कर रहा है तो शाम को साबूदाना या मूंग का जूस देवै । यह नियम सबसे उत्तम है कि जब तक रोगी को खूब तेज भूख न लगै खाने को न देय। क्योंकि "नहि दोषक्षये कश्चित् सहेत लंघनादिकम् ।" दोष के पच जाने पर उपवास आदि रोगी से नहीं सहा जाता शाम को जूस क्यों देय इसका कारण आगे दिखलावेगे ।

सन्निपात में लङ्घन विचार ।

त्रिरात्रंपञ्चरात्रं वा दशरात्रमथापिवा ।
लंघनंसन्निपातेषु कुर्य्यादारोग्यदर्शनात् ।

तीन दिन, पांचदिन अथवा दश दिन सन्निपात में उपवास करावै जब तक आरोग्यता न दीख पड़े । कोई २ आरोग्य दर्शनात् का यह अर्थ कहते हैं कि जब तक रोगी आराम न हो उपवास कराता जावै, यद्यपि पचम्यंत शब्द से ऐसा अर्थ हो सक्ता है परन्तु ग्रन्थ कर्ता का यह अभिप्राय नही है यह अभिप्राय होता तो "त्रिरात्रंपंचरात्रंवा" ऐसा न लिखते इसका अभिप्राय यह है कि यदि दश दिन के भीतरही कुछ फुरसत देख पड़े तो पथ्य दे देय क्योंकि उपवास कराने से रोगी कमजोर हो जाता है एवं मोह (बिहोसी) होने लगती है और (मोहात्) प्राणं विमुञ्चति मोह से प्राण छूटने का भय है इसलिये लंघन बहुत विचार के साथ कराना चाहिये । वाग्भट्ट की राय है ।

प्राग्रूपेषुज्वरादौवा बलंयत्नेनपालयन् ।
बलाधिष्ठानमारोग्यमारोग्यार्थःक्रियाक्रमः ॥

"भावप्रकाश"

बलाविरोधिनाचैनं लङ्घनेनोपपादयेत् ॥

ज्वर के प्राक् रूपों में और ज्वर की आदि में बलकी पालना करै क्योंकि आरोग्य के वास्ते क्रिया क्रम अर्थात् स्वास्थ्य का प्रयोजन है, भाव प्रकाश में लिखा है बल के बिरोधी लंघन कभी न कराना॥

"लंघन निषेधः"

"भावप्रकाश"

नकार्य्यंगुर्व्विणीबालवृद्धदुर्बलभीरुभिः।
नक्षयाध्वश्रमक्रोध कामशोकचिरज्वरे॥

सुश्रुतः—नलंघयेन्मारुतजे क्षयजे मानसे तथा। ऊर्ध्वमारुत तृष्णाक्षुत्मुखशोष श्रमान्वितैः॥

गर्भिणी स्त्री, बालक, वृद्ध, बहुत कमजोर, भय युक्त पुरुष को और जिसे प्रमेह आदि से क्षय या कफक्षय हो और जिसे रास्ते की थकाई से ज्वर आया हो, उसमें और जो बहुत मेहनत से हो उसमें, क्रोध ज्वर में काम ज्वर में शोक ज्वर और पुराने बुखार में उपवास न कराना। सु० बात ज्वर, क्षयजन्य ज्वर, मानस ज्वर, ऊर्द्ध बात रोगी तथा तृषा क्षुधा मुख शोष और श्रम युक्त वाले को उपवास न कराना चाहिये।

अति लंघन से उपद्रव।

सुश्रुतः उत्तर तन्त्रम् अध्याय ३९।

बलक्षयस्तृषाशोष स्तन्द्रानिद्रा भ्रमक्लमाः।
उपद्रवाश्चश्वासाद्याः सम्भवन्त्यति लङ्घनात्॥

बहुत उपवास कराने से बल का नाश (कमजोरी) पिपासा दिल दिमाग की कमजोरी, ठकटका, अधिक निद्रा (गसी) घुमरी, ओकाई और दमा आदि उपद्रव अति लंघन कराने से होते हैं इस लिये बिना बिचारे अधाधुन्ध लंघन न कराना चाहिये।

सम्यक् लंघन का फल।

ज्वरघ्नंदीपनंकांक्षा रुचिलाघवकारकं। सृष्टमारुतविण्मूत्रं क्षुत्पिपासाऽसहं लघुम्॥ प्रसन्नात्मेन्द्रियंक्षामं नरंविद्यात्सुलंघितम्॥

लंघन कराने से दोष पचता है और पचने से जब यह सब लाभ देख पड़ें तब जानना कि लंघन इस रोगी का अच्छा बन पड़ा है-जैसे अधोवायु खुले, डकार साफ आवे तथा दिशा और पेशाब खुलासा हो क्षुधा लगने पर बिना खाये और पियास लगने पर बिना पानी पिये रहा न जाय और शरीर हलकी मालूम हो, मन एवं इन्द्रियां सब प्रसन्न हों और शरीर ढीली आसक्त हो जाय तो जानना कि लंघन ठीक हो चुका है।

ज्वर में जल पान विचार।

चाहे कोई बीमारी हो खास कर ज्वर हैजा आदि बीमारियों में बहुत जरूरी है कि रोगी को साफ पानी (परिष्कृत जल) पीने को देय, क्योंकि अधिकतर यह रोग जल विकार से होता है, और यही सबब है जो बैद्यक शास्त्र में गरम पानी पिलाने का अधिक अनुरोध किया है, पानी गरम करने का कोई विशेष सबब नहीं है, पानी गरम करने से पानी के कीड़े मर कर पानी से अलग हो जाते हैं, और छान लेने से वह पानी कृमि रहित साफ और अग्नि बर्द्धक

होता है । वैद्यक शास्त्र में जहां तक हमने देखा है नवज्वर में शीतल जल का पान निषेध ही पाया है । यथा ॥

दिवास्वप्नंव्यवायञ्च व्यायामंशिशिरंजलम् ।
क्रोधप्रवातभोज्यानि वर्जयेत्तरुणज्वरी ॥

दिन में सोना, स्त्री प्रसंग, मेहनत, शीतल जल पान, क्रोध, अधिक हवा का सेवन और भोजन नया ज्वरवाला रोगी त्याग करै ॥

अन्यच्च ।

पार्श्वशूलेप्रतिश्याये वातरोगेगलग्रहे ।
आध्मानेस्तिमितेकोष्ठे सद्यशुद्धेनवज्वरे ॥
अरुचिग्रहणीगुल्मे श्वासकासेषुविद्रधौ ।
हिक्कायांस्नेहपानेच शीताम्बुपरिवर्जयेत् ॥

पसुरी की दर्द, जुखाम, बात रोग (सर्वाङ्ग दर्द आदि) गलग्रह, पेट फूला हो, अग्निमन्द हो, शीघ्र ही जुलाब लिया हो, नये बुखार में, अरुचि, (भोजन पर अरुचि) ग्रहणी (दस्त से कच्चा अन्न गिरता हो) वायगोला आदि दमा, खांसी, विद्रधि (गोल या लम्बी एक तरह के सूजन शरीर में पड़ जाते हैं और वही सूजन पक भी जाता है उसे विद्रधि कहते हैं) हुचकी रोग और स्नेह पान में शीतल जल पीने को न देना चाहिये ।

जल गरम करने की विधि ।

दिन में पीने के लिये सूर्योदय में पानी गरम करै और रात में पीने के लिये सूर्य्यास्त में पानी गरम करै । वर्षा और बसन्त में कूप (कुआं) जल, हेमन्त, और शिशिर ऋतु में कुआं अथवा साफ तालाब का पानी ॥

अभाव में सब ऋतुवों में कूप का जल लेवे क्योंकि कुये का जलपान किसी ऋतु में निषेध नहीं है इस लिये न मिलने पर कूपही का जल लेना। रोगी के पीने माफिक जल लेकर चांदी अथवा मृत्तिका पात्र में गरम करै एक दो उफान आ जाय अथवा जितना गरम करना है गरम होजाय तो पात्र को अग्नि पर से उतार ले और कुछ देर तक उसी पात्र में जल रहने देय जब जल स्थिर हो जाय और देखे कि मल नीचे जम गया होगा आहस्ते से दूसरे मिट्टी के बर्तन में चौपरता खूब गफ कपड़ा पात्र के मुख परदे के तीन हिस्सा पानी छान ले और एक हिस्सा जो नीचे का मैला पानी है फेक दे, इसी प्रकार शामको भी पानी तैय्यार कर लेय दिन का पकाया पानी रात को न पिलावै और न रात का पकाया हुआ जल दिन में दे क्योंकि॥

दिवाश्रिततुयत्तोयं रात्रौतद्गुरुतांव्रजेत्।
रात्रौश्रितंतुयत्तोयं गुरुत्वमधिगच्छति॥

दिन का पकाया पानी रात को भारी हो जाता है और रात का पकाया पानी दिन में भारी हो जाता है॥

दोष बिशेष में उष्ण जल करन बिधि।

तत्पादहीनंबातघ्नमर्द्धहीनंतुपित्तनुत्।
कफघ्नंपादशेषस्थं पानियंलघुदीपनं॥

सेर भर में एक पाव पानी जल जाय, वह पानी बायु को नाश करता है, अर्द्धाव शेष जल से पित्त और चौथाई जल रहजाने से वह जल कफ को नाश करता है॥

ऋतु बिशेष जल उष्ण करने की बिधि।

वर्षासूदकमादाय पाचयेत्सप्तभागकं।
अष्टभागावशेषस्थं निर्दोषमुदकंपिवेत्॥
पञ्चभागावशेषस्थं हेमन्तेसलिलंपिवेत्।
शिशिरेचवसंतेचग्रीष्मेचार्धावशेषितम्॥

बर्षा ऋतु में पन्द्रह हिस्सा जल में जब सात हिस्सा पानी जल जाय आठ भाग बाकी रहै वह निर्दोष जल पिये, हेमन्त में पांच भाग जल बाकी रहै ऐसा जल पिये, शिशिर बसन्त और ग्रीष्म ऋतवों में अधावट जल पीना लाभ दायक लिखा है॥

गरम पानी के गुण।

दीपनंकफविच्छेदि पित्तबातानुलोमनम्।
कफबातज्वरार्तेभ्यो हितमुष्णाम्बुतृट्छिदम्॥
तद्धिमार्दवकृद्दोषस्रोतसां शीतमन्यथा।
सेव्यमानेनतोयेनज्वरः शीतेनबर्द्धते।
पित्तमद्य बिषोत्थेषुशीतलंतिक्तकैःशृतम्॥

गरम जल जठराग्नि दीपन, कफ नाशक, पित्त और वायु को शमन करने वाला, कफ और बात ज्वर वाले को हित है और पिपासा को शांत करता है। दोष और सम्पूर्ण स्रोतों को कोमल करता है एवं शीतल जल में इससे उलटा गुण जानना अर्थात जिस रोग में गरम जल फायदा करता है उसी रोग में शीतल जल नुकसान करता है। शीतल जल पीने से बुखार और शीत बढ़ता

है परन्तु पित्त ज्वर और मद्य तथा विष विकार से ज्वर हुआ हो तो गरम जल न देना किन्तु पानी गरम कर बाद ठण्ढा करके पीने को देना ॥

उक्त वाक्य इत्यादि अनेक प्रमाण मिलते हैं परन्तु हमारी सम्मति इसमें सिर्फ इतनही है कि अति गरम देश और गरम ऋतुओं में केवल जल को खूब गरम कर लेना चाहिये, जाड़े के दिनों में एवं वर्षा में चौथाई पानी जला लेना उत्तम होगा। क्योंकि जितनाही पानी जलैगा उतनाही वह मूत्र की थैली और दिल दिमाग पर गरमी पहुंचाता है। जब रोगी कमजोर हो जाता है बारम्बार उठने में उसे क्लेश होता है तो पियास की अधिकता में लोग उसे उसी दशा में पानी पिलाये जाते हैं चाहै वह चित्तही क्यों न लेटा हो हानि लाभ कुछ नहीं बिचारते पानी पिलाते जाते हैं ऐसा न चाहिये क्योंकि

उत्तानशयनेपेयं कार्श्यमंदाग्निदोषकृत्।
वामदक्षिणपार्श्वेन पिबेत्तोयंसुखावहम् ॥

चित्त लेटे हुये रोगी को जल पिला देने से खांसी और मन्दाग्नि रोग होता है, करवट लेटे हुये रोगी को पानी पिलाना सुखकर है। इस्से सिद्ध हुआ कि जहां तक हो सके रोगी को उठाय के जल पिलावै यदि रोगी ऐसाही कमजोर हो तो करवट करा के जल पिलावै चित्त लेटे में कभी जलादि न पिलाना चाहिये ॥

प्रायः लोग ज्वर रोग में अति पियास लगने पर भी जल पीने को नहीं देते हैं, डरते हैं कि शीत करैगा यह उनकी महा मूर्खता है क्योंकि "तृषितोमोहमायाति मोहात्प्राणांविमुञ्चति" पियासे को पानी न मिलने से बिहोसी आती है और मोह से प्राण छूटने का भय है इस लिये पियास लगने पर पानी अवश्य पीने को देय परन्तु थोड़ा थोड़ा जल पिलाना शास्त्रोक्त विधि है ॥

ज्वर में गृहादि विचार।

नवज्वरीभवेद्यत्नाद् गुरूष्णावसनावृतः।
सामान्यतोऽज्वरीपूर्वं निर्वातेनिलयेवसेत्॥

नये ज्वरवाले को याद करके कोई भारी बस्त्र ओढ़ा देना। यद्यपि ज्वरवाला भारी बस्त्र के ओढ़ने से घबड़ावैगा लेकिन बस्त्र के ओढ़ने से कुछ भी पसीना निकल आने से ज्वर बढ़ने का भय जाता रहता है, अगर देखे कि भारी बस्त्र के उढ़ाने से रोगी बहुत घबड़ाता है और स्वेद बिलकुल नहीं निकलता तो भारी बस्त्र न उढ़ा के सिर्फ एक दोहर उढ़ाय दे और पित्त ज्वर वाले को और जिसके सिर में अधिक दर्द हो बहुत गरम और भारी कपड़ा न उढ़ावै। नव ज्वरी कहने से यह मतलब है कि पुराने ज्वर में रोगी को कभी कपड़े में ढांक न रखना चाहिये॥

यह सामान्य बात है कि बुखार वाले को हवादार मकान में न रखना, इस्से यह मत समझना कि रोगी को एक अन्ध कोठरी में बन्द कर देओ कि अच्छा भी आदमी घबड़ाकर मर जावै। रोगी को एक साफ मकान में जिसमें बड़ा केवाड़ और शुद्ध बायु आने जाने के लिये खिड़कियां लगी हों, रक्खै यदि उन खिड़कियों से बाहरी अधिक हवा आती हो तो परदा डाल देवे (प्रबात सेवा) प्रथमही कह दिया गया है कि रोगी को तेज हवा से बचाना चाहिये।

इस बात को खूब याद रखना चाहिये, अगर रोगी को बहुत गर्मी लगै और वह पंखा हांकने को कहै और जिसके बारम्बार पसीना आता हो और उस पसीना के आने से ज्वर को कुछ भी फायदा न पहुंच कर उलटा रोगी सुस्त और कमजोर होता जावे तो उसके गरमी, पसीना, बिहोसी शांति के लिये रोगी के मुख पर बराबर पंखा हांकता रहै कभी बन्द न करै। किस पंखेकी हवा देवे प्रमाण के लिये सद् ग्रन्थों का श्लोक लिखते हैं॥

व्यजनस्यानिलस्तृष्णा स्वेदमूर्छाश्रमापहः ।
तालवृंतभवोवात स्त्रिदोषशमनोमतः ॥
वंशव्यजनजः सोष्णो रक्तपित्तप्रकोपनः ।
चामरोवस्त्रसंभूतो मायूरो वेत्रजस्तथा ॥
एतेदोषहरावाताः स्निग्धाहृद्याः सुपूजिताः ॥

पंखे की हवा पियास, पसीना, बिहोसी और थकाई को दूर करती है । पंखा खजूर पत्र का अच्छा होता है ताड़ के पंखे की हवा तीनों दोष को नाश करती है, बांस के पंखे की हवा गरम, रक्त पित्त को बिगाड़ने वाली है, चामर, कपड़े के पंखे, मयूरपंख और बेंतके पंखे की हवा, दोषों को हरने वाली, चिकनी, दिलको ताकत देने वाली और ऋषियों करके प्रशंसनीय है ॥

ज्वर रोग में दूध खाने की बिधि ।

बैद्यक में तीन अंग है निदान, निघंट, चिकित्सा । निदान पूर्व्व कारण को कहते हैं कि रोग किस सबब से होता है और उसका पूर्व्व रूप और साध्यासाध्य का बिचार निदान से जाना जाता है और निघण्ट में औषधियों की उत्पत्ति लक्षण गुण बिकार आदि का बर्णन रहता है, निदान और निघंट यह दोनों प्रकरण चिकित्सा के सहायक हैं "चिकित्सा" यह शब्द "कित" धातु से बना है जिसका अर्थ रोगों का दूर करना हटाना भगाना है । चिकित्सा यह बड़ा कठिन काम है क्योंकि जैसे किलेमें अथवा राज्य में दुश्मन दखल कर लेता है तो उसका निकालना बहुत कठिन हो जाता है उस अवस्था में राज नीति बिशारद पुरुष साम दान दण्ड भेद चार उपाय से शत्रु को निकालते हैं यह चारों उपाय उस राजा के पास होते हैं कि जिसका राज्य ससांग से पूर्ण रहता है कि जिसका बिस्तार नीति शास्त्र में लिखा है ऐसाही पूरी चिकित्सा

वह वैद्य कर सकता है जो आयुर्वेद के समस्त अङ्ग और शाखा प्रशाखा के विज्ञान में दक्ष होता है और न केवल दक्षताही काम देती है किन्तु सब प्रकार की सामग्री और सामान भी होना चाहिये जैसे नीति बिशारद पुरुष किले से दुशमन को निकालना चाहता है और निकालने की सब विधि भी जानता है और उसके पास—साम-दान-भेद दण्ड चारो सामान नहीं तो कहिये किस तरह निकाल सकेगा अथवा सब सामान है पर उसको काम में लानेकी क्रिया नहीं जानता तो भी वह शत्रु के हटाने में असमर्थ रहता है बस इसी दृष्टान्त के मूल पर पर सज्जनों को सोचना चाहिये कि चिकित्सा कर्म बड़ा सूक्ष्म और पूर्ण विद्या और शुद्ध बुद्धि के द्वारा ठीक ठीक किया जासकता है जैसे शत्रु संकट में नीति बिशारद लोग शान्ति के द्वारा अथवा कुछ दे लेकर अथवा शत्रुओं के आपस में भेद उपजा के शत्रु पक्ष को निर्बल करते हैं पर जब यह तीनों यत्न नहीं चलते तो अस्त्र शस्त्र के द्वारा लड़ते हैं कि जिसके लिये बहुत सामर्थ्य और साहस चाहिये यदि राजकीय युद्ध से रोग और चिकित्सा की लड़ाई का मिलान किया जाय तो प्रत्येक बात मिल सकती है परन्तु लेख बढ़ने के कारण वह नही लिखा जासकता है पर बुद्धिमानों के निकट इतन ही उपदेश बहुत है कि चिकित्सा कर्म बहुत गंभीर और बुद्धि विद्या साध्य है।

इसमें कुछ संदेह नहीं है कि चिकित्सा शास्त्र के न जानने ही से भारत की बड़ी हानि है क्योंकि आरोग्यता ही जीवन का एक मात्र फल है और विधिवत आयुर्वेद के जाने बिना आरोग्यता की रक्षा नहीं हो सकती। हमारे इस देश में वैद्य लोग बुखार में दूध खाने को नहीं देते चाहै ज्वर नया हो या पुराना और डाक्टर लोग नये ज्वर में दूध खाने को बता देते हैं अब हम किनकी बातों पर ध्यान दें किसकी सम्मति से ज्वर में दूध खिलावें अब हम को वास्तविक धर्म है कि कुछ न कुछ वैद्यक शास्त्र देखें सुनें और अपनी स्वास्थ्य रक्षा खुद करें॥

दूध देने का प्रमाण।

कृशोऽल्पदोषोदीनश्च नरोजोर्णज्वरार्दितः।
विबंधासृष्टदोषश्चरुक्षःपित्तानिलज्वरी॥
पिपासार्तःसदाहीवा पयसासमुखोभवेत्।
तदेवतुपयःपीतं तरुणोहन्तिमानवम्।

इतने लोगों को दूध अमृत के समान गुण करता है। अति दुर्बल, अल्पदोष युक्त, दीन अर्थात् घबड़ाया हुआ या डरा हुआ, और जीर्ण ज्वर से दुखित (पुराना ज्वर) जिस रोगी को दस्त न होता हो। रूखा और पित्त बात ज्वर वाला, तृषा एवं दाह रोगवाले को दूध आरोग्य करता है और वही दूध नये ज्वर में पिया भया रोगी को मार डालता है॥

अन्यच्च।

जोर्णज्वरेकफेक्षीणे क्षीरंस्यादमृतोपमम्।
तदेवतरुणेपीतं विषवद्धन्तिमानवम्॥
धारोष्णंवापयःशीतं पीतंसद्यज्वरंजयेत्।

पुराने बुखार वाले को और जिसका कफ सूख गया हो उसे दूध अमृत के समान गुण करता है और नये बुखार में पिया भया दूध बिष के समान रोगी को मार डालता है। धारोष्ण अर्थात् सद्य हो का दुहा हुआ गरम दूध जो पृथ्वी पर न रक्खा गया हो, अथवा शीतल दूध पीने से शीघ्र ही वह दूध ज्वर को नाश करता है। इस से स्पष्ट हुआ कि नवीन ज्वर में पांच सात दिन दूध न देना चाहिये बाद दूध पिलाना गुणदायक है इसमें महर्षि सुश्रुत का भी बचन प्रमाण है।

सूत्र स्थान अध्याय ४५

वातपित्तशोणितमानसविकारेष्वविरुद्धम् जीर्ण ज्वरकासस्वासशोषक्षयगुल्मोन्मादोदर मूर्छाभ्रम-मददाहपिपासाहृद्वस्तिपाण्डुरोगग्रहणीदापार्शः शूलोदावर्तातिसारप्रवाहिकायोनिरोगगर्भास्राव-रक्तपित्तश्रमक्लमहरं—

वात पित्त रक्त और मन के बिकार में दूध पिलाना मना नही है, तथा जीर्ण ज्वर जो चिरकाल से न छुटा हो दमा खांसी (शोष) शरीरका प्रतिदिन सूखना (क्षय) तपेदिक गोला, उन्माद, उदररोग बिहोसी, घुमरी नेत्र में नसासा बना रहै, शरीर में जलन होना पियास हृदय का दर्द नाभिके नीचे दर्द, पांडु ग्रहणी, बबाशीर, पेट का दर्द, उदावर्त्त, अतीसार, प्रवाहिका: योनिरोग, गर्भ का न ठहरना रक्त पित्त, थकाई (क्लम) विना परिश्रम किये शरीर का थकित होजाना इत्यादि रोगों को दूध नाश करता है ॥

ज्वर में औषध खिलाने का नियम ।

ज्वर में औषध देने का नियम लोग किलकुल नहीं जानते ज्वर पका हो या न पका हो शीघ्र ही दवा खिला देते हैं इसी से ज्वर न छुटके दूना हो जाता है क्योंकि ॥

आमज्वरस्यलिङ्गानि नदद्यात्तत्रभेषजम् ।
भेषजह्यामदोषस्य भूयोबर्द्धयतिज्वरं ॥
शोधनं शमनीयंतु करोतिविषमज्वरम् ॥

कच्चे ज्वर में औषध न देय क्योंकि आम कच्चा ज्वर में औषध देने से और भी ज्वर बढ़ता है और कच्चे ज्वर में शोधन

अथवा शमनीय औषधें दे तो मानों ज्वर को विषम करना है इसलिये कच्चे बुखार में कभी धोखे से भी औषध न देय ॥

मृदौज्वरेलघौदेहे प्रचलेषुमलेषुच ।
पक्कंदोषंविजानीयाज्ज्वरेदेयं तदौषधम् ॥

जब देखे कि ज्वर कुछ धीमा हुआ है और शरीर हलकी हुई है तथा वातादिक दोष यथा स्थित हुए हैं तब जानना की अब दोष पचा है उस अवस्था में दवा देने से ज्वर का नाश होता है। लेकिन इस विषय को हकीम साहब और डाक्तर बाबू बिलकुल नहीं जानते हैं जानें कहां से, इस बात को तो हम कई स्थलों में दिखला चुके हैं कि वैद्यक विद्या के बल से इस देश वाले की चिकित्सा करना बिना इस देश की परीक्षा किये लाभदायक हो सक्ता है ? कदापि नहीं, इसलिये डाक्तर हकीमों को भी वैद्यकशास्त्र पढ़ाना चाहिये ॥

अपक्व ज्वर लक्षण ।

सुश्रुत उत्तर तन्त्रम् अध्याय ॥ ३६ ॥

हृदयोद्वेष्ठनंतंद्रा लालास्रुतिररोचकः ।
दोषाप्रवृत्तिरालस्यंविबंधोबहुमूत्रता ॥
गुरूदरत्वमस्वेदो नपक्तिःशकृतोऽरतिः ।
स्वापःस्तंभोगुरुत्वंच गात्राणांवन्हिमार्द्दवम्
मुखस्याशुद्धिरग्लानिः प्रसंगीबलवान्ज्वरः ।
लिंगैरेभिर्विजानीयाज्ज्वरमामंविचक्षणः ॥

यद्यपि दोष पचने का यह पूरा सबूत है कि बात ज्वरादि में बातज्वरादि के लक्षण कम न हुए हों तथापि अधिक चेत कराने

के लिये फिर दिखलाया जाता है कि जब तक निम्नलिखित लक्षण ज्वर रोगी में पाया जावे तो जानना कि दोष अभी नहीं पचा उस अवस्था में औषध कदापि न देवे । जैसे ज्वर में छाती जकड़ी सी मालूम हो, नेत्रों पर झपकी, मुख से लार गिरना या पंछा छूटना, अन्न पर अरुचि, वातादि दोषों का स्वाभाविक काम में अप्रवृत्त होना, सुस्ती, दस्त का न होना और मूत्र ज्यादा होना, पेट भरासा मालूम हो तथा पसीना न आवै, कल न पड़े, नींद न लगै, शरीर जकड़ी हो या दर्द हो, अग्नि मन्द, मुख का स्वाद खराब और बुखार खूब तेज हो तो जानना कि दोष अभी नहीं पचा अगर कोई यह कहै कि बहुत लोग ऐसे कोमल मिजाज के होते हैं कि अंग मर्दादि ज्वर के लक्षण से घबड़ाय जाते हैं हाय २ मचाने लगते हैं बस उसी अवस्था में वैद्य लोग घबड़ायके दवा दे देते हैं तो उस समय उपद्रव शांत्यर्थ कोई औषध देय या नहीं ? (उ०) रोगी को अचैतन्य देख वैद्य का घबड़ाना शास्त्र सम्मत नहीं है अन्ततोगत्वा जब किसी प्रबल उपद्रव से रोगी को अत्यन्त ही क्लेशित देखें तो ऊपरी प्रयोग से सिर्फ उस उपद्रव को शांत करे, दोष पचने की औषध न दे, यदि कहो कि बिना दोष पचाये उपद्रव कैसे शांत होंगे क्योंकि उपद्रव दोष के अंग हैं (उ०) ठीक है बिलकुल शांत नहीं हो सके हैं कुछ बेग कम हो जायगा और ज्वर में विघ्न भी न होगा जैसे अंग दर्द में अंग मर्दन कराना (वात नाशाय मर्दनं) उससे दर्द निःशेष न होके क्लेश कम हो जायगा और इससे ज्वर में कुछ बाधा नहीं हो सक्ती जैसे शिर के दर्द में दर्द नाशक लेप माथे में लगाना यद्यपि वह लेप बिना दोष पचे शिर दर्द समूल नष्ट नहीं कर सकता है तथापि हानि भी नहीं पहुंचाता इसलिये ऊपरी प्रयोग करना कोई हर्ज नहीं है परन्तु बिना दोष पचे दोष पचनार्थ औषध कभी धोखे से भी न देवे । ज्वर रोग विशूचिका आदि रोग के समान भयङ्कर नहीं है यदि विचार सहित चिकित्सा की जावै तो ज्वर रोग से एक भी रोगी न मरे केवल भूल होने से ज्वर रोग में रोगी मर जाते हैं ।

औषध दान कालः।

मृदौज्वरेलघौदेहे प्रचलेषुमलेषु च।
पक्वं दोषंविजानियाज्ज्वरेदेयतदौषधम्॥
दोषप्रकृतिवैकृत्यादेकेषांपक्वलक्षणम्।
सप्तरात्रात्परंकेचिन्मन्यन्तेदेयमौषधम्॥
दशरात्रात्परंकेचिद्दातव्यमितिनिश्चितम्॥

ज्वर रोग में जो औषध देने का नियम ऋषियों ने कहा है उसे दिखलाते हैं। जब बुखार धीमा हो और शरीर हलकी हो और देखे कि वातादिक दोष यथा स्थित हो गये हैं उस अवस्था में दोष पचा जान कर औषध देवै। किसी किसी विद्वान् की राय है कि वातादि दोष जैसे ज्वर में वेगमान रहते हैं यदि उसमें फर्क पड़ जाय या उलटे हो जांय तब भी जानना कि दोष पच गये हैं औषध देना उचित है और भी किसी आचार्य का मत है कि सात दिन पीछे और किसी के मत से दश दिन पीछे ज्वर रोग में औषध देने का काल है। परन्तु सिद्धांत मत यही है कि ज्वर के आदि में लंघन कराना, लंघन से दोष अवश्य ही पचैगा बस कुछ भी दोष पचा देखै क्वाथादि औषध देवे इसमें हमारी पूरी सम्मति है कि ज्वर रोग में बटी चूर्णादि न दे के केवल क्वाथ पिलाना अत्यन्त लाभदायक होता है। परीक्षा द्वारा यहां तक देखा गया है कि यदि ज्वर रोग वाले को क्वाथादि कोई औषध न देके लंघनादि ठीक उपचार सहित रखनेहीसे ज्वर रोग छुट जाता है, उपचार बिगड़ जाने से अमृत समान भी औषध पिलानेसे ज्वर नहीं छुटता वल्कि बढ़ जाता है॥

अथ वातज्वरेक्वाथः लोलिम्बराजात्।

उशीरकलशीमहौषध किरातकांभोधरारिधरा

बृहतिकाद्वयामृतलतात्रिकंटैःकृतंकषायकममुंपिबेत्पवनजज्वर व्याकुलःपुमान् दशशतच्छद छदमदग्रसल्लोचने ॥

यह श्लोक पृथ्वी छन्द में है–(उशीर) खस (कलशी) पृष्टिपर्णी और इसी को पिठबन भी कहते हैं (महौषध) शोंठ (किरात) चिरायता (अंभोधर) मोथा (स्थिरा) जवासा (यह प्रायः यमुना नदी के किनारे पर कंटकयुत छोटा वृक्ष होता है) (बृहतिकाद्वय) दोनों कटाई अर्थात् छोटी कटाई इसी को कहीं २ भटकटेरि भटकटैया भी कहते हैं और बड़ी कटाई को बन भांटा कहते है (अमृतलता) गुडूची या गिलोय (त्रिकंट) बड़ा गुखरू उक्त सब औषधों को समान भाग २॥ तोला ले अधकचरा कर पाव भर जल में एक मृत्तिका पात्र में धीमी आँच पर चुरवै जब डेढ़ छटाँक जल रह जाय मल कर छान लेय और तीन माशा शहद उसी क्वाथ जल में डाल के पिला देवे, ज्वर पाक होने पर यह क्वाथ को दोनों समय पिलाने से तीन ही दिन में वातज्वर समूल नष्ट होता है, यदि रोगी के उदर में दाह होतो कटाई का मात्रा आधा कर देय । धान्यपंचक क्वाथ भी वातज्वर को नाश करता है धनिया लाल चन्दन पदमाष गुर्च और नीम का छाल पूर्वोक्त प्रकार दोनों समय क्वाथ पिलाने से वातज्वर तथा पित्तज्वर भी नाश होता है ॥

पित्तज्वरे क्वाथः ।

द्राक्षापर्पटराजवृक्षकटुका मुस्ताभयानांजलं मूर्छाशोषनिदाघतट् प्रलपनं भ्रांत्याढ्य पित्तज्वरे। दुस्पर्शापूमदाकिरातकटुका सिंहास्यरेणुद्भवः क्वाथःशर्करयान्विता हरतितद्दाहास्रपित्तज्वरान् ॥

(द्राक्षा) मुनक्का १ भाग (पर्पट) पितपापड़ा १ भाग (राजवृक्ष) अमिलतास का गूदा आधा भाग, (कटुका) कुटकी आधा भाग, मोथा १ भाग (अभया) बड़ा हड़ आधा भाग (जल) सुगन्धवाला १ भाग सब दवाइयों को ढाई तोला ले पूर्वोक्त प्रकार दोनों समय क्याथ पिलाने से बिहोशी (शोष) गल तालु जीभ का सूखना (निदाघ) "ग्रीष्मकालोष्मणाजनितो ज्वरोनिदाघः" (तृट्) बारम्बार पियास का लगना (प्रलपन) अनर्थक बात बकना और बुद्धि भ्रांति इत्यादि उपद्रव युक्त पित्तज्वर शांति होता है उसी तरह (दुरूपर्शा) यवासा (प्रमदा) प्रियगु-प्रियंगु मालकगुनी को भी कहते हैं यहाँ पर प्रियंगु नामक फूल लेना (किरात) चिरायता कुटकी (सिंहास्य) अरूसा (रेणुः) पित्तपापड़ा इन सब औषधों के काढ़े में (शर्करया-न्वितः सितायुक्तः) एक तोला मिश्री या चीनी डाल के दोनो समय पिलाने से पियास (दाहः) बन्हिस्पर्शवद्‌ दुःख जैसा अग्नि से जलने से दुख होतः है वैसा ही जलन शरीर में होने को दाह कहते हैं इत्यादि उपद्रव सहित रक्त पित्तज्वर आराम होता है, यह हम प्रथम ही कह चुके हैं कि पित्तज्वर में दाह अधिक होता है पित्तज्वर अथवा कोई ज्वर दाह युक्त हो तो निम्नलिखित क्वाथ को पिलावै ॥

जलजलजलवाहरेणु विश्वौषध शिशिरैःशि-
शिरंजलंशृतंस्यात्। सपदिसुखकरं सदासदाहज्वर
तृषियोज्यमिदं नवज्वरेपि ॥

श्रीमताचरकेणाप्युक्तम्—

मुस्तपर्पटकोशीर चन्दनोदीच्यनागरैः ।
शृतंशीतंजलं दद्यात्पिपासा ज्वरशांतये ॥

(जल) खस (जल) सुगन्धबाला (जलबाहो) मोथा (शिशिरं) लालचन्दन उक्त सब औषधों को समान भाग ले अधकचरा कर

ढ़ाई तोलाले एक पात्र जल में पकावै जब आधा रहै मल छान कर खूब शीतल कर अथवा उस काढ़ेके पात्र को बर्फ पर रख देय १ तोला मिश्री मिलाके पिलावै एकही दो रोज के बाद देखे कि दाह शांत नहीं होता तो काढ़ा न पका के सिर्फ रात को भिजा के ओस में रख देय और प्रातःकाल मलछान कर १ तोला मिश्री मिला के पिला देवै इसी प्रकार सबेरे भिजा के किसी शीतल स्थान में रख देय और शाम को मल छानके मिश्री मिला के पिलाने से अति पिपासा सहित भी पित्तज्वर शांत होता है इसी पर चरक महाराज भी कहते हैं। नागर मोथा, पितपापड़ा खस लाल चन्दन, सुगंधबाला और शोंठ इनका काढ़ा बहुत शीतल करके पिलाने से पिपासा सहित बित्तज्वर शांत होता है॥

दाह ज्वरे दाह शमनोपायाः।

सुश्रुत उत्तर तन्त्रम्।

दाहाभिभूतेतुविधिं कुर्य्याद्दाहविनाशनम्।
मधुफाणितयुक्तेन निम्बपत्राम्भसापिवा॥
दाहज्वरार्त्तंमतिमान् बामयेत्क्षिप्रमेव च।
शतधौतघृताभयक्तं दिह्याद्द्वायवशक्तुभिः॥
कोलामलकसंयुक्तैः शूकधान्याम्लसंयुतैः।
अम्लपिष्टैसुशीतैश्च फेनिलापल्लवैस्तथा॥
अम्लपिष्टैस्तुशीतैर्वा पलाशतरुजैर्दिहेत्।
बदरीपल्लवोत्थेन फेनेनारिष्टकस्यच॥
लिप्तेऽङ्गेदाहतृण् मूर्च्छा सर्वथैवप्रशाम्यति।

नया ज्वर हो अथवा प्राचीन हो जिस ज्वर में दाह अधिक हो उस दाह की चिकित्सा अवश्य करनी चाहिये। अगर रोगी कुछ भी बलवान हो तो दो तोला निम्ब पत्र को महीन घोंट पाव भर जल में छान उसमें छ माशा शहद और दो तोला मँगरा सक्कर मिला के रोगी को पिला के तुरंत वमन कराना। या शत बार का धोया भया घृत को शरीर में मर्द्दन कराना। या धान जौ गेहूं तीनों को पाव भर ले एक सेर पानी में दो या तीन दिन भिजा रखना जब पानी खट्टा हो जाय पानी को छान लेय, तब उसी पानी में जव का सत्तू बैर और आँवले को महीन पीस सम्पूर्ण अङ्गों में अथवा जिन २ अगों में दाह हो लेप करना, या बैर के पत्र को पानी में बांट पांच सेर पानी में घोल के मँथना उसमें जो फेन उठे उसे दाह जनित अंगमें लेप करना उसी प्रकार राठे के फेन का लेप करना इत्यादि उपाय से दाह, पियास; और मूर्छा शांत होते हैं॥

दाह पर प्रह्लादन तैल।

यवार्द्धकुडवंपिष्ट्वा मञ्जिष्ठार्द्धपलंतथा।
अम्लप्रस्थाशतोन्मिश्रं तैलप्रस्थंविपाचयेत्॥
एतत्प्रह्लादनंतैलं ज्वरदाहविनाशनम्॥

यव एक पाव, मंजीठ दो तोला, काले तिल का तेल ३ सेर, दही का तोड़ २॥ मन तेल को चांदी की कढ़ाई या कलई दार कढ़ाई में चढ़ाय जव और मंजीठ को पानी में महीन पीस तेल में डाल दे और दही का तोड़ थोड़ा २ डाल मंदाग्नि में पचावै जब सब पानी जल जाय तेल मात्र रह जाय अग्नि से उतार छान बोतल में भर दे इस तेल को शरीर में लगाने से दाह ज्वर शीघ्रही शांत होता है। अगर श्लोकानुसार ७॥ मन दही का तोड़ डाल के तैय्यार करै तो एकही बार उस तेल के लगाने से दाह ज्वर शांत होता है॥

हमारे कविवर लोलिम्बराज महाशय ने दाह के शांत्यर्थ जो उपाय लिखे हैं पाठकगणों के प्रसन्नार्थ उसे भी प्रकाशित करता हूं और काव्य का अर्थ भाषा में ललित नहीं होता इस हेतु से संस्कृत में अन्वय लिखे देता हूँ॥

श्रीखण्डमण्डितकलेवरवल्लरीणां मुक्ताफला-कुलविशालकुचस्थलीनां। वैदग्ध्यमुग्धवचसांसु-विलाशिनीनामालिंगनं सकलदाहमपाकरोति॥

श्रीखण्डेति—विलाशिनी नामालिंगनं सकलदाहं अपाकरोति दूरीकरोतीत्यर्थः कीदृशीनाम श्रीखण्डैर्मंडिता कलेवर वल्लरी यासां श्रीखण्डश्वेतचन्दनं, कलेवरं शरीरं, वल्लरीलता, तनुलतेत्यर्थः, मुक्ता फलैर:कुलानि विशालानि कुचस्थलानियासां, कुचस्थलो वक्षजः वैदग्ध्यं चातुर्य्यं, तेनमुग्धवचसां॥

भावार्थः—अति रूपवती स्त्री षोड्श वर्ष की जिन के कोमल अङ्ग और कठोर कुचों में चन्दन लगे एवं मोतियों के हार शोभित एवं जिसकी चातुर्य्यता भरी मन्द मुसुकानि मन को मोहित कर रही है ऐसी स्त्रियों को अपने अंग में लपटाने से महा दाह शांत होता है॥

शय्यापल्लवपद्मपत्ररचिता वासोवयस्यैः समं कान्तारेकुसमस्फुरत्तरुवरे बीणान्वितं गायनम्। आलापाश्चशुकालिकोकिलकृताः कान्ताश्चकान्ताः कथा वाताश्चामलवालकव्यजनजा दाहंनिरा-कुर्वते॥

शय्येति-पल्लवा वा लतादाः पल्लवो स्त्री किशलय विस्तार कदल्यादिना वा पद्मपत्रै (कमलपत्रै) रचिता शय्या दाहं निराकुर्वते दूरीकरोति, वयस्यैः ससंवासः वयस्ये समान कालिकैः सहवास इत्यर्थः, कथंभूतं—कुसुमस्फुरत्तरुवरे प्रफुल्लपुष्पयुक्ते-वृक्षे, कांतारोमहाबनं, कांतारो स्त्री महारण्ये इति मेदिनी, वीणावाद्यनयुक्तं गायनं (वीणा शितार लोके,) शुकालि कोकिलकुला, आलापाः अलि परिभाषणे इत्यस्यरूपं, शुकः प्रसिद्धः, अलिभ्रमरः कोकिलः पिकः आलापाः वचांसि, कान्ता नवीन नार्य्यः, कांता मनोहरा कथा भरतादि ग्रन्थोक्ता श्रृङ्गार भेदा, अमल वालक व्यजन जनिताः वाताः बालको बीरण मूलं खस इतिलोके, दाहं निराकुर्वते—प्रत्येक मभिसंबध्यते ॥

भावार्थः—कदली (केला) पत्र अथवा कमल पत्रों को पलंग पर बिछाय उस शय्या पर दाह युक्त रोगी को सुलाने से दाह शान्त होता है ॥

(कान्तारेबासः) जो बन प्रफुल्लित पुष्पों से युक्त वृक्षों से शोभा-यमान हो रहा है ऐसे बन में रखने से (कांतार महा जंगल और स्त्री दोनों का बोधक है परन्तु इस स्थल में महाबन लेना) शितार हारमोनियम् एवं बीन आदि बाजाओं कर संयुक्त गान भी दाह रोग को नाश करता है, तोता, कोयल की आवाज, भ्रमर गुंज, रूप-वती युवा स्त्री का स्पर्श, मनोहर कथा और कहानियों का सुनना, नवीन खस के पंखे की हवा पित्त ज्वर जनित दाह को नाश करती है ॥

शेष पित्त ।

पित्त ज्वर शान्त होने पर भी यदि कुछ पित्त का शेष देखे तो उसे शान्ति कर दे क्योंकि कुछ भी पित्त बाकी रहने से

पुनः ज्वर होने का सम्भव है प्रायः पित्त रह जाने में विषम ज्वर होता है उसे डाकृरी में (इन्टर मिटेन्ट फीवर) कहते हैं इस लिये शेष पित्त को शान्ति करना बहुत जरूरी है।

हतावशेषं पित्तंतु त्वक्स्थं जनयतिज्वरम्।
पिबेदिक्षुरसंतत्र शीतंवाशर्करोदकम्॥
शालिषष्टिकयोरन्नमश्नीयात्क्षीरसंप्लुतम्॥

जो पित्त शान्त भये पर कुछ शेष रह के त्वचा में रह जाय तो वह पित्त निस्सन्देह ज्वर पैदा करता है उस अवस्था में उसे पौंड़े का रस या चिनी का सरबत पिलाना चाहिये जब तक पित्त की शान्ति न हो।

वैद्यक न जानने के सबब से चिनी के सरबत आदि शीतल चीजों से इतना लोग डरते हैं कि रोगी को कौन कहै आरोग्य भी पीने में डरते हैं कि कहीं शीत न आ जाय देखिये भाव प्रकाश में क्या लिखा है।

शर्करोदकस्य गुणाः।

जलेनशीतलेनैव घोलिताशुभ्रशर्करा।
एला लवँगकर्पूरमरिचैश्चसमन्विता॥
शर्करोदकनाम्नेतत् प्रसिद्धं विदुषांमुखैः।
शर्करोदकमाख्यातं शुक्रलंशिशिरंसरं॥
बल्यरुच्यंलघुस्वादु वातपित्तास्रनाशनम्।
मूर्छार्छर्दितृषादाह ज्वर शान्तिकरंपरम्॥

शीतल में जल साफ चिनी अथवा मिश्री का सरबत बनाय उस में छोटी लायची कपूर लवँग और काली मिर्च पीस के मिलाने से शर्करोदक ऐसा नाम पण्डितों के मुख द्वारा सुना गया है। यह

शर्करोदक वीर्योत्पन्न कारक, उदर दाह निवारक और दस्तावर है बलकर, रुचिकर हलका स्वादिष्ट वात पित्त और रुधिर विकार का नाश करनेवाला, विहोशी शिर की घुमरी वमन पियास और दाह ज्वर शान्ति करने में परम श्रेष्ठ है, इसलिये पित्त शेष नाशार्थ चिनी का सरबत अवश्य पीना चाहिये ।

और भी लिखा है (शर्करा सहितं नीरं कफ कृत्पवना पहम्) सफेद शक्कर (चिनी) का सरबत कफ को बढ़ाता है परन्तु वायु को नाश करता है, जिस ज्वर में कफ का लेश न हो और पित्त का महा कोप हो तो उस अवस्था में मिश्री का सरबत देना कदापि हानिकर न होगा बल्कि शीघ्र ही रोगी को तसल्ली होगी ।

वात पित्त ज्वर पर फांट ।

मधूकपुष्पंम्मधुकं चन्दनंसपरूषकम् ।
मृणालंकमलंलोध्रं गम्भारीनागकेशरम् ॥
त्रिफलांसारिवान्द्राक्षांलाजानूकोष्णेजलेक्षिपेत्।
सितामधुयुतःपेयः फांटोवासौहिमोऽथवा ॥
वातपित्तज्वरंदाहं तृष्णामूर्छारतिभ्रमान् ।
रक्तपित्तंमदं हन्यान्नात्रकार्य्याविचारणा ॥

यह फांट वातपित्त मिश्रित ज्वर को और वातज्वर तथा पित्त ज्वर को निस्सन्देह आराम करता है, महुआ का फूल, मुलेठी, लालचन्दन, (परूषक) फालसा के जड़ का छाल कमल वृक्ष की डंठी, (न मिलने पर कमलगट्टे का बीज) "कमलं" कमलगट्टा, लोध, गम्भारि, नागकेशर, त्रिफला, सरिवन, मुनक्का और धान का लावा । इन सब दवाइयों को २ तोला ले अधकचरा कर अथवा कलईदार पात्र में एक पाव पानी में एक मृत्तिका पात्र में खूब गरम

कर अग्नि पर से पानी को उतार उसी में औषध को डाल कर ढांप देवै जब शीतल हो जाय मल के छान लेय और एक तोला मिश्री २ मासा शहद डाल के पी जावै अथवा हिम बना के पीवै अर्थात् दवा को रात में भिजा देवै सबेरे मल के छान कर मिश्री मिला के पिये, इस फांट के पीने से वातपित्त ज्वर, दाह, पियास, मूर्छा (बेहोशी) ग्लानि, घुमरी, रक्तपित्त और नेत्रों में नशासा मालूम देना आदि सबों को आराम करता है ॥

कफ ज्वर की चिकित्सा ।

इस बात को खूब याद रखना चाहिये कि जब तक रोगी में ठीक २ कफज्वर के लक्षण न पायेजांय, तब तक कफज्वर नाशक जितनी औषधियां हैं कोई भी न दे क्योंकि वातज्वर अथवा पित्तज्वर में कफज्वर की चिकित्सा करने से रोग शीघ्रही बिगड़ कर रोगी को यमालय पहुंचाय देता है । मूर्खवैद्य जो नाड़ी आदि से रोग का यथार्थ परिज्ञान नहीं कर सक्ते और डरते रहते हैं कि कहीं शीत न आजाय वे अक्सर वात पित्तज्वर में कफज्वर की चिकित्सा कर रोगी को मार डालते हैं ॥ कफज्वरवाले को गरम जल पीने को देना, ऊपरी हवा शीत आदि से बचना, पैर को पायताबे से ढांपे रहना, दूध, चावल, दही आदि शीत पदार्थ पथ्य में न देना इत्यादि बातों पर ध्यान रखना बहुत जरूरी है ॥ एक विषय चिकित्सा के पूर्व ही कहने में भूल गये थे उसे इस स्थल में प्रकाश करते हैं, वह यह है कि क्वाथ सर्वदा मृत्तिका पात्रमें और पात्र का मुख बिना ढांपेहुए पचाना क्योंकिः—

अपिधानामुखेपात्रे जलंदुर्जरतांव्रजेत् ।
तस्मादावरणंत्यक्त्वा क्वाथादीनांविनिश्चयः॥

पात्र का मुख ढांप कर क्वाथादि औषध पकाने से जल अत्यन्त गरम हो खराब होजाता है इस लिये क्वाथदिकों के पात्र का मुख ढांप कर क्वाथ पकाना नहीं चाहिये ॥

कफज्वर पर क्वाथ।

निम्बविस्वामृतादारु शुंठोभूनिम्बपौष्करं ।
पिणपलीवृहताचेति क्वाथोहन्तिकफज्वरम् ॥
सिन्धुवारदलेक्वाथं शोषणं कफजेज्वरे ।
जंघयोश्चवलेक्षोणे कर्णेवाविहतेपिवेत् ॥

नींव का छाल शोंठ, गुरच, देवादारू, कचूर, चिरायता और पुष्कर मूल भटकटैया की जड़ और छोटी पीपर उक्त सब दवाइयों को समान भाग दो तोला लेकर काढ़ा बनाय ३ मासा शहद डाल के पिलावै इसी प्रकार दो समय पिलावै और यथार्थ पथ्य देवै तो निस्सन्देह कफज्वर नाश हो। अक्सर कफज्वर के अति वेग में जंघा का बल जाता रहता है और कान बोझा सा हो जाता है ऐसी अवस्था में समालू (जिसे कहीं २ मेवड़ी भी कहते हैं) के पत्तों का पूर्वोक्त रीति से काढ़ा पिलाना चाहिये। यदि कफज्वर के खांसी श्वास हो तो काढ़ा को सिर्फ सबेरे पिलावे, दोपहर और सांझ को निम्न लिखित चूर्ण को शहद के साथ चटावै॥

कट्फलं पौस्करंशृंगो कृष्णाचमधुनासह ।
कासश्वासज्वरहरः श्रेष्ठोलेहः कफांतकृत् ॥

कायफल, पुष्करमूल, ककरासिंगी, और छोटी पीपर इन सबों को समान भाग लेकूट कपड़छान कर तीन २ मासा की पुड़िया बनायलेय, यह पूर्णमात्रा है, रोगी की जैसी अवस्था या ताकत देखे मात्रा घटा बढ़ा लेय शहद में मिला के दोपहर और साम को चटावै इस के अलावा भी अगर जरूरत पड़ै तो एक दो दफे रात को विशेष कर चार बजे तड़के शहद के साथ देना उचित है, परन्तु इस बात पर अवश्य ध्यान रखना चाहिये कि कफ सूखने न पावे कारण यह है कि कफ सूख जाने से स्वास का जोर और मूर्छा होने लगता

है पूर्वापर बिचार सहित एक ही औषध खिलाने से रोग निमूल हो जाता है, बिना बिचार के अमृत भी पिलाने से रोगी मर जाता है ॥

बात पित्तज्वर, बात श्लेष्म ज्वर और पित्त श्लेष्म ज्वर में न्यूनाधिक लक्षण जिस दोष के अधिक पाये जांय वैसाही दोषों के काढ़ा में दवा चुन कर क्वाथ बना के पिलावै इस स्थल में थोड़ी बुद्धि खरचने का काम है और भी ज्वर रोग नाशक अनेक औषध उपाय हैं आगे लिखेंगे अब सन्निपात ज्वर का निदान लिखते हैं:--

सन्निपात ज्वर के लक्षण ।

क्षणेदाहःक्षणेशीत मस्थिसन्धि शिरोरुजा ।
सस्रावेकलुषेरक्ते निर्भुग्नेचापिलोचने ॥
सस्वनौसरुजौकर्णौ कण्ठशूकैरिवावृतः ।
तन्द्रा मोहःप्रलापश्च काशःश्वासाऽरुचिभ्रमः ॥
परिदग्धाखरस्पर्शा जिव्हास्रस्तांगतापरा ।
ष्ठीवनंरक्तपित्तस्य कफेनोन्मिश्रितस्यच ॥
शिरसोलुण्ठनंतृष्णा निद्रानाशोहृदिव्यथा ।
स्वेदमूत्रपुरीषाणां चिराद्दर्शनमल्पशः ॥
कृशत्वंनाति गात्राणां सततंकण्ठकूजनम् ।
कोठानांश्याव रक्तानां मण्डलानांचदर्शनां ॥
मूकत्वंस्रोतसांपाकोगुरुत्वमुदरस्यच ।
चिरापाकश्चदोषाणांसन्निपातज्वराकृतिः ॥

अर्थ-सन्निपात ज्वर में कभी जाड़ा लगे और कभी दाह मालूम हो, हड्डियां, सन्धियों और शिर में दर्द हो आंखों से आंसू बहै, नेत्र

लाल या धूमिल रङ्ग के हों और भीतर को बैठे जान पड़ें, कानों में सनासनाहट एवं दर्द हो गला सूखा और गले में कांटे से पड़ गये हों झपकी, बेहोशी, आनतान बकना खांसी, हांफी, खाने पर मन न चलना और घुमरी हो। जीभ ऐसे ही जैसा अग्नि से जल गयी हो और छूने में खरखरी मालूम हो, सम्पूर्ण शरीर सुस्त वा ढीली हो जाय जो करवट लेने में भी आलस्य लगै, मुख से थूंक ललाई लिये हुये कफ पित्त के सहित निकले, शिर में ऐसी दर्द वा बेचैनी हो कि शिर को इधर उधर हिलाता रहै पियास की अधिकता नींद का न पड़ना और छाती में दर्द हो। पसीना बहुत कम निकले और दिशा पेशाब भी बहुत देर में और बहुत कम हो ललाई लिये। यहां पर पाठ है कृशत्वं नातिगात्राणां" और कहीं २ ऐसा भी पाठ मिला है "कृशत्वंचाति गात्राणां" अर्थात् शरीर बहुत दुर्बल होजाय (लेकिन देखने में आते हैं हमने कई सन्निपात ज्वरों को बहुत दुर्बल देखा है और किसी २ को अति दुर्बल भी नहीं पाया) रोगी हर समय कांखता रहै और पीत काली अथवा लाल रंग के गोल २ चट्टे या फुंसिया सम्पूर्ण शरीर में निकल आवैं विशेषकर कोखा और जांघों में। अच्छी तरह बोल न सकै या बिलकुल ही न बोले न कान से सुने और न आंखों से देखे और नाक कान पक जांय, पेट भारी और फूला सा रहै और उत्तम चिकित्सा करने पर भी दोष बहुत दिनों में पचै इत्यादि लक्षण युक्त रोगी को सन्निपात ज्वरी समझना उक्त सम्पूर्ण लक्षण उपस्थित होने पर असाध्यही समझना चाहिये। यद्यपि सन्निपात रोग एक प्रकार का है परन्तु दोषों के न्यूनाधिक से १३ भेद कहा है—जैसे एक दोष की अधिकता से अर्थात् किसी सन्निपात ज्वर में बात का जोर अधिक रहता और वह इस वजे से मालूम होता है कि बात के जितने उपद्रव हैं स्वास, खांसी, घुमरी आन तान बकना अंगों में दर्द जमुहाई अधिक आना इत्यादि होने से। इसी प्रकार पित्ताधिक से शरीर में लाल २ दाने पड़ जाना मुख पाक अतीसार अंतरदाह आदि, कफादिक से अंग की जड़ता वाणी की स्तब्धता

आदि इसी प्रकार लक्षणों की अधिकता से दोष की अधिकता जानी जाती है । इस तरह वातादि से तीन द्वंदज से तीन सन्निपात से एक तथा वातादि दोष के अधिक मध्य और हीन होने से सब तेरह भेद कहे हैं शास्त्रज्ञ वैद्य लोग तल्लक्षण अनुमान कर लेते हैं । अब वैद्यों के नाम करण किये हुये तेरह प्रकार के सन्निपात ज्वर के नाम और लक्षण लिखते हैं ॥

त्रयोदश सन्निपात के नाम ।

सन्धिकश्चान्तकश्चैव रुग्दाहश्चित्तविभ्रमः ।
शीताङ्गस्तन्द्रिकःप्रोक्तः कण्ठकुब्जश्चकर्णकः ॥
विख्यातोभुग्ननेत्रश्च रक्तष्ठीवीप्रलापकः ।
जिह्वकश्चेत्यभिन्यासः सन्निपातास्त्रयोदशः ॥

सन्धिक १ अन्तक २ रुग्दाह ३ चित्तभ्रम ४ शीतांग ५ तन्द्रिक ६ कण्ठकुब्ज ७ कर्णक ८ भुग्ननेत्र ९ रक्तष्ठीवी १० प्रलापक ११ जिह्वक १२ और अभिन्यास यही तेरह नाम सन्निपात के हैं। अब हम तेरहों सन्निपात के अवधि लिखते हैं कि कौन सन्निपात कितने दिन तक रहता है ।

१३ सन्निपात की अवधि ।

सन्धिकेवासराःसप्त श्चान्तकेदशवासराः ।
रुग्दाहेविंशतिर्ज्ञेया वन्ह्याष्टौचित्तविभ्रमे ॥
पक्षमेकन्तुशीताङ्गे इत्यादि ॥

उक्त तेरहो सन्निपात के आयु के दिन श्लोक में पूर्ण न लिख के भाषा में लिख देते हैं । सन्धिक सन्निपात की मर्यादा सात दिन है अन्तक दश दिन, रुग्दाह के २० दिन, चित्तविभ्रम के आठ दिन, शीतांग के १५ दिन, तन्द्रिक के २५ दिन, कण्ठकुब्ज के १३ दिन, कर्णक के

३ दिन मास, भुग्ननेत्र के ८ दिन, रक्तष्ठीवी के १० दिन, प्रलापक के १४ दिन, जिह्वक के १६ दिन और अभिन्यास के भी १६ दिन की मर्यादा है परन्तु यथार्थ रक्षा अर्थात् चिकित्सा न होने से रोगी तत्काल मर जाता है इसका कोई नियम नहीं है उत्तम उपाय द्वारा रक्षा करने पर भी उक्त दिन पर्य्यन्त मर्यादा रहती है अब तेरहों सन्निपात के विशेष २ लक्षण लिखते हैं ॥

संधिक—सन्निपात उसे कहते हैं; जिस ज्वर के पूर्व रूप ही में संधि २ (जोड़) में वात पीड़ा की अधिकता, कफ, संताप, बलहानि और नींद न पड़े। इस ज्वर का वेग सात दिन रहता है और मातदिल चिकित्सा करने से आराम होता है ॥

अंतक—उस ज्वर को कहते हैं जिस में अति दाह, शरीर आग सी जली जाय, बिहोशी, शिर दर्द, कंपन, और हिचकी हो इस ज्वर की अवधि दश दिन है लेकिन असाध्य है रोगी मुश्किल से बचता है ॥

रुग्दाह—इस ज्वर का लक्षण यह है कि रोगी आन तान बहुत बकै, ज्वर का जोर अधिक हो बिहोशी घुमरी, जो बात पूछी ठीक २ जबाब न दे सके, कंठ और गले में दाह, पियास बहुत, कुछ २ खांसी और स्वास हो। इस ज्वर की मर्यादा बीस दिन की है, कष्ट साध्य है अर्थात् उत्तम चिकित्सा करने पर आराम हो ॥

चित्तविभ्रम—नाम ही से समझ सके हो, जिस ज्वर के वेग से मनुष्य पागल हो जाय, कभी हँसे, कभी गावै, कभी, रोवै, और आन तान बकता रहै, इस बुखार की आयु आठ दिन की है उपाय करने से आराम हो जाता है, चिकित्सा हौलदिल रोग के समान करना उचित है ॥

शीताङ्ग—समस्त शरीर बरफ के समान शीतल हो देह कांपै, हाथ पैर सब ढीले हो गये हों किसी की बात न सुने, नेत्र में जलन, खांसी, बमन, और दस्त पतले हों यह ज्वर पन्द्रह दिन रहता है ऐसा शास्त्रकारों ने कहा है परन्तु जल्द खून में गरमी न पहुंचने से

रोगी शीघ्र मर जाता है। यदि इस ज्वर में अन्तस में अधिक दाह और पियास हो तो निस्सन्देह रोगी मर जायगा क्योंकि प्रायः ऐसा देखने में आया है कि भीतर अधिक दाह और ऊपर शीत होने से रोगी नहीं बच सका।

तन्द्रिक–ज्वर में अक्सर रोगी एक टक निहारता रहता है, शरीर बहुत गरम हो और बारम्बार गले में कफ आ जाय, जीभ में कांटे पड़ जांय जीभ काली और मोटी हो जाय, दस्त पतले, कानों में दर्द, गला अत्यन्त खुष्क जो बोलने में तकलीफ हो, ऐसी बिहोशी हो मालूम हो कि रोगी सो रहा है। यह ज्वर पच्चीस दिन में पीछा छोड़ता है वह भी यदि सद्वैद्य चिकित्सा करने वाला हो, कहीं मूर्खों का हाथ लगा तो सद्य ही यमालय का रास्ता लिया॥

कण्ठकुब्ज–इस बुखार में पहिले ही गला रुन्ध जाता है और पानी पीने में रोगी को निहायत तकलीफ होती है, जैसे पागल कुत्ता के काटने के जहर से पीड़ित रोगी से पानी नहीं पिया जाता, वैसाही कंठकुब्ज ज्वर वाले से पानी नहीं पिया जाता, एक घूंट पानी पीने से प्राण छूटने का सा दुःख होता है, इस ज्वर में यद्यपि दाह, मोह, विलाप आदि और लक्षण रहते हैं पर गला का पकड़ जाना इस ज्वर में विशेष लक्षण है। वैद्यों ने इस ज्वर को कष्टसाध्य कहा है परन्तु असाध्य ही समझिये दश रोगी में एक दो आराम होता है। इसकी चिकित्सा नारायण तैल गले में मालिस करके अथवा राई के पलस्तर आदि से गला खोलने का उपाय बहुत जल्द करै, अगर किसी उपाय से गला का खुलना न जान पड़े तो गले में दो तीन जोंक लगा के निकलवाय देय और शीतल जल आदि पीने को देवै और न कोई बहुत गर्म ही दवा देवे जहां तक हो किञ्चित् उष्ण गौ का दूध अधिक पीने को देय।

कर्णकज्वर–इस ज्वर में रोगी कान का बहरा हो जाता है यह विशेष लक्षण है। प्रलाप, कण्ठरुन्ध दमा, खांसी मुख से लार का बहना आदि लक्षण रहते हैं। इस ज्वर की आयु वैद्यवरों ने तीन

महीना लिखा है और अत्यन्त कठिनता से *आराम होता है ऐसा* कहा है ; किसी २ रोगी को देखा भी गया है ।

भुग्ननेत्र—इस बुखार में नेत्र टेढ़े हो जाते हैं, यह विशेष लक्षण है; तथा ज्वर की अधिक्यता, बुद्धि का नाश, मोह, प्रलाप. भ्रम और कहीं २ सूजन यह भी लक्षण होते हैं । इस ज्वर की आठ दिन की मर्यादा है परन्तु असाध्य है ।

रक्तष्ठीवीज्वर—इसमें जीभ अतिशय काली अथवा लाल, उसमें चकत्ते पड़ गये हों और उसमें रुधिर बहता हो यह विशेष लक्षण है, इसके अलावा वमन, पियास, मोह, पेट में दर्द, दस्त पतला हिचकी, पेट का फूलना, घुमरी, और चित्तभ्रम आदि लक्षण होते हैं । रक्तष्ठीवी दश दिन रहता है परन्तु रोग असाध्य है, चिकित्सा इसमें बहुत गरम नहीं करनी चाहिये ।

प्रलापक—यह ग्यारहवाँ सन्निपात ज्वर है कि जिसमें रोगी दिन रात बकता ही रहै, अपनी बड़ाई की बातें करै, पवित्रता में चित्त राखै, हर एक प्राणी की चिन्ता करै, बुद्धि स्थिर न रहै और चित्त महा व्याकुल रहै । इस ज्वर की अवधि चौदह दिन है परन्तु यमालय का रास्ता प्रत्येक समय निहारता रहता है ।

जिव्हक—सन्निपात उसे कहते हैं जिसमें अति कठिन कंटक युक्त जिह्वा होय, इस ज्वर में प्रायः रोगी बहिरा और गूंगा होजाता है, इस ज्वर की मर्यादा सोलह दिन है और कष्ट साध्य है ।

अभिन्यास—अब तेरहवाँ सन्निपात का लक्षण कहा जाता है । रोगी के मुख पर चिकनई हो, निद्रा अधिक हो, इन्द्रियां शिथिल बल का नाश और बोला कम जाय एवं स्वास रुक २ के आवै तो अभिन्यास ज्वर जानना यह सन्निपात केवल मृत्यु के तुल्य है । इसके आगे अब तेरहो सन्निपात के साध्यासाध्य का निर्णय करते हैं ।

अथ साध्यासाध्य निर्णयः ।

संधिकस्तंद्रिकश्चैव कर्णकः कंठकुब्जकः ।
जिह्वकश्चित्तविभ्रंशः षट्साध्याःसप्तमारकाः ॥

सन्धिक, तन्द्रिक, कर्णक, कण्ठकुब्ज, जिह्वक और चित्त विभ्रंश यह छ सन्निपात साध्य अर्थात् सत् वैद्य द्वारा देशकाल पात्र के अनुसार उत्तम चिकित्सा होने से आराम हो सक्ता है। अन्तक, रुग्दाह, शीतांग, भुग्नदक् रक्तष्ठीवी, प्रलापक और अभिन्यास यह सात प्रकार के सन्निपात प्राण के हरने वाले हैं। हिक्मत में सन्निपात को सरसाम कहते हैं और डाक्टरी में सन्निपात का लक्षण प्रायः ऐपोलिपक्स रोग में मिलता है और डाक्टर लोग उसके अनुसार चिकित्सा भी करते हैं इसी से सन्निपात ग्रसित रोगी को कम आराम कर सक्ते हैं क्योंकि इस रोग में डाक्टर लोग शिर पर बर्फ रखाते हैं और सन्निपात में शीतल जलसे सिञ्चन करना निषेध किया है। लिखा भी है-सन्निपातेतु दाहार्तम् यः सिंचेच्छीत वारिणा। आतुरः सकथम् जीवेद् भिषग्वा सकथं भवेत्" जो वैद्य सन्निपात में दाह में शीतल जल से सिञ्चन करता है अर्थात् शिर या छाती वगैरह में बर्फ या शीतल जल लगाता है वह वैद्य रोगी को कैसे आराम करैगा किन्तु मार डालैगा उसको वैद्य कैसे कहना चाहिये। पाठक गण को स्मरण होगा पूर्व में हम लिख आये हैं कि ज्वर रोग में गरमी प्रधान रहती है उस गरमी से और मस्तिष्क से पूरा संबन्ध है उस पर ध्यान रखना चिकित्सक मात्र को जरूरी है ज्वर रोग में उसके निवारण के उपाय न करे उलटी चिकित्सा जैसे आमज्वर (कच्चा बुखार) में दवा देना अथवा खाने को न देना, अथवा गरम २ औषधियों का काढ़ा या रस खिलाना इत्यादि उट-पटांग उपायों से ज्वर रोग में सन्निपात हो जाता है और इस रोग से विरले रोगी आराम होते है देखिये लोलिम्बराज क्या कहते हैं ॥

सन्निपातस्यकालस्य कश्चिद्भेदोनविद्यते।
चिकित्सकोजयेद्यस्तं तस्मात्कोस्तिप्रतापवान् ॥

सन्निपात रोग और काल (मृत्यु) में कुछ भी भेद नहीं है जो वैद्य उस सन्निपातको जीतै अर्थात् अपनी अनुभव प्रक्रिया के द्वारा उस काल रूपी रोग से रोगी को बचावै तो उससे बढ़कर संसार में और कौन प्रतापी है ॥

सन्निपातज्वर में कर्णमूल ।

सन्निपातज्वरस्यान्ते कर्णमूले सुदारुणः ।
शोफःसंजायतेतेन कश्चिदेव प्रमुच्यते ॥

सन्निपात ज्वर के अन्त में कान की जड़ में खून जमकर महा दुख दायक एक सूजन से ऐसा ही कोई भाग्यशाली हो तो आरोग्य होता है वह सूजन मनुष्य के मारने को होती है यह सूजन भी बुखार बिगड़ने के कारण से होता है क्योंकि ज्वर में जब आभ्यन्तरिक बात पित्त की गरमी अधिक बढ़ती है और अजान वैद्य उसे शान्त नहीं कर सक्के तो वही गरमी मस्तिष्क में पहुंच तत् संवन्धी नसों के खून को अत्यन्त उष्ण कर पतला करदेती है तब वही खून वहां से टेघर कर कान के नीचे नस में आके जम जाता है उस्से जो सूजन पैदा होती है उसी को कर्णमूल कहते हैं (सन्निपात ज्वरस्यान्ते) इस पाठ का तात्पर्य्य यह है कि ज्वर के अन्तमेही प्रायः

---

* कषायंयःप्रयुंजीतनराणां तरुणज्वरे ससुप्तं कृष्णसर्पंतु कराग्रेण परामृशेत् ॥

जो वैद्य नये बुखार में अर्थात् कच्चे ज्वर में काढ़ा आदि दवा पीने को देता है वह मूर्ख वैद्य मानो सोते हुये काले सांप को अंगुलियों से छूकर जगाता है । तात्पर्य्य यह कि ज्वरारम्भ में दवा खाने को न देने से अथवा कुपथ्य के होने से सन्निपात हो जाता है जिस रोग से बिरलाही लोग बचते हैं ॥

कर्णमूल होता है किन्तु ज्वर के आदि मध्य में भी कर्णमूल होता है जिसका प्रमाण देते हैं ॥

ज्वरस्यपूर्वं ज्वरमध्यतोवा ज्वरान्ततोवा श्रुतिमूलशोथः । क्रमादसाध्यः खलुकष्टसाध्यः सुखेनसाध्यो मुनिभिःप्रदिष्टः ॥

भावार्थः—अगर सन्निपात रोग के पूर्व ही कर्णमूल शोथ उत्पन्न हो तो असाध्य जानना मध्य में कर्णमूल हो जैसे कष्ट साध्य और अन्त में कर्णमूल होने से सुख साध्य जानना यह बड़े २ वैद्यवरों का अनुभव किया हुआ है । सन्निपात रोग में कर्णमूल क्यों होता है उसका ठीक कारण यही है कि मस्तिष्क में जो रक्त है गरम होने से पतला होके नीचे को आता है किन्तु कर्णस्थमूल नाड़ी के गाढ़ रक्त के सम्बन्ध से वह भी गाढ़ा होके जम जाता है और उसी से कान के पीछे नीचे की तरफ फूल आता है फिर रक्त ऊपर को नहीं जा सकता इसी से वैद्यवरों ने उसके निकाल देने की राय प्रगट की है । बहुत से मूर्ख वैद्य जो सुश्रुतादि ग्रन्थ को देखा सुना नहीं है डर से रक्त नहीं निकालते जिससे रोगी मर जाता है ।

अहियापुर में एक प्रयागवाल के स्त्री को सन्निपात ज्वर वशात् कर्णमूल हुआ और यहीं के एक नामी वैद्य की चिकित्सा होती थी, वैद्य महाराज डर से अथवा और किसी विचार से रक्त को मोक्षण न करके टिंचरआइयोडिन लगाना आरंभ किया, वह भला आराम कब हो सक्ता था, अन्त में एक डाक्टर आ के चीरा; करीब दो ढ़ाई सेर के मवाद निकला किन्तु ज्यादा दिन होने से वह मवाद ऐसा सड़ गया था कि जिसके विष से स्त्री मर गई । लिखा है—

शांतेत्रिदोषेश्रुतिमूलजात शोथस्यरक्तं प्रविमोचयेत्प्राक, पश्चान्मुहुःकट्फलकृष्णजीरा विश्वाकुलत्थोद्भव लेपनंसत् ॥

त्रिदोष अर्थात् सन्निपातज्वर के शांत होने पर कर्णमूलमें उत्पन्न शोथ से पहिले जलौका (जोंक) या नस्तर द्वारा रक्त निकाले बाद कायफल, कालाजीरा शोंठ और कुरथी इन सबों को पानी में खूब महीन पीस के मोटा लेप करै या अपने बिचार से अन्य लेपादि लगावैं जोक लगाने के उपरांत एक दिन निम्ब पत्र बांध के तब कोई लैप लगावै॥

सन्निपात ज्वर की चिकित्सा।

बुद्धिमान वैद्यको प्रथम ही यह निदान कर लेना बहुत उचित है कि १३ प्रकार के कहे हुये सन्निपातों में इसे कौन सन्निपात है और इसे ज्वरारंभ ही में सन्निपात हुआ है अथवा अपथ्य से ज्वर बिगड़ कर सन्निपात हुआ है। रोगी की प्रकृति अवस्था बल, देश, काल, इसके कोई प्रमेहआदि अन्य रोग तो नहीं थे या ज्वर के अतिरिक्त पूर्वोपार्जित अन्य रोग भी उपस्थित है इत्यादि सब बातों को दवा देने के पूर्व ही जांच लेना चाहिये क्योंकि बिना सब बातों को जांचे दवा देना महा पाप है॥

यदि अपथ्य से ज्वर रोग बिगड़ कर सन्निपात हुआ हो तो उसे लंघन नहीं कराना, हलका पथ्य देता जावे और बढ़े दोषोंको कोमल चिकित्सा से शांत करै, यदि प्रारंभही से सन्निपात हुआ होतो बिचारके साथ १०—११ पृष्ठ के अनुसार लंघन करावै, जल प्रकर्ण को देखके गरम जल पीने को देय, सन्निपात रोगी को ऐसे मकान में रखना चाहिये जो बहुत साफ खुलासा जिसमें दो तीन दरवाजे हों, ज्यादा हवा हो तो परदा टांग दे किवाड़ न बन्द करै और न रोगी के समीप बहुत भीड़ रहै अगर रोगी का होसहवास दुरुस्त हो तो वैद्य तीन २ घंटे पर अथवा दोनों समय उससे भीतरी दुख पूछ लिया करै और वैसा ही चिकित्सा करै अगर बतलाने की सामर्थ्य जाती रही हो तो बड़ी बुद्धिमानी के साथ चिकित्सा करनी चाहिये॥

यदि रोगी की चैतन्यता जाती रही हो अथवा कंठ का अवरोध हो तो वैद्य इस बात की कोशिश सब से पहले करै जिससे रोगी

कुछ होस में आवै और गला खुले जिससे वह अपना सुख दुख बयान कर सके। इसस्थल में यह जता देना बहुत ही उचित है कि बिना शिर पर अधिक गरमी पहुंचे न रोगी बिहोस होता है और न कंठ बन्द होता है इस लिये मूर्छित रोगी की चिकित्सा रसादिक से कभी न करै अर्थात् रस खाने को न देय ॥

संज्ञानाश का उपाय ।

कम्पः प्रलपनं यस्य संज्ञानाशश्चदारुणः ।
रसैश्चलाववर्तैश्च कुलिङ्गैःशशतित्तिरैः ॥
तर्पयेत्प्राक्पुराणेन सर्पिषाभ्यंजयेन्नरं ।
बलारास्ना गुडूच्याद्यैस्तैलैश्चपरिषेचयेत् ॥

जो सन्निपाती रोगी के शरीर में कम्पन अधिक हो या किसी को न चीन्हे आनतान बकता हो अथवा इन्द्रियों की चैतन्यता बिलकुल जाती रही हो उस रोगी को लावा, बटेर, चिड़ा, खरगोश और तीतर इन के मांस रस अर्थात् सुरुवा को पहिले पिलाय के फिर समस्त शरीर में पुराने घी का मालिस करै अथवा बरियारा के जड़ की छाल रासन और गुरुच के क्वाथ से सिद्ध किया तैल को मर्दन करै। अगर इस क्रिया से मूर्छित न जागै अर्थात् संज्ञा चैतन्य न हो तो निम्नलिखित औषध का प्रयोग करै।

मूर्छित सन्निपात पर लघु सूचिकाभरण रस ।

विषंपलमितंसूतः शाणिकश्चूर्णयेद्द्वयम् ॥
तच्चूर्णं संपुटे क्षिप्त्वा काचलिप्त शरावयोः ।
मुद्रांदत्वाचसंशोष्य ततश्चुल्ल्यां निवेशयेत् ।
वन्हिंशनैःशनैःकुर्यात् प्रहरद्वयसंख्यया ॥

ततउद्घारयेन्मुद्रामुपरिस्थांशरावकात् ।
संलग्नेयोभवेत्सूतस्तंगृहणीयाच्छनैःशनैः ॥
वायुस्पर्शो यथानस्यात्तथाकुप्यांनिवेशयेत् ।
यावत्सूच्यामुखेलग्नः कुप्यांनियतिभेषजे ।
तावन्मात्रारसोदेयो मूर्छितेसंनिपातिनि ॥
क्षीरेणप्रस्थिते मूर्द्धि तत्रांगुल्याचघर्षयेत् ॥
रक्तभेषजसंपर्कान्मूर्छितोपिहिजीवति ।
तथैवसर्पदष्टस्तुमृतावस्थोपिजीवति ॥
यदातापोभवेत्तस्य मधुरं तत्रदीयते ।

यह श्लोक शार्ङ्गधर के द्वितीय खण्ड का है । (विष) शींगिया इसी को मीठा तेलिया भी कहते हैं २ तोला (सूत) पारा ४ मासे दोनों को एक में मिला के खूब महीन चूर्ण कर, दो रकावी जिसमें कांच का लुक हो (यह रकावी सौदागरों के दूकानों में मिलती भी है) उसमें चूर्ण को धर दूसरी रकावी ऊपर से ढक पांच कपरौटी करके सुखाय लेय बाद निर्वात कोठरी में उस प्याले को चूल्हे पर चढ़ाय दे पहर पर्य्यन्त वहुत धीमी आंच से पचावै, उसके बाद सम्पुट को ठंढा कर आहस्ते से रकावी को अलग कर लेय, ऊपर की रकावी में जो पारा लगा हो उसे निकाल किसी कांच की सीसी में रख काग से फौरन उसका मुख बन्द कर दे, ताकि हवा न लगने पावै । मूर्छित रोगी का बीच में थोड़ा सा शिर मुड़ाय महीन नस्तर मार के जरा सा घाव कर दे जब उसमें से रुधिर निकले जितना सूची का मुख होता है उतना सीसी में रस लेके उस घाव में छोड़ उंगली से घिसे और थोड़े से दूध से धोडाले, वह रस रक्त से मिल मस्तिष्क में जाके जमे रुधिर और कफ को ठीक करता है उस्से

मूर्छित जाग उठता है। उसी प्रकार सर्प दंशित (सर्प से काटा हुआ) मूर्छित (मरे के समान) के शिर पर उक्त रस का प्रयोग करने से आराम होता है। पूर्वोक्त प्रयोग द्वारा मूर्छित के जागने पर अथवा न जागने पर ताप आवै अर्थात् शरीर ज्यादा गरम हो जाय या नाड़ी देखने से भीतर गरमी अधिक बोध हो तो उसे पौंडे का रस अथवा मीठे अनार का रस पिलावे यदि दोनों चीजों में से एक भी न मिले तो गौके ताजे दूध में मिश्री मिला के अथवा केवल मिश्री का सरबत पिलावै। भूत पूर्व वैद्यगण ऐसे ही ऐसे कियायों के द्वारा यश लाभ करते थे आज कल के वैद्यों से कठिन कियायों का प्रयोग करना तो दुष्कर ही है यथार्थ औषध तक नहीं बना सके तो रोगी कैसे आराम कर सके हैं॥

सन्निपात पर उन्मत्त रस का नस्य।

रसगंधौसमानांशौ धत्तूरफलजैरसैः।
मर्दयेद्दिनमेकंच तत्तुल्यंत्रिकटुक्षिपेत्॥
उन्मत्ताख्योरसोनाम नस्येस्यात्सन्निपातजित्।

पारा और आमलासार गन्धक दोनों को समान भाग ले धतूर के फल के रस में एक दिन अर्थात् चार पहर बराबर खरल करे, उस कजली के बराबर त्रिकटु (शोठ पीपर मिर्च) महीन पिस के मिलावै, इसका नाम उन्मत्त रस है इसका मात्रा आधी रत्ती से दो रत्ती तक है इस रस को नाश देने से (सुंघाने से) भी सन्निपात मूर्छित जागता है॥

सन्निपात पर अञ्जन।

निस्त्वक्जेपालबीजंच दशनिष्कंविचूर्णयेत्।
मरिचंपिप्पलीसूतं प्रतिनिष्कंविमिश्रयेत्॥

भाव्योजंबीरजैर्द्रावैः सप्ताहं प्रयत्नतः।
रसोयमंजनेदत्तः सन्निपातं विनाशयेत्॥

छिला हुआ जमालगोटे का बीज ४० मासा मिरच छोटी पीपर और पारा यह सब चार २ मासा ले के सबों को महीन चूरन कर खरल में डाल जंभीरी नीबू के रस में सात दिन घोट पश्चात् सुखाय के खूब महीन चूर्ण कर किसी कागदार सीसी में रख दे। इस चूर्ण के अञ्जन देने से सन्निपात मूर्छित जागता और सन्निपात रोग बिनाश को प्राप्त होता है॥

अगर कोई प्रश्न करै कि यहां मूर्छा खास रोग नहीं है सन्निपात रोग का उपद्रव है तो सन्निपात ही का क्वाथ वगैरह क्यों न देवै मूर्छा आप ही जाती रहेगी? यह ठीक है, किन्तु यह वैद्यों का सिद्धान्त मत है, कोई रोग क्यों न हो जिस रोग में जो उपद्रव अधिक बढ़ा हो खास कर मूर्छा आदि जो शीघ्र ही प्राण हरण करने वाले हैं उन्हें बिशेष चिकित्सा द्वारा जहां तक हो सके जल्द शांत करै। (शिक्षा) अंजनादि पूर्वोक्त प्रयोग करने के पूर्व ही वैद्य को यह जांच लेना बहुत उचित है कि रोगी के बर्तमान रोग के पहले सुजाक, गरमी, प्रमेह, अतीसार, शिरोरोग, हौलदिल उन्माद, रक्तबवासीर तृष्णा, बमन, धातुशोष और उष्णवायु आदि कोई रोग तो नहीं था अथवा वातपित्त प्रकृति युक्त महा निर्बल तो रोगी नहीं है यदि हो तो ऐसे रोगी के साथ उपरोक्त दवाइयों के प्रयोग न कर के साधारण और मातदिल औषधों के द्वारा मूर्छा को दूर करै क्योंकि ऐसे रोगियों का मस्तिष्क निहायत निर्बल रहता है अतिउग्र औषधों के प्रयोग करने से रोगी के मरजाने का खौफ है। उपरोक्त रोगयु सन्निपात रोगी की मूर्छा इस प्रकार दूर करै॥

मूर्छा का मातदिल उपाय।

रोगी का शिर मुड़ाय देय अथवा बाल महीन कतराय देय कालेतिल का तेल १ छटांक, अंगूर अथवा ऊख का शिरका जिसमें

मसाला वगैरह कुछ न पड़ा हो २ तोला, पानी डेढ़ पाव सबों को एक में मिला लेय और उसी में कपड़ा तर कर के शिर पर रक्खे जब कपड़ा सूख जाय फिर उसी पानी में कपड़े को तर करले और शिर पर रक्खे लेकिन कपड़ा डुबाते समय हरबार पानी को हिला के तेल पानी को एक दिल कर लिया करे। इसी प्रकार जब तक होश न हो बराबर रखता जावै, जब पानी चुक जाय तो उसी प्रकार दूसरा पानी तैय्यार कर लेय। चार पांच सेर पानी को ऐसा गरम कर लेय जो शरीर पर डालने से क्लेश न हो, उसी पानी को एक टोंटीदार बरतन में भर एक आदमी रोगी के पैर के गांठ के नीचे तरेरा देवै और एक आदमी आहिस्ते २ पैर को धोवै, जैसे गाय दुही जाती है उस प्रकार धोवै, नीचे से ऊपर को हाथ न ले जावै। पैर धोने के बाद पैर पोछ के ऊनी या सूती मोजा पहनाय देय अगर मोजा न मिलै तो पैर में कपड़ा लपेट देय और घंटे दो घंटे के बाद खोल देय, इसी प्रकार दो तीन दफे करने से निस्सन्देह मूर्छा जाती रहती है। हमारे देशी वैद्य प्रथम तो ऐसी चिकित्सा जानते नहीं, यदि कोई हकीम या हिकमत का जाननेवाला यह उपाय करै भी तो झट कह देंयगे कि शीत आजायगी। हम कहते हैं दूध घी के कमी के वजे से, बाल बिवाह से, मांस भक्षियों के इस देश में अधिक भर जाने से, आजकल देश की दशा ऐसी बिगड़ गई है कि समस्त भारत के लोग धातु क्षीण हो रहे हैं और धातु की निर्बलता के सबब से अत्यन्त गरम दवाइयां लोगों को कम माफकत करती हैं, हम पच्चीस बर्ष से चिकित्सा का काम करते हैं जितने सन्निपात रोगी साधारण मातदिल औषधों के प्रयोग से आरोग्य किया है उग्र और अत्यन्त उष्ण औषध द्वारा नहीं॥

संधिक सन्निपात की चिकित्सा।

नागरमोथा, देवदारु, गुरुच, रासन, शतावर, यह सब एक २ तोला। रेंड़ की जड़ की छाल, कचूर, कुटकी, रूसा की पत्ती और सोंठ यह सब छः छः मासा ले अधकचरा कर चार पुड़िया बनाय एक

पुड़िया को एक मृत्तिका पाव भर जल डाल के धीमी आंच से पकावे जब छुँटाक जल रह जाय शीतल कर मल के छान लेय और एक मासा शहद डाल के पिलाय देय इसी प्रकार दोनों समय पिलावै ॥

जिस कमरे में रोगी हो उसके बाहर निर्गुण्डी, गूगल, पीली सरसों, निम्बपत्र और रालाधूप इसकी धूनी देय, इससे सन्निपात का नाश होता है ॥

सन्धिक सन्निपात में हलका लंघन और पसीना न आता हो तो पसीना लाके शरीर हलकी करना और यवागू आदि का पथ्य देना ॥

अन्तक सन्निपात ।

यद्यपि अन्तक सन्निपात त्याग करने को लिखा है क्योंकि यह सन्निपात मनुष्य को मारने ही के लिये आता है तथापि कण्ठगत प्राणवालों की भी चिकित्सा करना ऐसा शास्त्रकारों ने आज्ञादी है ॥

हड़ का बक्कल, वला की पत्ती, अमलतास का गूदा, देवदारु, कुटकी, रासन, गुरच और कुलीजन सब को समान भाग ले अधकचरा कर एक एक तोला की पुड़िया बनावें पूर्वोक्त प्रकार दोनों समय काढ़ा पिलावै ॥

अन्तक सन्निपाते रोटिका बंधनं ।

यह प्रयोग अनेक वैद्यों का अनुभव किया हुआ है। राई के चूर्ण को लहसुन के रस में सान के रोटी बनावें और तवेपर रख घी का पुचारा दे के सेंके बाद गरमागरम शिर पर बांध देय और तीन चार घंटे के बाद खोल देय एवं दोपहर के बाद दूसरा तैय्यार करके फिर बांधे, इस रोटी के बांधने से मनुष्य के अन्तक सन्निपात की मृत्युकारक व्यथा निस्सन्देह दूर होती है। लेकिन यह बात याद रहै कि यदि रोटी बांधने से होश वाला रोगी न बरदास्त

कर सके अथवा होश रहित रोगी अपना शिर झटके तो रोटी १५ मिनट रख के खोल लेय और एक दफे में फायदा न जान पड़े तो उसी रोटी को ५ वा १० मिनट में फिर सिर पर रक्खें अगर रोटी सूख गई हो तो दूसरी रोटी तैय्यार कर ले किन्तु दश पन्द्रह मिनट से अधिक न रक्खे। अन्तक सन्निपात में गरम जल और मांस का जूस इत्यादि पीने को देय किन्तु ज्वरनाश कर्ता महामृत्युञ्जय मन्त्र का जप और शिवार्च विद्वान् ब्राह्मणों के द्वारा अवश्य करावै क्योंकि अन्तक सन्निपात का आरोग्य होना अति दुष्कर है इसी से वैद्यों ने हार कर यह श्लोक कहा है॥

भिषग्भिरितिनिर्णीतं सन्निपातेंतकाभिधे।
भेषजंजान्हवीनीरं वैद्योगोविन्द एवहि॥

अन्तक सन्निपात में वैद्यों ने यह ठीक निश्चय कर के कहा है कि इस रोग में रोगी की औषधि गङ्गाजल है और वैद्य विश्नु-भगवान् है॥

रुग्दाह सन्निपात की चिकित्सा।

जलधर मलयजनागर सवालकोशीर पर्प्पटैः क्वथितं। यः पिवतिपयः सुशीतं शाम्यतिरुग्दाह-कस्तस्य॥

नागरमोथा, लालचन्दन, सोंठ, सुगन्धवाला, खस और पित्त-पापड़ा इन सब दवाइयों को समान भाग ले अधकचरा करके दो २ तोले की पुड़िया बनाले पूर्वोक्त प्रकार से ३ माशा मिश्री डाल के दोनों समय काढ़ा पिलावै यदि रोगी के अन्तःकर्ण में दाह अधिक हो तो यह काढ़ा न देके निम्नलिखितक्वाथ पिलावे॥

उशीरचन्दनोदोच्य द्राक्षामलकपर्पटैः
शृतंशीतंजलंदद्याद्दाह तृड्ज्वरशांतये॥

सुगन्धवाला, लालचन्दन, खस, मुनक्काबीजरहित सूखा आंवला बीजरहित और पित्तपापड़ा इन का काढ़ा खूब शीतल कर मिश्री मिला के पिलाने से दाह पियास और बुखार शांत होता है॥

धूप; अगर, कचूर सल्लकी, नख तगर नेत्र वाला सफेद चन्दन और राला धूप सबका एक में मिला के किसी पात्र में रख देय और दिन में कई दफे रोगी के मकान के बाहर धूनी देय। अगर रोगी के शरीर में दाह अधिक हो खास कर ऊपर का चमड़ा जला जाता हो तो इस लेप को तैयार करके समस्त शरीर में लेपन करै। बैर के पत्तों को दही में खूब महीन पीस के अथवा कपूर सफेद चन्दन और नीम पत्र सबको दही में पीस लेप करै यदि समस्त शरीर में दाह न हो, सिर्फ हाथ पैर के तलुए में जलन हो तो उसी में लेपन करै और धान के लावा का यूष बनाके उसमें कुछ मिश्री और मासा दो मासा शहद डाल के पिलावै। या साबूदाना गौके दूध में पकाके मिश्री मिला के पिलावै। रुग्दाह ज्वर और पित्तज्वर की चिकित्सा एक समान जानना।

चित्तविभ्रम सन्निपात की चिकित्सा।

इस सन्निपात में बिशेष लक्षण बिहोशी, किसी को न चीन्हना पागल सरीखा आनतान बकना हसना गाना रहता है। गवांर लोग इसी को भूत प्रेत की बाधा समझ सद्वैद्यों के द्वारा उत्तम चिकित्सा न कराके झाड़ फूक में लग रोगी को यमपुरी की यात्रा करा देते हैं। चिकित्सक को चाहिये कि साधारण प्रयोग द्वारा मूर्छा को प्रथम शांति करै लेकिन शिर में किसी प्रकार का बिघ्न न पहुंचने पावे।

पथ्यापर्पटकटुका मृद्वीका दारुजलद भूनिंबाः।
शम्याकपटोलशिवा क्वाथश्चित्तविभ्रमंहन्ति॥

बड़ा हड़का बक्कल, पित्तपापड़ा, कुटकी, मुनक्का; देव दारु नागरमोथा चिरायता अमलतास का गूदा पटोल पत्र (परवल का

पात) और खुष्क आंवला सब को समाग भाग ले २ तोला मात्रा का पूर्वोक्त प्रकार काढ़ा बना के पिलावै यदि रोगी के पतले दस्त आते हों तो अमलतास का गूदा और हड़ काढ़े से निकाल देय ।

चित्तविभ्रम पर अंजन ।

पीपर, कालीमिर्च, शोंठ, हींग, पीलीसरसों, हड़, बहेरा, आंवला, हलदी, कंजा के बीज दुधियावच और सेन्धानोन सबों को एकत्रित कर कूट कपड़छान कर बकराके मूत्र में खरल कर गोली बांध ले और छाया में सुखाले । इस गोली को जल में घोट कर अंजन लगाने से चित्तविभ्रम मृगी भूतोन्माद और शरदी से शिरका दर्द आराम होता है ।

शीतांग सन्निपात की चिकित्सा ।

इस बुखार में विशेष लक्षण शरीर का अत्यंत शीतल हो जाना शरीर का कांपना और भीतर दाह रहता है और इसी को प्रथम शांत करना श्रेयष्कर है ।

मदार के जड़ की छाल, सफेद जीरा त्रिकूटा (शोंठ पीपर मिर्च) भारंगी भटकटैया का पञ्चांग काकड़ासिङ्गी और पुहकर मूल । इन सब दवाइयों को समान भाग ले मात्रा १ तोला से २ तोला तक पूर्वोक्त प्रकार दोनों समय काढ़ा पिलावै । इसके पीने से शीतांग सन्निपात मूर्छा श्वास कफ और वृद्धि इनका नाश होता है ।

शीतांग पर धुरा ।

पित्तपापड़ा, कुलथी पीपल बच कायफर कालाजीरा चिरायता चीता कडुई तूंबी का बीज और हड़ इन दवाइयों को समान भागले कूट कपड़छान करले । इस चूर्ण को देह में मलने से शीतांग सन्निपात का नाश होता है ॥

तन्द्रिक सन्निपात की चिकित्सा॥

इस ज्वर की स्पष्ट परीक्षा यह है कि हर समय आंखों के सामने अंधियारा मालुम हो या आधी पलक ढपी रहैं। इस ज्वर में शिर को तैलों के द्वारा तर रक्खे और निम्नलिखित दवाइयों का अंजन नेत्र में देवै।

सेन्धानिमक, कपूर, मैनसिल, और छोटी पीपर इन चारों चीजों को घोड़े की लार और शहद में महीन घोंट कर नेत्रों में अंजन लगाने से तंद्रिक सन्निपात का नाश होता है।

क्वाथ॥

भांर्गी गुडूची घनकंटकारी हरीतकी पौष्कर नागराणां। कृतःकषायस्त्रिदिनं निपीतो घोरज्वये-त्तान्द्रिकसन्निपातं॥

भारंगी, गुर्च, नागरमोथा, भटकटैया का पञ्चांग, हड़ का बकला पुष्करमूल और सोंठ इनका काढ़ा ३ दिन पीने से घोर तन्द्रिक सन्निपात नाश (आराम) होता है अगर यह काढ़ा अधिक गर्मी करै या प्यास की अधिकता हो तो इस क्वाथ को पिलावै। नीम पर की ताजी गुर्च ४ तोला परवर का डाल पात २ तोला रूसा की पत्ती १ तोला इन तीनों को अधकचरा कर ४ पुड़िया बना ले और पूर्वोक्त प्रकार शाम सबेरे काढ़ा बना के पिलावै।

कण्ठकुब्ज सन्निपात की चिकित्सा॥

इस बुखार में शिर का दर्द कंठ का अवरोध मूर्छा विशेष होना लक्षण हैं इस ज्वर में निम्नलिखित क्वाथ को पिलावै। (शृंग्यादि क्वाथ) कँकड़ासिंगी, नागरमोथा, खुष्क आंवला, देवदारु, बहेड़ा और कुरैआ की छाल दो तोला, भटकटैया का पंचांग, रूसा की पत्ती और हड़का बक्कल एक २ तोला कचूर, चिरायता, भारंगी,

हल्दी कुटकी, पुष्करमूल चीता, कालीमिर्च, चाव, सोंठ, पीपल और कायफल इन सबों को समान भाग ले अधकच्चरा कर डेढ़ २ तोले की पुड़िया बना ले और पूर्वोक्त प्रकार दोनों समय काढ़ा पिलावै और किसी प्रकार का बल कारक यूस भी देता जावै कि जिससे रोगी का बलक्षीण न होने पावै और न कंठ सूखे ।

कर्णक सन्निपात की चिकित्सा ॥

इस ज्वर में विशेष कर के बहिरापन मुख से लारका बहना, कान और गालों में पीड़ा इत्यादि होता है ॥

रास्नाश्वगंधा घनकंटकारी भार्गीवचा पौष्कर रोहिणीनां । क्वाथःकृतःशृंगमयायुतानां पितोज-येत्कर्णकसन्निपातं ॥

कर्णक सन्निपात में यह काढ़ा देने से प्रायः लाभ देखने में आया है, रासन, भटकटैया की जड़, असगंध, नागरमोथा, भारङ्गी दुधियाबच्च, पुहकरमूल, कुटकी, कँकरासिङ्गी, और सूखा आंवला इन सब चीजों को समान भाग ले डेढ़ तोले की मात्रा को पावभर जल में क्वाथ बनाय दो मासा शहद डाल दोनों समय कई दिन पिलाने से निस्सन्देह कर्णक सन्निपात दूर होता है । वैद्य को यह भी उचित है कि बात पित्तादि दोषों को न्यूनाधिक देख के औष-धियों की मात्रा को कम ज्यादा कर देवै अथवा औषध को घटा बढ़ा देय बिलकुल किताब के भरोसे से दवा करना उत्तम नहीं है । कर्णक सन्निपात में कर्णमूल जरुरही होता है उसमें इस लेप को लगाना अच्छा है ॥

कुलथी, कायफल, शोंठ, और सौंफ इन चारों चीजों को समान भाग ले पानी में खूब महीन पीस कुछ गरम कर लेप करै, इस लेप से एक दो दिन में फायदा दृष्टि गोचर न हो तो नीचे लिखे हुए लेप को लगावै । गेरू (लाल मृत्तिका) गोखुरु, शोंठ, कायफल और घुड़बच्च सबों को सिरका में खूब महीन पीस गरम कर लेप करै

यदि इससे भी लाभ न देख पड़े तो जलौका द्वारा उस जगह का खून निकलवाय देय बाद इस लेप को लगावै। पीली सरसों, सेंधानोन, बच धुवां का करखा, सोंठ, हलदी सबों को पानी में पीस लेप करने से सूजन सहित व्रण आराम होता है अगर गले में सूजन हो तो भी इस लेप से आराम होता है। सेंधानोन और छोटी पीपल दोनों को गरम पानी में पीस नास देने से भी फायदा होता है॥

भुग्ननेत्र सन्निपात की चिकित्सा॥

इस ज्वर में दृष्टि का तिरछापन और स्मरण शक्ति का नाश यह विशेष लक्षण है, इसी को प्रथम शोधन करना मुख्य काम है। तिस में दिल दिमाग को शुद्ध करके स्मरणशक्ति को चैतन्य करना और अञ्जन के द्वारा टेढ़ी दृष्टि को ठीक करना चाहिये॥

अवलेहादि।

भूनिम्बमाक्षिकवचासहितंचकुर्याल्लेहंकणोषणरसोनकराजिकाभिः। नेत्राञ्जनञ्चलवणोत्तमपिप्पलीभ्यां नस्यंवचामरिचहिंगुमधूकसारैः॥

चिरायता, शहद, दुधियाबच, छोटी पीपल, काली, मिर्च, लासुन और राई इन सबों को समान भाग ले महीन चूर्ण कर एक एक मासा की पुड़िया बना ले और दिन में दो या तीन दफे शहद में गीला कर के चटावै, सेन्धानोन और छोटी पीपल पानी से खूब महीन घोंट अञ्जन करै अर बच, मिरिच हींग मुलेठी इन सबों को मीठे अनार के रस में महीन घोंट नास देवै॥

रक्तष्ठीवी सन्निपात की चिकित्सा॥

इस ज्वर में थूंक के साथ खून आता है और बमन भी होजाता है यह विशेष लक्षण हैं॥

पित्तपापड़ा, जवासा, रोहित घास इनका काढ़ा बनाय मिश्री मिला के पिलावै अथवा मुलेठी १ तोला कतीरागोंद १ तोला दोनों को महीन चूर्ण कर २० पुड़िया बनावै और दिन में चार दफे अथवा छ दफे अर्थात् दो दो घंटे पर शहद के साथ चटावै। और कंकोल मिर्च को चूर्ण कर के नाश देय इससे मुख से रुधिर का आना बन्द होता है यदि इससे रुधिर न बन्द हो तो यह काढ़ा देय। नागरमोथा, पद्माष, पित्तपापड़ा, सफेदचन्दन, लालचन्दन चमेली की पत्ती, शतावर, मुलेठी, नींव की छाल और सुगन्धवाला इन सबों को समान भाग ले दो तोला की मात्रा का क्वाथ बनाय दो मासा शहद डाल के पिलावै। इसी प्रकार दोनों समय पिलाने से रक्तष्ठीवी सन्निपात आराम होता है। इस्से भी फायदा न देख पड़े तो यह क्वाथ पिलावैं।

महुआ, मुलेठी, फालसा की छाल, लालचन्दन, तेजपात देवदारु और सागवन वृक्ष का फल अथवा छाल, सब समान भाग ले चार तोला की मात्रा डेढ़पाव पानी में पकावै जब एक छँटाक पानी जल जाय मल के छान लेय और दो तोला मिश्री मिला के किसी बोतल में भर देय और दो २ घंटे पर पिलावै। तथा दूध और अनार के फूल के रस की नास देवै॥

प्रलापक सन्निपात की चिकित्सा॥

इस ज्वर में अत्यंत शिर में दर्द, बुद्धि का नाश, और आन तान बकना यह विशेष लक्षण है, यह क्वाथ पिलावैं नागरमोथा, सुगन्धबाला, पित्तपापड़ा, लालचन्दन, धौ की छाल सबों को समान भाग ले पूर्वोक्त प्रकार क्वाथ बना के दोनों समय पिलावैं॥

जिह्वक सन्निपात की चिकित्सा।

इस सन्निपात में विशेष लक्षण-रोगी सन्ताप कर के महा व्याकुल तथा कठिन कंटक युक्त जिह्वा एवं गूंगापन आदि होता है। इसकी चिकित्सा रक्तष्ठीवी के समान करनी चाहिये किन्तु जिह्वा

को ऊपरी चिकित्सा से कोमल करना उचित है। और अभिन्यास सन्निपात की चिकित्सा प्रलापक सन्निपात के समान करना इत्यादि ॥

सन्निपात ज्वर तथा सधारण ज्वर उपद्रवों (तृष्णादि) की चिकित्सा विषम ज्वर एवं जीर्ण ज्वर आदि के लक्षण लिख के परपश्चात् लिखेंगे ॥

अथ विषमज्वर लक्षणम् ।

यःस्यादनियतात्कालाच्छीतोष्णाभ्यांतथैवच ।
वेगतश्चापिविषमोज्वरःसविषमःस्मृतः ॥

जो बुखार सर्दी तथा गरमी करके समय नियम रहित चढ़े और जिसका बेग विषम हो अर्थात् कभी कम और ज्यादा होजाय उसको विषमज्वर कहते हैं तात्पर्य्य यह कि प्रथम ज्वर बात पित्तादि किसी किस्म का आया हो और वह ज्वर कुपथ्यादि के कारण से रसादि में बना रहा हो और ऊपर से मालूम हुआ हो कि ज्वर बिलकुल छुट गया कुछ काल के बाद पुनः ज्वर आजाय तो उसे बिषम कहते हैं। इस ज्वर में एक प्रकार का खफीफ बुखार शरीर में बना रहता है किन्तु वह मालुम नहीं होता ऊपरी बिकार से वह ज्वर तेज होजाता है, इस ज्वर में पित्त प्रधान है, लेकिन इस का कोई समय नहीं है जभी आजाय और यह ऐसा दुष्कर ज्वर है कि लोगों को बरसों नहीं छोड़ता यदि उत्तम औषध मिले तो एक ही दिन में छुट भी जाता है। विषमज्वर का पांच भेद है जैसे ।

सन्ततःसततोऽन्येद्युस्तृतीयकचतुर्थिकौ ॥

सन्ततज्वर, सततज्वर, अन्येद्युज्वर, तृतीयकज्वर और चातुर्थिकज्वर इन सबों के लक्षण नीचे प्रकाश करते हैं ॥

सप्ताहंवादशाहंवाद्वादशाहमथापिवा ।
सन्तत्यायोऽविसर्गीस्यात् सन्ततःसनिगद्यते ॥

अहोरात्रेसततको द्वौकालावनुवर्तते ।
अन्येद्युष्कस्त्वहोरात्रादेककालंप्रवर्तते ॥
तृतीयकस्तृतीयेऽन्हि चतुर्थेऽन्हिचतुर्थकः ।

सन्ततज्वर—उसे कहते हैं जो सात दिन किम्बा दश दिन या बारह दिन तक एक समान ज्वर बना रह के उतरै सात दिन से वात प्रधान ज्वर, दश दिन से पित्त प्रधान ज्वर और बारह दिन से कफ प्रधान ज्वर जानना चाहिये ॥

सततज्वर-एक दिन रात भर में दो वक्त चढ़ता और उतरता है ॥

अन्यद्युज्वर—एक दिन रात भर में एक ही बार चढ़ता और उतरता है ॥

तृतीयकज्वर—उसे कहते हैं जो तीसरे दिन ज्वर चढ़े अर्थात् जिस दिन ज्वर उतर गया हो उसके तीसरे दिन फिर चढ़े अर्थात् एक दिन बीच में खाली दे के और इसी ज्वर को कोई अंतरिया और कोई तिजारी कहते हैं ॥

चातुर्थिकज्वर—उसे कहते हैं जो बुखारदो दिन बीच में छोड़ के चौथे दिन आवैं जिसे लोक में चौथिया कहते हैं ॥

तृतीयकज्वर का भेद ।

कफपित्तत्त्रिकंग्राही पृष्ठाद्वातकफात्मकं ।
वातपित्ताच्छिरोग्राही त्रिविधःस्यात्तृतीयकः॥

तिजारी बुखार अगर प्रथम कमर के पिछाड़ी जहां तीन हाड़ है उसमें दर्द हो के अथवा उसे जकड़ के चढ़े तो कफ पित्त से जानना, यदि पीठ में दर्द वगैरह हो के उष्ण शीतल हो के चढ़े तो बात कफ से और जो प्रथम शिर में दर्द वगैरह उत्पन्न करके चढ़े

उसे वात पित्त से जानना चाहिये, जिस ज्वर में जिस दोष का अधिक कोप देखे उसी के अनुसार चिकित्सा करे।

विषमज्वर में जाड़ा और गरमी मालुम होती है उसका कारण दिखलाते हैं। जो विषमज्वर में वायु कफ के साथ मिल के जब रगों में बहती है तब ज्वर के प्रारम्भ में जाड़ा मालुम होता है और वाद उसके जब वायु कफ से अलग हो जाती है अन्त में पित्त दाह पैदा करता है यही कारण है जो जाड़ा से ज्वर आने के अन्त में पियास अधिक लगती है। उसी तरह जब वायु पित्त के साथ रगों में गमन करता है तब ज्वर के आरम्भ में दाह और शांत होने के बाद यानी अन्त में श्लेष्मा अपने स्वभावज गुण से शीत उत्पन्न करता है और जाड़ा मालुम होता है। यह दोनों दाहादिक और शीतादिक ज्वर संसर्गी हैं अर्थात् द्विदोषज हैं, इन में शीत पूर्वक सुख साध्य और दाह पूर्वक कष्ट साध्य है॥

चातुर्थिकज्वर का भेद।

चातुर्थकोदर्शयति प्रभावंद्विविधज्वरः।
जंघाभ्यांश्लैष्मिकः पूर्वंशिरसोनिलसम्भवः॥
मध्यकायन्तुगृह्णातिपूर्वंयस्तुसपित्तजः।
विषमज्वरएवान्यश्चातुर्थिकविपर्ययः॥
समध्ये ज्वरयत्यहिअद्यावन्तेविमुञ्चति॥

चातुर्थिक ज्वर दो प्रकार का प्रभाव देखाता है। जो चातुर्थिक कफ जन्य है सो पहिले पिंडरिन से चढ़ता है और जो वातोत्पन्न हैं सो शिर से शुरू होता है। जो चातुर्थिक में पित्त प्रधान है वह मध्य शरीर अर्थात् पेट से चढ़ता है। एक प्रकार का विषमज्वर और है जो चातुर्थिक ज्वर से विपरीत याने उलटा रूप से आता है यह कि बीच से दो दिन बराबर रहता है और आदि का एक दिन अन्त का एक दिन छोड़ देता है। एक प्रकार का विषमज्वर और कहते हैं जिसे किसी २ ग्रन्थ में नरसिंह ज्वर नाम लिखा है॥

विदग्धेऽन्नरसेदेहे श्लेष्मपित्तव्यवस्थिते ।
तेनार्द्धं शीतलं देहमर्द्धमुष्णंप्रजायते ॥
कायदुष्टंयदापित्तंश्लेष्माचान्तेव्यवस्थित: ।
तेनोष्णत्वंशरीरस्य शीतत्वंहस्तपादयो: ॥
कायेश्लेष्मायदादुष्ट: पित्तंचान्ते व्यवस्थितम्।
शीतत्वं तेन गात्रंस्यादुष्णत्वंहस्तपादयो: ॥

शरीर में जब भोजन किया हुआ आहार का रस न पचने से (विदग्ध) जल गया तब कफ और पित्त दुष्ट हो के कोप करते हैं उस अवस्था के ज्वर में आधी शरीर गरम रहती है ॥

जब पेट में पित्त दूषित हो के प्राप्त हो और हाथ पांव में कफ रहे उससे जो ज्वर उत्पन्न हो उसमें पित्त से शिर से पेट पर्य्यन्त गरम रहता है और कफ से हाथ पांव शीतल रहते हैं। इसी प्रकार जब कोष्ट में कफ दूषित हो और (अन्त) हाथ पांव में पित्त, तब शिर से पेट तक शीतल और हाथ पांव गरम रहते हैं।

प्रलेपक ज्वर का लक्षण ।

प्रलिंपन्निवगात्राणिघर्मेणगौरवेणच ।
मन्दज्वरावलेपीचसशीत:स्यात्प्रलेपक: ॥

जिस ज्वर में पसीना और शरीर के भारीपन के वजे से शरीर के ऊपर का चमड़ा लिपा सा अर्थात् ओदा मालूम हो और ज्वर बहुत तेज न हो एवं जाड़ा मालूम हो उसे प्रलेपक ज्वर कहते हैं। सुश्रुत जी कहते हैं कि (ज्वराश्चविषमाः सर्वेप्रायः क्लेशायशोषिणाम्) अक्सर करके जितने विषमज्वर हैं सब क्लेश सहनेवाले और धातुक्षीण वाले को होते हैं पाठकगण को यह भी याद रखना चाहिये कि ज्वर बिना किसी धातु से अपना पूरा सम्बन्ध किये

अधिक दिवस पर्य्यन्त शरीर में रह नहीं सक्ता इसलिये जब देखै कि उत्तम औषध के भी योग से बुखार नहीं छोड़ता तो निम्नलिखित लक्षणों में मिला ले कि यह ज्वर किस धातु में प्राप्त है उस से अलग कर देने ही से ज्वर जाता रहैगा। सो सात धातु हैं रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि (हाड़) मज्जा, और शुक्र ॥

सप्तधातुगत ज्वर का लक्षण ॥

रसगतज्वर--शरीर में भारीपन, जी का मचलाना शरीर में आलस्य अरुचि और उदासीनता यह लक्षण धातु गत ज्वर में होते हैं ॥

मांसगतज्वर--में विशेष लक्षण, पैर में पेठन, पियास, पेशाब और दस्तों का अधिक होना, भीतर दाह और बेचैनी होती है ॥

मेदगतज्वर--में अतिशय पसीना, पियास, बिहोशी, आनतान बकना, बमन, शरीर में दुर्गन्धि, अरुचि, ग्लानि और बेचैनी आदि लक्षण होते हैं ॥

रक्तगतज्वर--का लक्षण मुह से रक्त थूंकना, दाह विहोशी, बमन, घुमरी, प्रलाप, शरीर में फुंसियां या लाल दाग पढ़ जाना और पियास वगैरह होता है ॥

अस्थिगतज्वर--में हड़फूटन, कल न पड़ना, हाथ पांव का पटकना, बमन, दस्त और स्वास का फूलना यह लक्षण होते हैं ॥

मज्जागतज्वर--इसमें आंख के सामने अंधियारा मालूम होना महाश्वास, खांसी, जाड़ा लगना बमन, अन्तर्दाह और मर्मस्थान में दर्द यह सब महा असाध्य लक्षण होते हैं ॥

शुक्रगतज्वर--(मरणंप्राप्नुयात्तत्र शुक्रस्थानगतेज्वरे) शुक्रगतज्वर होने से मनुष्य निस्सन्देह मर जाता है। इसके विशेष लक्षण अत्यन्त प्रसंगेच्छा और अकस्मात वीर्यपात से होता है ॥

उक्त सर्व धातुगत ज्वरों की चिकित्सा मुख्य यह है कि बढ़े हुये उपद्रवों को दमन करना तथा क्षीण धातुओं को बढ़ा के सम

करना और बढ़े हुयें को घटा के सम करना जिसकी विधि कुछ आगे लिखेंगे भी अब जीर्णज्वर के लक्षण कहते हैं ॥

जीर्ण ज्वर ॥

योद्वादशेभ्योदिवसेभ्यऊर्ध्वं दोषत्रभ्येयेोद्वि-गुणेभ्यऊर्ध्वं । नृणांतनौतिष्ठति मन्दवेगोभिष-ग्भिरुक्तो ज्वरएषजीर्णः ॥

जो बुखार बारह दिन के ऊपर निरन्तर बना रहै विशेष करके बात ज्वर चौदह दिन के उपरांत पित्तज्वर बीस दिन के उपरांत और कफ ज्वर चौबिस दिन के ऊपर बना रहै एवं बुखार बहुत तेज न हो किन्तु मन्द वेग से बना रहै तो उसको जीर्ण ज्वर कहते हैं ॥

जीर्ण ज्वर के भेद से एक ज्वर का लक्षण और कहते हैं ।

वातबलासक ज्वर ।

नित्यंमन्दज्वरोरूक्षः शूनःकृच्छ्रेणसिद्ध्यति ।
स्तब्धांग.श्लेष्मभूयिष्ठो नरोवातबलासको ॥

धीमा ज्वर निरन्तर शरीर में बना रहै, शरीर रूखी, हाथ पैर या समस्त शरीर में कुछ सूजन, तमाम बदन में दर्द अथवा शरीर के नसें अकड़ी सी मालूम हो कफ की अधिकता यह लक्षण होते हैं और ऐसे रोगी बहुत मुश्किल से आराम होते हैं ।

अथ आगंतुक ज्वर के लक्षण ॥

अभिघाताभिषंगाभ्यामभिचाराभिशापतः।
आगंतुर्जायतेदोषैर्यथास्वंतं विभावयेत् ॥

आगंतुक ज्वर उसे कहते हैं जो बुखार मिथ्याहार मिथ्या विहार द्वारा न हो के अकस्मात् उत्पन्न हो जैसे अभिघात चोट

लगने से (अभिषंग) भूतादिकों के लगने से* (अभिचार) मंत्र यंत्र तंत्र के योग से इसमें भी वही बात है अभिशाप अर्थात् गुरू ब्राह्मणादिकों के शाप से यथा दोष जो ज्वर होता है उसे आगन्तुक ज्वर कहते हैं। भूत बाधा से उत्पन्नज्वर के लक्षण नीचे लिखते हैं।

भूताभिषंगा दुद्वेगा हास्यरोदनकंपने।
केचिद्भूताभिषंगोत्थं ब्रुवंतिविषमज्वरं॥

अब भूताभिषिंग ज्वरके लक्षण दिखाते हैं-जैसे चित्तका उच्चाट होना, हँसना (रोना) और शरीर का कांपना और कितने आचार्य्य विषम ज्वर को भी भूत बाधा से उत्पन्न मानते हैं। मानने का

---

* असल में भूत प्रेत कोई वस्तु नहीं है केवल भय है; किसी कारण से क्यों न हो हृदय कंपित होने ही से (हास्य रोदन कंपनं) इत्यादि उपद्रव उठ खड़े होते हैं। उसी को अज्ञानी लोग भूत प्रेत की बाधा मानने लगते हैं और इसी वजे से लोगों का विश्वास और भी जम जाता है कि इस प्रकार के रोग ऊपरी टोटका आदि उपायों से छुट भी जाता है यद्यपि यह सब वैद्य विद्या से सम्बन्ध रखते हैं जैसे (वातोन्मादे त्रासनं) जैसे वायु के उन्माद में (पागल को भयानक तसवीरें अथवा रूपों को दिखलाना, धमकाना (यह भी हो सक्ता है जैसे रोगी के सामने दीपक जला के माला पुष्प धूनी आदि दे के डांटना कि बतला तू कौन है इसे छोड़ दे नहीं तुझको आग में जला देंगे) बिष रहित सर्प से कटवाने का भय दिखाना इत्यादि उपायों से (विषस्यविषमौषधं) जैसे वायु बिगड़ जाता है वैसा ही डर दिखाने से वायु शुद्ध होता है किन्तु अज्ञानात् लोगों को विश्वास है कि अमुक आदमी झाड़ने फुकाने से आराम हुआ है। इस लेख से हमें लोग नास्तिक न समझें क्योंकि यह हमारा कथन परीक्षित है, हमने कितने रोगियों को आरोग्य किया है, उनमें से एक दो रोगियों का हाल इस स्थल में लिखे भी देते हैं।

कारण यह जान पड़ता है कि विषम ज्वर में खास कर तिजारी चौथिया आदि ज्वर यंत्र मन्त्र टोटका आदि प्रयोग से भी छुट जाता है। इन सब लेखों से जाना जाता है कि पूर्व्व भूताचार्य्य पदार्थ तत्वज्ञान (किमस्ट्रि सायन्स आदि) में अभ्यास कम रखते थे अथवा उसे वाहियात समझते थे तभी तो प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सिद्ध बातों को भूत बाधा मान लेते हैं। यन्त्र या कोई जड़ी बूटी हाथ की कलाई या बाहु गले में बांधना ठीक रक्त के साथ उसका सम्बन्ध कराना है क्योंकि रोग पुराना होने से रुधिर के साथ उनका पूरा सम्बन्ध हो जाता है इसी से जल्द आराम नहीं होते आज कल के विज्ञान दर्शियों ने इसी लिये बिजुली की चीजें निकाली है कि जिसके पहरने अथवा बांधने से रुधिर रोग अपना सम्बन्ध छोड़ के विद्युत के साथ कर लेता है।

जानसेन गञ्ज में सूर्य्यदीन ठठेरी का पुत्र जिसकी अवस्था १० वर्ष की थी दो बजे रात को बोतलों के गिरने की आवाज़ से चौंक उठा पागल हो गया, तीसरे दिन दोपहर को सूर्य्यदीन हमको बुला ले गया, वहां हम जा के यह देखा कि चन्द झाड़ने फूकनेवाले डफाली लोग डफला बजा रहे हैं और वह लड़का अलग एक चटाई पर सफेद नई धोती और गले में पुष्पों का गजरा पहने बैठा है कहता है कि हम फलाने दरगाह के सईद है, हमारे साथ बहुत पलटनें हैं देखो दो आदमी हमारा ताख पर बैठा है। हमने सब झाड़नेवालों को हटा दिया और लड़के को डाट के कहा कि लाओ हाथ तुम्हारी नाड़ी देखें उसने हाथ दे दिया, उस समय उसकी नाड़ी की गति अति बेगवान थी जैसे तीव्र ज्वर वाले की होती है हम उसे ब्रोमाईड आव पुटासियम् पानी में घोल के पिला दिया और सबों को वहां से हटा दिया केवल दो आदमी नियत कर दिया कि जब तक यह सो न जाय हाथ पैर धीरे धीरे दबाते रहो और यह उठ के भागने न पावै, वह लड़का आध घंटे के बाद सो गया और ५ बजे साम को जब वह सो के उठा तो हम उसे आरोग्य पाया।

ज्वर के दश उपद्रव ।

श्वासोमूर्च्छाऽरुचिश्छर्दि स्तृष्णातीसारविड्ग्रहाः ।
हिक्काकासांगदाहश्च ज्वरस्योपद्रवादश ॥

१ (स्वास) अधिक हांफी या गले में कफ का घुरघुराहट अथवा सांस कष्ट से लिया जाय २ (मूर्छा) बिहोसी या अधिक सुस्ती ३ (अरुचि) खाना पीना अच्छा न मालूम हो अर्थात् किसी वस्तु का जायका यथार्थ बोध न हो ४ (छर्दि) वमन यानी कै होना अथवा जी मचलाना या मुख से पंछा छूटना ५ (तृष्णा) अधिक पियास अर्थात् पानी से शांति न हो ६ (अतीसार) दस्तपतले होना ७ (विड्ग्रह) या दस्त बिलकुल न होना ॥

सन् ८८ में हम श्रीमान् राजा माडा के छोटी रानी जी की चिकित्सा कर रहे थे, एक दिन की बात है कि राजा साहब के एक भयवाद जिनका नाम याद नही है पर्व्वतपर तीतल चराने गये और वहीं डर कर पागल होगये राजा के सिपाह छुटे उन्हें ढूंढ़ के पकड़ लाये और राजा साहब के मुसाहब पं० भगवान दत्त के दालान में बैठाया, चार पांच आदमी उन्हें थामे थे तौ भी उसका वाहियात बकना, लोगों पर थूंकना, दांत, काटना, आदि बन्द नही था, राजा साहब की आज्ञानुसार हम और राजधानी के डाकृर दोनों ने जा के उन्हें देखा और दोनों जने राजा साहब से जा के बयान किया कि डर गये हैं और उसीसे इन के शिर पर गरमी चढ़ गई है, राजा साहब ने कहा कि पंडित जी आप नहीं जानते इनको एक दो बार पहले इसी तरह हो चुका है और बड़े २ झाड़ने वाले आये हैं तब आराम हुये हैं, यह एक दफे पहाड़ पर लाल फंदाते थे एक लाल इन के पिंजड़े में फंदा और थोड़ी देर के बाद मांस का लोथड़ा सा बन गया यह देख पिंजरा फेंक भगे और बीमार होगये और बड़ी मुशकिलों से आराम हुए। राजा साहब से हम ने कहा कि हमारे पास एक पलीता है यदि आप कहै तो उसे सुंघा के भूत

ज्वर के साध्य लक्षण॥

बलवत्स्वल्पदोषेषुज्वरःसाध्योऽनुपद्रव।

जो मनुष्य बलवान हैं और जिनके बातादि दोष स्वल्प हैं अर्थात् दोष बहुत बढ़े नहीं है (उपद्रव से दोष बढ़े हुये जान पड़ते हैं) और जो ज्वर के दश उपद्रव ऊपर लिखे गये हैं उनमें से श्वासादि कठिन उपद्रव न हो तो साध्य जानना। सुख साध्य उसे कहते हैं जो शरीर के बाहरी भीतरी कुछ भी उपद्रव न हो सिर्फ ज्वर मात्र हो वह सुख साध्य हैं। सुख साध्य ज्वर स्वल्प ही चिकित्सा से आराम होजाता है॥

जिस बुखार में भीतर दाह और पियास जादे हो, कुछ आन तान बकता हो, हाफी, घुमरी, शरीर में दर्द पेट में शूल, पसीना न

उतार देय, राजा साहब ने कहा अवश्य आराम करना चाहिये। हमने चूना और नौसादर को मिला के एक पोटरी बनाया और रोगी के पास जा के बैठ गये और दो आदमियों से कहा कि तुम लोग थांमे रहो और सब लोग छोड़ दो हमने एक हाथ से रोगीकी चोटी थांम के पूछा कि सच कह तू कौन है छोड़ के चला जा नहीं तो अभी महावज्र पलीता सुंघाता हूं तू जल जायगा इतना कह के नाक में पोटरी लगा दी (किसी की नाक है जो अमोनियां की झार एक मिनट भी बरदास्त कर सकै) बस फिर क्या बहादुर बोल उठे कि छोड़ दो मैं जाता हूं हम ने भी जोर से ताली पीट कहा चल दे, रोगी चैतन्य हो गया उसी समय वह दूध पिया और घर में जा के भोजन किया इस क्रिया से लोग बड़े आश्चर्यित हुये किन्तु हम ने सब लोगों को वह पलीता बता दिया और शिक्षा दिया कि प्रेत की बाधा बिलकुल असत्य है केवल हृदय में भय का समा जाना ही भूत प्रेत की बाधा है, इसी तरह हमने सैकड़ो मनुष्यों को आरोग्य किया है और सबों का हाल रजष्टर में दर्ज है किन्तु खाना भाव से नहीं लिखा॥

आता हो, न दस्त हो और न हवा छूटै उसे कष्ट साध्य ज्वर जानना इसी को वैद्य लोग अन्तरवेगी ज्वर कहते हैं॥

अथ ज्वरस्य असाध्य लक्षणं।

ज्वरःक्षीणस्यशूनस्य गम्भीरोदीर्घरात्रिकः।
असाध्योबलवान्यश्चकेशसीमन्तकृज्ज्वरः॥

अब असाध्य ज्वर का लक्षण लिखते हैं। जो मनुष्य बुखार में अति दुबला हो गया हो, सम्पूर्ण शरीर अथवा हाथ पैरों में सूजन आ गई हो, ज्वर पीछा न छोड़ता हो, शिर में चांद की जगह की बाल उड़ गये हों और बुखार के दुष्कर लक्षण मिलते हैं तो असाध्य जानना ऊपर के श्लोक में जो गम्भीर शब्द आया है वह एक प्रकार का ज्वर होता है जिसे वैद्यक में गंभीर ज्वर कहते हैं, उसके लक्षण यह हैं जैसे अन्तर्दाह, पियास, अतिशय बातदोष से मल का विबन्ध तथा कास श्वास का प्रादुर्भाव हो उसे गंभीर कहते हैं इसे भी असाध्य ही समझना और भी ज्वरों के असाध्य लक्षण लिखते हैं॥

असाध्य लक्षणानि।

हेतुभिर्बहुभिर्जातोबलिभिर्बहुलक्षणः।
ज्वरःप्राणान्तकृद्यश्च शीघ्रमिन्द्रियनाशनम्॥
योहृष्टरोमारक्ताक्षो हृदिसंघातशूलवान्।
वक्रेणचैवोच्छ्वसितित ज्वरो हंति मानवं॥
हिक्काश्वासतृषायुक्तं मूढं विभ्रांतलोचनम्।
सन्ततोच्छ्वासिनंक्षीणं नरं क्षपयतिज्वरः॥
आरम्भाद्विषमोयस्तु यस्यवादीर्घरात्रिकः।
क्षीणस्यचातिरूक्षस्य गम्भीरोयस्यहन्तितं॥

जो ज्वर बलवान हो और अनेक कारणों करके उत्पन्न भया हो अपने मर्य्यादा के भीतर हो आंख कान आदि इन्द्रियों की शक्ति को नाश कर दिया हो वह ज्वर निस्सन्देह प्राण नाशक होता है ।

जिस ज्वर में रोगी के बारम्बार रोम खड़े होते हों, होंठ नेत्र सुख, छाती में दर्द, नाशिका बन्द मुख से श्वास लेता हो तो जानना कि वह ज्वर रोगी को जरूर मारेगा ।

जो ज्वर रोगी, हुचकी, श्वास और पियास करके अतिशय दुखित हो, संज्ञा रहित अर्थात् जिस के होस हवास दुरुस्त न हों जिसके नेत्र बैठ गये हों या किसी को चीन्हता न हो और मुख से श्वास लेता हो तथा अतिक्षीण हो गया हो उसको समझना कि अब यह यमलोक की यात्रा करैगा ।

जो ज्वर आरम्भ काल ही से विषम हो गया हो और असाध्य के चिन्ह दृष्टिगोचर होते हों ऐसा गम्भीर ज्वर दुर्बल मनुष्य को नहीं छोड़ता अर्थात् मारता ही है । क्षीणपाणि महाराज के मत से एक प्रकार का ज्वर मंथर नामक होता है उसका लक्षण श्लोक न लिख के सिर्फ भाषा में नीचे प्रकाश करते हैं ।

मन्थर ज्वरस्य लक्षणम् ।

प्रथम ज्वर उत्पन्न हो के तब सब निम्नलिखित लक्षण आ मिलें अथवा अतीसारादि अन्य रोग में मिले अवश्य असाध्य जानना जिस रोग में ज्वर घुमरी विहोसी अतीसार, पियास निद्रा का आना मुख लाल तालू और जीभ सूखे तथा मुख पाक और कण्ठ में सरसो सरीखे फुंसियां हों इत्यादि लक्षण युक्त रोग को मंथर कहते हैं इसका कारण विशेष कर तरुण ज्वर में घी खाने तथा पसीना रोकने से होता है हमारे हारीत मुनि कुछ और ही कहते हैं । जिस मनुष्य के ज्वर, टकटका, दांत और ओंठों में श्यामता, नाक, जीभ, मुख और कण्ठ में ललामी नेत्र बकरे के समान निकल आये हों ऐसे रोगी को जो सात दिन में मोतियों की माला गले में न पहिरावै तो २१ दिन के भीतर उसके सम्पूर्ण अंग में सरसों के समान छाले पड़ जांयगे और मुश्किल से आराम होगा ।

विषमज्वर की चिकित्सा।

वह विषमज्वर जो दिवारात्रि में केवल एक बार आता हो या दूसरे दिन, तीसरे दिन अथवा चौथिया आदि हो इसमें बहुत परहेज कराने की जरूरत नहीं है, इतना अवश्य ध्यान रहै कि यदि कोष्ठबद्ध हो तो मुलायम रेचन दे देवे या ज्वर किसी औषध से न छूटै तो अन्त स्नेहादि क्रिया के बाद देश काल के अनुसार वमन विरेचन करा देने ही से ज्वर निर्मूल हो जाता है।

अब जाड़ा देके जो विषमज्वर आता है जिसे शीत पूर्व ज्वर कहते हैं उसकी उत्तम २ परीक्षित औषधियां जिनसे असंख्य रोगी आराम हुए हैं नीचे लिखते हैं।

शीतपूर्व ज्वर पर काढ़ा।

भटकटैया (कटेरि वा कंटकारि) धनियां, शोंठ, निम्बवृक्ष पर के गुरच (गिलोय) मोथा, पद्माष, लालचन्दन, चिरायता, पटोल, (परवर का पत्र) रूसा, पुहकरमूल, कुटकी, इन्द्रजव, नीम्ब की अतर छाल, भारङ्गी, पित्तपापड़ा, इन सब दवाइयों को बराबर वजन ले अधकचरा कर पाव भर जल में रात को भिजा देय सबेरे जोस देवे जब एक छँटाक पानी रह जाय शीतल कर मल छान के पीजाय, इसी प्रकार सबेरे भिजावै साम को जोस देके पिये यह पूर्ण मात्रा का बयान है, उमर कम हो अथवा रोगी कमजोर हो या रोगी के मिजाज में गरमी अधिक हो या गरमी अधिक पड़ती हो, मात्रा कम कर देय। पथ्य—दूध भात अथवा मूंग की दाल पुराने चावल का भात, गेहूं की रोटी, लौकी की तरकारी आदि। इस प्रकार दोनों समय पिलाने से कैसाहू पुराना विषमज्वर हो छुट जाता है, ऐसा कितनों बार अजमाया गया है। अगर रोगी के पेट में (दाह) जलन हो शिर में घुमरी आदि बातपित्त के उपद्रव हों तो इस अर्क को पिलावै।

विषमज्वर पर अर्क।

यह अर्क शीतपूर्वज्वर और उष्णपूर्वज्वर दोनों को आराम करता है तथा अन्तर दाह, घुमरी, जी मचलाना, हाथ पैर के जलन आदि को भी शांति करता है॥

धनियां, गांजवा के फूल, बर्गगांजवा (गांजवा के पत्ते) लालचन्दन, सफेदचन्दन, कासनी, खीरा ककड़ी का बीज, बर्ग बनप्सा (बर्ग पत्ते को कहते हैं) गुलनीलोफर, गुलाब के फूल यह एक २ छँटाक, लौकी (घीया) ३ पाव, पेठा (श्वेत कूष्मांड) २ पाव, कपूर २ तोला घीया और पेठे को छोड़ और सब दवाइयों को ३० सेर पानी में रात को भिजा दे सबेरे घीया और पेठे को टुकड़े २ कर सब को डेग भभके में भर १५ सेर अर्क खींच ले। साम सबेरे दोपहर आध २ पाव अर्क उस में जरा सा मिश्री डालके पिये। थोड़े ही दिनों के पीने से बिषम ज्वर छुट जाता है पथ्य वही जो ऊपर लिख आये हैं यदि पन्द्रह दिन के पीने से ज्वर न छुटै तो इस अर्क को पिलाके दो चार दिन फिर ऊपर लिखे हुये काढ़े को पिलाये। ज्वर आते २ रोगी निर्बल पड़ गया हो और ज्वर भी न छूटता हो तो ज्वर छूटने की दवा देता जावै और जिससे रोगी का बल न घटै उपाय करै। अगर गर्म मिजाज वाला हो तो यह अर्क पिलावै।

अर्क गाजर।

गाजर हड्डी और छिलका दूर किया हुआ १० सेर किसमिस २ सेर दोनों को एक डेग में २५ सेर पानी डाल डेग का मुह बांध के पकावै जिससे धुंआ न निकलने पावै बाद चार घंटे के डेग को उतार शीतल कर लेय और नीचे लिखी हुई दवाइयों को कुचल के उसी में डाल और ५ सेर गौ का दूध डाल १५ सेर अर्क खींच लेवे। दवा यह है। दालचिनी, गुलाब का फूल, नागरमोथा बिजौरे का छिलका, चोबचिनी, बहिमन सफेद यह सब चार २ तोला सफेदचन्दन दो तोला। इस अर्क के पीने से मन प्रसन्न जोड़ों में ताकत

धातु पुष्ट और बलवान होता है अगर मिजाज सर्द अर्थात् बलगमी हो तो इस चूर्ण को दोनों समय शहद के साथ चटावै।

बंशलोचन ४ तोला छोटी लायची २ तोला सत्तगिलोय २ तोला वहिमन सफेद १ तोला छोटी पीपरशुद्ध ६ मासा दक्षिणी तज ६ मासा अकरकरहा ३ मासा रूमींमस्तगी ३ मासा सब को महीन चूर्ण कर डेढ़ २ मासे की पुड़िया बनाय ले शहदके साथ चाटै।

विषमज्वरे ज्वराङ्कुशो रसः।

तांम्रतोद्विगुणंतालं मर्द्दयेत्सुंषवोरसैः।
प्रपुटेत्भूधरेशीते बज्रोक्षीरेणमर्द्दयेत्॥
प्रपुटेभूधरेपश्चात्पंचगुंजामितंभजेत्।
आर्द्रकस्यरसेनैव सर्वज्वरनिकृंतनः॥
एकाहिकंद्व्याहिकंच त्र्याहिकंचतुराहिकम्॥
विषमंचापिशीताढ्यंज्वरंहंतिज्वरांकुशः॥

शुद्ध तामा से दूना शुद्ध हरताल लेके करैले के रस में घोट के भूधर यन्त्र में आंच देवै (भूधर यन्त्र की क्रिया रस प्रकरण में लिखैंगे और वैद्य लोग प्रायः जानते भी हैं शीतल होने पर निकाल के सेहुंड़ के दूध में घोट के फिर उसी प्रकार भूधर यंत्र की आंच देय बाद निकाल महीन चूर्णकर शीशी में रखदेय। इस ज्वरांकुशकी मात्रा एक रत्ती से पांच रत्ती तक है। दोनों समय अदरख के रस के साथ खाने से एकाहिक अँतिरिया तिजारी और चौथिया ज्वर आराम होता है।

महाज्वरांकुशोरसः विषमज्वरे।

शुद्धसूतोविषंगंधः प्रत्येकंशाणसंमितः।
धूर्तवोजंत्रिशाणंस्यात्सर्वेभ्योद्विगुणाभवेत्॥

हेमाह्वकारयेद्देषां सूक्ष्मचूर्णंप्रयत्नत :।
देयंजंबीरमज्जाभिश्चूर्ण गुंजाद्वयोन्मितम् ॥
आर्द्रकस्वरसैर्वापि ज्वरंहंतित्रिदोषजं ।
एकाहिकं द्व्याहिकंवा त्र्याहिकंवाचतुर्थकम ॥
विषमंचज्वरं हन्यादिख्यातोयं ज्वरांकुशः ।

शुद्ध पारा, शुद्ध सींगिया, शुद्ध आंवलासार गन्धक इन तीनों चीजों को तीन २ मासे लेय, शुद्ध धतूरे का बीज ६ मासा, चूक १८ मासा सबों को खूब महीन घोट के दो २ रत्ती की गोली बनाय लेय अगर चूक सूखा हो तो जम्बीरी नींबू के रस में घोट के गोली बना लेय यह पूर्णमात्रा है जिसकी जैसी अवस्था हो मात्रा बना ले यह महा ज्वरांकुश रस अदरख के स्वरस अथवा जंबीरी नींबू के रस के साथ दोनों समय खिलाने से सन्निपात ज्वर आदि बिषम ज्वर को नाश करता है । इस बटी के द्वारा जिस तरह हमने रोगियों को आरोग्य किया है उसे कहते हैं पूर्वोक्त दवाइयों को घोट पीली सरसों के समान गोली बनाय लेय ताकतवर के लिये दो गोली और कमजोर के लिये एक गोली की मात्रा समझना जिस दिन ज्वर आने वाला हो दो २ घंटे पर गोली खिलाना आरम्भ करै यदि ज्वर न आवे तो सन्ध्या तक बराबर दो २ घंटे पर गोली खिलाता जावै अगर बुखार आ जाय तो गोली खिलाना बन्द कर देय और दूसरी बारी के दिन फिर उसी प्रकार गोली खिलाना आरम्भ करै । निसन्देह एक दो पारी में ज्वर छुट जाता है इस प्रकार से हजारों बिमार अच्छे हुऐ हैं । यह गोली जाड़ा से बुखार आने वाले को फायदा करती है । खाने को दूध भात मिश्री या साबूदाना दूध मिश्री । अगर ज्वर की बारी १२ बजे दिन के भीतर हो तो सबेरे कुछ खाने को न देके दूसरी समय देवे पियास अधिक मालूम हो अथवा पेट में दाह हो तो जरा सी मिश्री खाके पानी पी लेय ॥

कूइनाईन।

हमने आरोग्यदर्पण के दूसरे खण्ड में अनेक द्वीपान्तरीय चिकित्सकों के मत द्वारा कुईनाईन का भली भांति खण्डन किया है और यथार्थ में कुइनाईन से बहुत हानि पहुंचती है। ज्वर को छुटा देता है यह परीक्षित है किन्तु उसी के साथ ही लोगों को अन्धा लङ्गड़ा लूला नपुंसक तक बना देता है इसमें एक कारण और भी है कि डाक्टर लोग एतद्देशीय वैद्य विद्या के न जानने से यहां के मनुष्यों के प्रकृति से अपरिचित रहते हैं सर्व साधारण को ज्वर रोग में कूइनाईन और धड़ाधड़ चिरायते का अर्क पिलाना सुरू कर देते हैं। बुखार तो जरूर छुट जाता है लेकिन कलेजे पर ऐसी गरमी जम जाती है कि बरसों नही हटती लेकिन जिस प्रकार हमने कूईनाईन के द्वारा-असाध्य लोगों का शीतपूर्व ज्वर छुटाया है पाठक गणों के उपकारार्थ प्रकाश करते हैं॥

ज्वर आने के दो घंटे पहले कूईनाईन को इस तरह देने से ज्वर छुट जाता है। कूईनाईन २ रत्ती, टार्टारिक एसिड (इमली का सत्त) १० रत्ती मिश्री २ तोला। पहले मिश्री को पत्थल की कूड़ी आधपाव पानी में मिश्री का सरबत बनाय उसी में कूईनाईन और इमिली के सत्त को घोल के पिला देय अगर इमली का सत्त न मिलै तो एक या दो नींबू का रस डाल दे। अगर पारी टर जाय तो दो तीन घंटे पर फिर पिलावै जिस ज्वर का कोई नियम न हो जून कजून आवै तो उसमें पूर्वोक्त प्रकार से कूईनाईन को दिन में तीन बार पिलावै दोही तीन दिन में ज्वर नष्ट हो जाता है सिवाय तेल कच्चे फलों के और सब पथ्य है।

विषम ज्वर यंत्र मंत्र टोटका आदि से भी नष्ट हो जाता है ऐसा अनेक बार अनुभव किया गया है, पन्द्रहा अथवा बीसा यंत्र को मङ्गल रविवार के दिन अष्टगन्ध से पीपल पत्र पर लिख कर लाल सूत्र में लपेट पुरुष के दक्षिण बाहु और स्त्री के बाम बाहु में बांधने से ज्वर नष्ट हो जाता है। किन्तु यंत्र लिखनेवाला आचार-

शील ब्रह्मचारी, वा कुमारी कन्या या पतिव्रता धर्मवती स्त्री होनी चाहिये ।

ज्वराधिकारे मूलिका धारण ।

द्रव्यों में अनेक गुण हैं और उनका रक्त मांसादिकों के साथ ऐसा सूक्ष्मातिसूक्ष्म सम्बन्ध रहता है जिसका जानना बड़े २ विज्ञान दर्शियों को दुर्लभ है किन्तु सम्बन्ध वशात् प्रत्यक्ष फल दर्शन होने से मान लिया जाता है कि अमुक औषधी अमुक रोग को नाश करती है और बहुत सी ऐसी भी दवा हैं जो अपने प्रभाव से कार्य सिद्ध कर देती हैं जैसे (ज्वरंहंति शिरोबद्धा सहदेवीजटा-यथा) शिर में बांधी सहदेई की जड़ ज्वर को नष्ट करती है यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है किन्तु अज्ञानी लोग ऐसे २ प्रभावों को देख गुरुओं के वशीभूत और प्रेत बाधा मानने लगते हैं ।

एकाहिक ज्वरे मूलिका धारण ।

काकजंघाबलश्यामा ब्रह्मादंडीकृतांजलिः ।
पृश्निपर्ण्यपामार्गस्तथाभृङ्गारजोऽष्टमम् ॥
एषामन्यतमंमूलं पुष्येणोद्धृत्ययत्नतः ।
रक्तसूत्रेणसंवेष्ट्य बद्धमैकाहिकंजयेत् ॥
उलूकदक्षिणं पक्षं सितसूत्रेणवेष्टयेत् ।
बन्धयेत्बामकर्णेतु हरत्यैकाहिकंज्वरम् ॥
कर्कटस्यबिलोद्भूतमृदातुतिलकंकृतं ।
एकाहिकंज्वरंहन्ति नात्र कार्य्याबिचारणा ॥

काकजंघा जिसको चकसेनी और मसी भी कहते हैं, बरियारा, काली तुलसी, ब्रह्मदण्डी कृतांजलि पिठिवन अपामार्ग जिसे चिचरी तथा लटजीरा भी कहते हैं और भंगिरा इन आठो चीजों में से चाहे

जिसे पुष्य नक्षत्र में विधिपूर्वक पवित्र होके उखार लावै और उसके जड़ को लाल सूत्र में लपेट कर हाथ या गले में बांधने से एकाहिक ज्वर जिसे अन्तरा कहते हैं छूट जाता है। घुग्घू चिड़िया के दहिने तर्फ का पंख सफेद धागे में लपेट के बायें कान में बांधने से अन्तरा ज्वर नष्ट हो जाता है। कर्कट अर्थात् केकड़ा के बिल की माटी का तिलक करने से भी एकाहिक ज्वर जाता रहता है॥

तृतीयकज्वरे मूलिका बन्धनं।

अपामार्गजटाकट्यां लोहितैःसप्ततन्तुभिः।
बद्धावारेरवेस्तूर्णं ज्वरंहन्तितृतीयकं॥
कर्णस्यमलजालेनवर्तिंकृत्वाप्रयत्नतः।
ज्वालयेत्तिलतैलेनकज्जलंग्राहयेच्छनैः॥
अञ्जयेन्नेत्रयुगलंत्र्याहिकज्वरशान्तये॥

अपामार्ग (लटजीरा) को रविवार के दिन उखाड़ के उसे सात तार के लाल धागे से बांध बांह या गले में बांधने से तिजारी ज्वर का नाश होता है। कान का मैल रुई में लपेट के बत्ती बनावै और कालीतिल के तेल से कज्जल पार के नेत्रों में लगावे तो तिजारी ज्वर का नाश हो॥

चातुर्थिक ज्वरोपायः।

चातुर्थिकोगच्छतिरामठस्य घृतेनजीर्णेनयुतस्यनश्यात्। लीलावतीनांनवयौवनानां मुखावलोकादिवसाधुभावः॥
अखण्डितशरत्कालकलानिधिसमानने।
चातुर्थिकहरंनस्यंमुनिद्रुमदलांबुना॥

भावार्थाः-(रामठ) हींग को पुराने घृत * में घोंटकर नाश लेने से चातुर्थिक ज्वर अर्थात् चौथिया बुखार कैसे नष्ट होता है जैसे (लीलावती) क्रीड़ा करनेवाली नव यौवना † स्त्रियों के मुख देखने से साधु पुरुषों का साधु भाव (धर्म्मशीलता) नष्ट हो जाता है॥

लोलिम्बराज वैद्य रत्नकला को समझा के कहते हैं कि हे शरत-काल के पूर्ण चन्द्रमा के समान रूपवती! (मुनिद्रुम) अगस्त वृक्ष के पत्तों का केवल रस सूंघने से चौथिया ज्वर नष्ट हो जाता है।

अन्यच्च-"वसतिशिरमेघनादमूले, व्रजतितरांविषमो बिलासदृष्टे" हे बिलास दृष्टे, मेघनाद मूल अर्थात् चौराई की जड़ को सिर में बांधने से विषम ज्वर शीघ्र ही नाश होता है। सिर्फ मूल ही की क्या बात है मंत्रादिकों के झाड़ने तथा उतारा आदि करने से भी नष्ट हो जाता है और उसका कारण रक्त का रोग से सम्बन्ध छोड़ाना है॥

तिलांजलांजलि॥

तन्वङ्गिगङ्गोत्तारतोऽभूमौ ममारहाकोप्यसुतस्त-पस्वी। जलांजलिंतस्यकृतेददातु। सैकाहिकस्या-प्यदितेनुजन्मः॥

भावार्थः—गङ्गा जी के तट की उत्तर भूमि पर कोई पुत्र हीन तपस्वी मरा था उस तपस्वी को वह मनुष्य जिसे अँतरा बुखार आता हो यदि तिल के सहित अथवा सिर्फ जल की अंजुलि दे अर्थात् उस तपस्वी के नाम तर्पण करै तो एकाहिक ज्वर जाता

---

* जीर्णघृतो दश वर्षा दूर्द्ध-दश वर्ष के ऊपर होने से पुराना घृत कहा जाता है।

† नव [तरुण] यौवनानामप्रसूतानां-प्रसूता गत यौवना नवयौवना स्त्री तभी कहाती है जब तक लड़का न हो लड़का बाला होने से गत यौवना हो जाती है।

रहै। यही बचन दालभ्य में भी लिखा है* (गङ्गायामुत्तरेतीरे अ-पुत्रोतापसोमृतः। तस्मैतिलोदकंदद्यान् मुच्यतेसन्ततज्वरात्॥ तन्त्रान्तरेतु—बानरस्यकृतिंलिख्य पटिकायां पुनःशृणु गन्धपुष्पाक्षतैर्धूपै रर्चयेत्तांभिषग्वरः) अन्य तन्त्रों में लिखा है कि खरी से बानर के आकार एक मूर्ति लिख कर चन्दन अक्षत पुष्पादि से पूजन करै और इस मन्त्र को पढ़े ज्वरागमन समय में तो ज्वर का बिनाश हो। (मन्त्रः) ओं ह्रां ह्रीं श्रीं सुग्रीवाय महाबल पराक्रमाय सूर्य्यपुत्राय अमित तेजसे एकाहिक द्व्याहिक त्र्याहिक चातुर्थिक महाबल भूतज्वर भयज्वर शोकज्वर बेतालज्वराणां दहदह पचपच अवतर अवतर कलितरव महाबीर बानर ज्वराणां बन्धबन्ध ह्रां ह्रीं हूं फट स्वाहा और भी लिखा है "समुद्रस्योत्तरेकूले कुमुदोनाम-बानरः। तस्यस्मरणमात्रेण ज्वरोयातिरसातलम्"।

ज्वर नाशक माहेश्वर धूप।

हिंगुलंदेवकाष्टंच श्रीवेष्टंघृतमेवच।
गव्यास्थीनितथाध्यामं निर्माल्यकटुरोहिणी॥
सर्षपंनिम्बपत्राणि पिच्छाहिंकंचुकंतथा।
मार्जारविष्ठागोशृंगं मदनस्यफलानिच॥
द्वेबृहतोवचा चैव कार्पासास्थितुषास्तथा।
छागगोमायुविट्चैव हस्तिदंतस्तथैवच॥

* दालभ्य नामक एक बहुत प्राचीन स्त्रोत्र है उसके द्वारा मार्जन करने से बिषमज्वरादि रोग छुट जाता है। हमारे पुराने पण्डित लोग तो उसका प्रभाव ऐसा ही बर्णन करते हैं कहां तक सत्य है नहीं कह सक्ते किन्तु इतना अवश्य कहेंगे कि मंत्र यंत्रादि सर्वथा मिथ्या नहीं है।

एतत्सर्वंसमाहृत्य छागमूत्रेणभावयेत्।
उलूखलेतुसंकुट्य स्थापयेन्मृन्मयेशुभे॥
घ्राणमात्रेणधूपोयं दीयतेयत्र वेश्मनि।
नतत्रसर्पस्तिष्ठन्ति नपिशाचा न राक्षसाः॥
एषमाहेश्वरोधूपः सर्वज्वरविनाशनः।
एकाहिकं द्व्याहिकंवा त्र्याहिकंच चतुर्थकम्॥
एवमादीनूज्वरान् सर्वान् नाशयेन्नात्रसंशयः॥

हिंगुल, देवदारु, (श्री वेष्ट) जिसको इगुब, वंगदेश में सरल वृक्ष और कहीं २ रालाधूप कहते हैं इसी से तारपीन तैय्यार होता होता है। घी, गौ की हड्डी, रोहित घास, बेलपत्र, कुटकी, पीलीसरसों नींब के पत्र, मुरैले का पंख, सांप की केंचुल, बिलार का विष्टा, गौ की सींग, मैनफल, भटकटैया और बड़ी भटकटैया जिसे बन-भांटा कहते हैं दोनों का पञ्चांग, वच, बेनउर (कपास का बीज) धान की भूसी, बकरी और सियार का बिष्टा, हाथी दांत, इन सब चीजों को एक में मिला के बकरी के मूत्र की भावना अर्थात् उसी में सबों को तर कर के सुखाय लेय, बाद खरल में कूट महीन करके किसी अच्छे बरतन में रख दे और समय पर धूप देवे इस माहेश्वरधूप के प्रभाव से घर में सर्प पिशाच राक्षस रह नहीं सक्ते और अन्तरा आदि सब ज्वरों का नाश होता है। धूप देते समय इस मन्त्र को पढ़े—ओं नमो भगवते रुद्राय उमापतये सम्पन्नाय नन्दिकेश्वराय स्वाहा। अपराजित आदि और भी अनेक ज्वर नाशक धूप हैं जिन्हें पांचवें खण्ड में बयान करेंगे। इस बयान से हमारे नव शिक्षितगण जो प्राचीन पुरुषों के इतिहासों को कभी नहीं देखा सुना है और न उनके हृदय में ऐसी शक्ति है कि जो स्वयं अनुभव कर सकें नहीं विश्वास करेंगे हां यदि कोई अंगरेज आ के लेकचर में यही बात कहे तो निस्सन्देह श्रद्धा की बात समझी जायगी।

ज्वरनाशक दीपः।

कृष्णोरगोन्मत्तबीजगन्धगोशृङ्गतैलजः।
मृत कर्पटवर्त्याचदीपःसर्वज्वरापहः॥
कृष्णसर्पवसा, धत्तूरबीजतैलं, वृषभशृङ्गतैलं
एभिर्मृतकवस्त्रवर्त्यादीपः सर्वज्वरापहः॥

काले सांप की चर्बी, धतूर के बीज का तेल गन्धक और बैल के सींग का तेल सब को एकत्रित कर मुरदे के ऊपर के कपड़े (कफन) की बत्ती बनाय उक्त तैलों में दीपक जलाकर गृह में रखने से सम्पूर्ण विषम ज्वरों का नाश होता है। यह क्रिया भीम बिनोद ग्रन्थ में लिखी है।

जीर्णज्वर की चिकित्सा।

जीर्ण ज्वर में दोनों समय गुर्च का काढ़ा पिलाने से बहुत फायदा देखा गया है अथवा शितोपलादि चूर्ण को सहत में चटाय के ऊपर से गुर्च का काढ़ा पिलाने से और भी जल्द फायदा होता है। लाक्षादि तैल को मर्दन करने से भी लाभ देखा गया है।

उपद्रव शमनोपायः।

ज्वर रोग में जो उपद्रव बढ़े हों उसके शांति करने के उपाय अब संक्षेप से प्रकाश करते हैं क्योंकि बढ़े हुये उपद्रव अत्यन्त क्लेश दायक होते हैं बिना उन्हें शांत किये रोगी को चैन नहीं मिलता इस लिये जिस प्रकार वे शांत हों उसी तरह की चिकित्सा करनी किन्तु इतना अवश्यमेव ध्यान में रहे कि कोई क्रिया ज्वर की बिरोधिनी न हो।

कोष्टबद्ध।

पित्त ज्वराधिकारी ज्वर में तो कुछ दस्त होता भी है किन्तु

बाताधिकारी ज्वर में तो मल सूख जाता है और बिना मल उतरे ज्वर नहीं धिमाता इस लिये यह दवा देना जरूरी है।

बड़ा हड़का बक्कल, हरीसनाय शोंठ, और कालानोन सबों को बराबर ले कूट कपड़छान कर लेय छ मासा अथवा कुछ अधिक चूर्ण को रात में गरम जल के साथ खिला देनेसे सबेरे खुलाशा दस्त आ जाता है। अगर मिजाजमें गरमी अधिक हो तो दो तोला गुलाब के गुल कन्द और दो तोला सीरखिस्त दोनों को जल में पीस गुनगुना कर पिलाय देय दस्त अवश्य होगा।

पिपासा।

अगर रोगी को पियास अधिक हो तो इस पानी को पिलावै। धान का लावा चार तोला बरोंह (बरगदके वृक्ष में जो जटा सा लटकता है) २ तोला, कमलगट्टे की गरी १ तोला तीनों चीजों की पोटरी पानीमें डाल दे और उसी पानी को पिलावै यदि रोगी गरम पानी पीता हो तो गरमही जलमें पोटरी को डालदे अथवा बारम्बार शीतल चीनी को मुखमें डालके कुचले और जल उतार जावै। अथवा आंवला, कमलगट्टे की गरी, कूट, धानके लावा, बरोंह सबों को बराबर ले महीन पीस शहदमें सान के गोली बांधलेय इस गोली को मुख में रखने से पियासकी आधिक्यता और मुख का सूखना नाश होता है। रोगी की शरीर में दाह की आधिक्यता हो तो पित्तज्वराधिकार में जो दाह शान्ति कारक उपाय लिख आये हैं उन्हीं के द्वारा शान्ति करना।

मस्तक पोड़ा।

मुलेठी, हरदी, नागरमोथा, अनार का फल वा छाल अमलवेत, काला सुरमा, इमिली खस, तेजपात, कमलगट्टे की गरी, दालचिनी नख इन सब दवाइयों को महीन चूर्ण कर बिजौरा नींबू रस शहद और मधुसूक्त तीनों चीजों में महीन घोंट ज्वरार्त मनुष्य के शिर पर लेप करने से शिरका दर्द, बिहोसी, जी का मचलाना, हुचकी और देह का कांपना यह सब शांत होते हैं। और जो मनुष्य पियास

और अन्तर्दाह करके अत्यन्त पीड़ित हो तो विदारीकन्द (पाताल कुम्हड़ा) अनार, लोध, कैथे की छाल, नीबू का छिलका सबों को महीन पीस शिर पर लेप करने से शान्त होता है। ज्वर चिकित्सा का शेष प्रकरण पञ्चम खण्ड में प्रकाश होगा अब ज्वर के अन्तिम नियम को लिखते हैं।

ज्वरान्ते पथ्यं।

परिषेकावगाहांश्चस्नेहान् संशोधनानिच।
स्नानाभ्यंगदिवास्वप्न शीतव्यायामयोषितः॥
नभजेत् तुज्वरोत्सृष्टो यावन्नो बलवान् भवेत्।
त्यक्तस्यापिज्वरेणाशु दुर्बलस्यो हितैर्ज्वरः॥
प्रत्यापन्नोदहेद्देहं शुष्कबृक्षमिवानलः!
तस्मात्कार्यःपराहारो ज्वरमुक्तेनदेहिना॥

ज्वर छुट जाने के बाद मनुष्यको चाहिये कि जब तक शरीर बलवान न होजाय निम्नलिखित कर्मों से पहरेज रक्खे जैसे—जल से शरीर को सींचना बहुत पानी में रहना या बुड्डी मारके नहाना, घृतादि का पीना, शोधन करना, स्नान करना उबटन तेल लगाना दिनको सोना बहुत शीतल पदार्थों का खाना कसरत अथवा बहुत दौड़ धूप करना, स्त्री प्रसङ्ग आदि, कारण यह कि जिस का ज्वर छुट भी गया है कुपथ्य करने से पुनः वही ज्वर रक्त मांसादि में घुसकर मनुष्य के शरीर को ऐसा दग्ध करता है जैसे सूखे बृक्ष को अग्नि, इस लिये ज्वर छुट जाने पर भी जब तक ताकत न आवै ज्वर नाशक उपाय करते रहना और ज्वर छुट जानेके बाद अरुचि अंगकी शिथिलता बिवर्णता और मलादिक बृद्धि हो तो शोधन उपाय करना क्योंकि शोधन न करनेसे अन्य रोग उत्पन्न होजाने का डर है और ज्वर छुट गया उस का कोई बिकार भी दृष्टि गोचर नहीं होता किन्तु शरीर निर्बल है तौ भी उसको एकाएकी पौष्टिक द्रव्य (पाकादि) न सेवन कराना चाहिये क्योंकि बिना बल अग्नि

नहीं खुलती और बिना अग्निके पौष्टिक द्रव्य न पचैगा बल्कि जठराग्नि नष्ट होके ज्वर का पुनरागमन होना सम्भव है।

हृतावशेषं पित्तं तु त्वक्स्थंजनयतिज्वरम्।

पिबेदिक्षुरसंतत्र शीतंवाशर्करोदकम्॥

पित्त ज्वर शांत होनेके बाद यदि चमड़ा में कुछ पित्त का अंस रह जाय तो ऊख का रस अथवा चीनी का सरबत पिलाके ठीक करना क्योंकि वह पित्त फिर ज्वर को उत्पन्न कर सक्ता है।

अथ जीर्णज्वर चिकित्सा।

जीर्ण ज्वर का आदि कारण, निदान और कुछ चिकित्सा चतुर्थ खण्ड में लिख चुके हैं इस स्थल में पूर्ण रूप से चिकित्सा लिखते हैं। पाठकगण को याद होगा कि जो ज्वर २१ दिन व्यतीत होने पर शरीर में सूक्ष्म रूप हो कर बना रहै और तापतिल्ली मन्दाग्नि आदि उपद्रव को उत्पन्न करै उसे जीर्णज्वर अर्थात् पुराना ज्वर कहते हैं इस बुखारवाले को उपवास, वमन, जुलाब और गरम दवा का उपचार कदापि न करै क्योंकि पुराने ज्वर में मनुष्य का रक्त मांसादि सब क्षीण हो जाते है और लंघन आदि करने से और भी क्षीण हो रोगी के मरजाने का डर रहता है। यदि ऐसा ही वातादि कोई उपद्रव बढ़ा देखे तो उसके दमन के लिये सिर्फ एक दो लंघन चाहे भले ही करा दे, इसमें वचन है।

जीर्णज्वरी नरःकुर्य्यान्नोपवासं कदाचन।

ज्वरक्षीणस्यनहितं वमनंनविरेचनं।

कामंतु पायसंतस्य निरूहैर्वाहरेन्मलान्॥

पुराने बुखारवाले को उपवास, वमन और बिरेचन नहीं कराना बल्कि उसको इच्छा पूर्वक गौ का दूध पिलाना और दस्त न होता हो तो निरूह वस्ति याने पिचकारी के जरिये से सञ्चित मल को निकाल देना चाहिये।

पुराणज्वरे पथ्यम्।

मूंग अथवा अरहर की दाल, पुराने चावल का भात, गेहूं या जवे की रोटी, गाय बकरी का दूध घृत मातदिल और हलकी तरकारी, धनिया, सफेद जीरा, कालीमिर्च, बड़ीलायची आदि मसाला। यदि खांसी न हो तो आलूबुखारा, जरेक्स या आंवला कैथे की चटनी, जीरा मिर्च पुदीना सेन्धानोन मिला के देय और खांसी आती हो तो खटाई कोई भी नहीं देनी चाहिये। शीतल दवाइयों का उपचार, शरीर में उपटन आदि तथा औषधियों का बनाया हुआ तेल को शरीर में लगा के स्नान करना, सफेद चन्दन, कपूर, केशर, गुलाब जल में घिस कर अंग में लेप करना, पुष्पों का माला पहिरना, गङ्गाजल या पहाड़ी झरणों का जल या आसूद जल अथवा परिश्रुत जल (फिल्टरवाटर) का पीना शाम सवेरे शुद्ध वायु का सेवन, चन्द्र की चांदनी, प्रिया का आलिङ्गन सब पुराने ज्वरवालों को हित है।

जीर्णज्वर पर स्वर्णमालिनीवसन्त।

स्वर्णमुक्तादरदमरिचं भागवृद्ध्यागृहीतं।
खर्प्परषष्टौप्रथममखिलं मर्द्दयेन्म्रक्षणेन॥
यावत्स्नेहोव्रजतिविलयं मर्द्दनेदीयतेसौ।
गुञ्जाद्वन्द्वमधुमगधया मालिनीपूर्ववसन्तः॥

शुद्ध सोने का वर्क (तबक) १ मासा, अनवेधी छोटी मोती दो मासा, मकसूदा वादी शुद्ध सिमरख तीन मासा काली मिर्च छिलका रहित चार मासा, शुद्ध खपरिया इसको रसक * और सङ्गमिश्री भी कहते हैं आठ मासा सबों को कुचल खूब महीन पीस एक तोला

* रस दो प्रकार का होता है १ दर्दुर यह मोटा दलदार २ दूसरा कारवेल्लक नामक रसक पतला होता है। जो खपरिया रंगमें पीली

मक्खन और सब दवा को खरल में डाल एक पहर तक घोटै बाद उसके कागदी नींबूका रस डाल कर घोटै जब तक मक्खन की चिकनाई दवा से बिलकुल न निकल जाय बाद उसके तीन २ मासे की टिकिया बनाय के सुखाय ले इसकी मात्रा एक रत्ती से ४ रत्ती पर्य्यन्त है । इस स्वर्ण मालतीं वसन्त को दोनों समय एक मासा गुर्च का सत्त दो छोटी लायची और एक रत्ती छोटी पीपर मिलाय के शहद के सङ्ग चाटने से जीर्णज्वर का नाश होता है किन्तु खानेको कुछ दूध और रातमें मलाई मिश्री मिलाके अवश्य देवे ।

वसन्तमालिनी ।

रसकयुगलभागं वल्लिजंभागमेकं द्रुतयमपिसुखल्वेमर्द्दयेन्मृक्षणेन । भवतिघृतविमुक्तोनिंबुनीरेणयावज्ज्वरहर मधुकुल्या मालिनीप्राग्वसन्ता॥ जीर्णज्वरेधातुगतेऽतिसारेरक्तान्विते रक्तजवेष्टरोगम् । घोरव्यथेपित्तकृतेचदाहे बलप्रदोदुग्धयुतंचपथ्यं ॥ प्रदरंनाशयत्यासौ तथा दुर्नामसोनिता । विषमंनेत्ररोगंच गजेन्द्रमिव केशरी ॥

सोधी खपरिया १० तोला कालीमिर्च ५ तोला दोनों को महीन पीस ५ तोला मक्खन डाल के एक प्रहर घोटै बाद नींबू के अर्क में

पत्रवान है सो उत्तम है खपरिया शुद्ध करने की वैद्यक में अनेक विधी लिखी है जिसे रसप्रकरण में लिखेंगे । खपरिया क्या वस्तु है इसकी उत्पत्ति स्थान कहां है कैसे होती है अब तक किसी ग्रन्थमें दृष्टिगोचर नहीं हुआ । लोग कहते हैं टकसाल घर में जिसमें सोना चांदी गलाया जाता है उसी घरियाको खपरिया कहते हैं नागार्जुन आचार्य्य कहते हैं कि काला पीला लाल खपरिया किसी पृथ्वी में दीख पड़ता है ॥

घोटै जब तक मक्खन की चिकनाई दूर न हो अगर एक दो दिन के घोटने से चिकनई अच्छी तरह न निकलै तो टिकरी बना के सुखाय लेय और फिर नींबू के रस में घोटै इसी प्रकार तीन चार मरतबे घोटने से बिलकुल चिकनई निकल जाती है तीन २ मासे की टिकिया बना के सुखाय लेय यह बसन्त मालिनी काले रंग का होगा।

दूसरी रीति—अगर खपरिया अच्छा न मिले तो उस की जगह शुद्ध जस्ते का भस्म लेवै किन्तु वह भस्म किसी औषध के द्वारा न हुआ हो, पूर्वोक्त प्रकार उसे भी घोंट कर तैयार कर लेय यह बसन्त मालिनी सफेद रंग की होगी इसकी तासीर शीतल है मात्रा एक रत्ती से चार रत्ती पर्य्यन्त इसको गुर्च का सत्त छोटी लायची और शहदके सङ्ग चाटने से गरमी से उत्पन्न जीर्णज्वर कैसाहू पुराना हो आराम होता है कुरैयाके छाल के काढ़ा अथवा अवलेहके साथ चाटने से रक्तातिसार रक्त पित्तसे अथवा पीनस रोग से नाक के भीतर लोहू की पपड़ी जमती हो तो यह बसन्तमालिनी शहद के साथ या आवले के मुरब्बा के साथ खाने से निहायत फायदा करती है इसको शहदके साथ चाट कर ऊपरसे गौके कच्चे दूध में मिश्री मिलाके पीने से रक्त विकार से या पित्त से अथवा धातुक्षयसे उत्पन्न अन्तःकरण का दाह शांत होता है दो बसन्तमालिनी और एक मासा रसवत दोनों को शहद में मिलाके खाने से खूनी बवासीर से लोहू का आना गुदा की जलन आदि उपद्रव दूर होता है इसको चिकने पत्थर पर पानी से महीन घोट आखों में अंजन देने से धुन्ध जाला नाखूना आखोंसे पानी का बहना बन्द होता है और नेत्र की ज्योति बढ़ती है॥

जीर्णज्वर गरमी से रोगी की शरीर रूखी होजाती है उसका कारण बायु का कोप है ऐसी अवस्था में जब तक वायु शमन नहीं किया जाता बिमारी नहीं छुटती इसलिये बायु शांति होने के वास्ते घृत दुग्धपान करावै क्योंकि जैसे जलते हुये घर में जल डालने से अग्नि की शांति होती है वैसा ही रूखे शरीरमें घृत दुग्ध के डालनेसे बायु की शांति होती है इसमें बचन भी है "लंघनेनक्षयंहन्तिपित्त

हन्तिससर्करा । घृतेनबातजान्रोगानसर्बरोगानगुड़ान्वित" नमक से कफ का नाश, मीठी चीजों से पित्त का नाश, बायु से उत्पन्न जितने रोग हैं घृत पान से शांत होते हैं और प्राचीन गुड़ मिश्रित औषधियों के द्वारा प्रायः सर्ब रोगों का नाश होता है । यह सिद्ध हुआ कि पुराने बुखार (जीर्ण ज्वर) में घृतपान करना श्रेष्ट है किन्तु किस बिधी से पिलाना सो कहते हैं ॥

अगर बिमार बहुत दुर्बल बलहीन हो गया हो खाना न पचता हो या दस्त पतले आते हों तो आधा तोला घृत से प्रारम्भ करावै, गो घृत आधा तोला, सहत ३ मासा मिश्री ३ मासा तीनों को एक में मिला के पहले ४।५ दाना गोल मिर्च मुख में कुचल कर ऊपर से घृत पीजावै और उस समय पानी न पीवै। अथवा आधा तोला मक्खन बराबर की मिश्री मिला के रोज सबेरे खिलावै और जैसे २ पचता जाय मात्रा बढ़ाता जावै। अगर रोगी का मल सूख गया हो तो आधपाव गरम पानी में आधा तोला घृत और ३ मासा सैंधा-नोन डाल के पिलावै ।

बासादि घृत ।

बासांगुडूचींत्रिफलां त्रायमाणां दुरालभां ।
पक्त्वातेनकषायेण पयसोद्विगुणेन च ॥
पिप्पली मुस्तमृद्वीका चन्दनोत्पलनागरैः ।
कल्कीकृतश्चविपचेद् घृतंजीर्णज्वरापहं ॥

जिस जीर्णज्वरवाले को खांसी सहित ज्वर बना रहता हो और शरीर सूखी जाती हो तो बासादि घृत पिलावै । बनाने की बिधि-रूसा की पत्ती, गुरिच, त्रिफला बिधारा और जवासा इन पांचों चीजों को एक २ छटांक ले अधकचराकर एक मृत्तिका पात्र में चार सेर पानी में रात को भिजा देय सबेरे पकावै जब चौथाई पानी रह जाय शीतल कर मल के छान लेय । गौ अथवा बकरी का दूध २ सेर, छोटी पीपर, नागरमोथा, मुनक्का बीजरहित, लालचन्दन,

कमलगट्टे की गरी (बीच में हरी पत्ती रहती है उसे निकाल डालै) और बैतरासोंठ सबों को एक २ तोला ले शिल पर पानी डाल के खूब महीन पीस लुगदी बनाय लेय गौ अथवा बकरी का घृत १ सेर रांगे की कलई की हुई कढ़ाही को चूल्हे पर चढ़ाय घृत लुगदी दूध और काढ़ा को छोड़ धीमी आंच में पकावै जब दूध काढ़ा वगैरह सब जल जाय घृत मात्र रह जाय चूल्हे पर से उतार शीतल कर छान के अमृतबान में रख दे इसका मात्रा छ मासा से दो तोला तक है। सवेरे रोगी को पिलावे ऊपर से पानी पीने को न देय, गले से चिकनाई दूर करने के लिये सेंधानोन जरा सा खिलावे या एक दो पान का बीड़ा खावे १५-२० मिनट के बाद पानी पीने में हर्ज नहीं है अगर रोगी को दोनों समय पूर्ण मात्रा घृत निर्विघ्न पच जाय तो और अधिक घृत भी पी सका है यह बासादि घृत जीर्ण-ज्वर को निस्सन्देह नाश करता है। अगर घृत पान से खांसी कुछ बढ़ जाय तो घृत पिलाना बन्द नहीं करना चाहिये खांसी शमन होने का भी उपाय करता जाय घृत पचन होने लगने पर खांसी स्वयं शान्त हो जायगी।

पिप्पल्यादि घृत।

यह घृत भी जीर्णज्वर को नाश करता है ऐसा कई बार अनुभव किया गया है। यदि उपरोक्त घृत पान करने सेरोग में कुछ शमन न देख पड़े तो उसके बाद पिप्पल्यादि घृत अवश्य पिलावे रामआ-सरे पर न बैठा रहै छोटी पीपर, लाल चन्दन, नागरमोथा, सुगन्ध वाला कुटकी इन्द्रजव आंवला सरिवन अतीस मुनक्का भटकटैया का पञ्चांग इन सबों को तीन २ तोला ले सबों को अधकचरा कर पूर्वोक्त प्रकार पांच सेर जल में भिजावे दूसरे दिन काढ़ा बनाय गौ या बकरी का घृत एक सेर दूध २॥ सेर सबों को कढ़ाई में चढ़ाय मन्दाग्नि में पचा लेवे इस घृत का भी मात्रा वही है जो बासादि घृत का है उपरोक्त दोनों घृतों को रोगी रोटी दाल के साथ भी खा सक्ता है यदि अच्छा लगै तो॥

क्षीर घृत प्लीहाधिकारे ।

अगर जीर्णज्वरी को खांसी ज्वर के अलावा प्लीहा भी हो जिसे कछुई तिल्ली और बरवट भी कहते हैं तो इस घृत को अवश्य पिलावै ॥

पिप्पलीपिप्पलीमूल चव्यचित्रकनागरैः ।
ससैन्धवैश्चपलिकैर्घृतप्रस्थंविपाचयेत् ॥
क्षीरञ्चतुर्गुणंदत्वा तत्सिद्धं प्लीहनाशनम् ।
विषम ज्वरमन्दाग्निहरंरुचिकरंपरम् ॥

छोटी पीपर, पिपरामूल, चाब, चीता, वैतरासोंठ, और सेंधा-नोन इन पांचो औषधों को एक २ छँटाक ले पूर्वोक्त प्रकार क्वाथ बनाय एक सेर गौके घृत में चार सेर गौ या बकरी के दूध के सहित मन्दाग्नि में पचाय घृत सिद्ध कर लेय इसका भी मात्रा चार मासा से दो तोला तक है यह घृत प्लीहा रोग जीर्णज्वर विषमज्वर और मन्दाग्नि को नाश कर रुचि को बढ़ाता है ।

जीर्णज्वरे दुग्ध योगः ।

क्षीणेकफेज्वरेजीर्णे अल्पदोषे पिपासिते ।
दाहार्ते तुपयोज्यं तेनैवतुविषम्भवेत् ॥

चौथे खण्ड के ज्वर चिकित्सा में यद्यपि ज्वर में दूध खाने की विधि निषेध लिख आये हैं प्रसङ्गबस इस स्थल में भी दुग्ध योग पुनः लिखते हैं ।

जिन प्रमेह या प्रदर रोग होके ज्वर रोग हुआ हो और वह ज्वर पुराना होगया हो अथवा जिस पुराने ज्वर में कफ सूख गया हो अथवा अल्प दोष होने के कारण पियास और दाह अधिक बढ़ा हो तो उस रोगी को अवश्य दूध पिलावै या निम्नलिखित क्षीर पाक बना के पिलावै फायदा निस्सन्देह करैगा ।

पञ्चमूली क्षीरपाक।

सर्वज्वराणांजीर्णानां क्षीरम्भैषज्यमुत्तमं।
श्वासात्कासाच्छिरःशूलात्पार्श्वशूलात्सपीनसात्।
मुच्यतेज्वरितःपीत्वा पञ्चमूलीशृतंपयः॥

जो जीर्णज्वर वाला रोगी अत्यन्त दुर्बल हो गया हो कि जिसे अत्यन्त दाह रहने पर भी बलगम बढ़ने अथवा पसुरी में दर्द होने का डर हो तो पञ्चमूली क्षीर पिलावै। पञ्चमूली अर्थात् पांच वृक्ष की जड़ वह यह है सालिपर्णी (सरिवन) पृष्टपर्णी (पिथिवन) दोनों कटेरी (छोटी भटकटैया बड़ी भटकटैया) और बड़ा गोखुरू इन पांचों वृक्षों की जड़ सब दो तोला ले अधकचरा कर एक मृत्तिका पात्र में आध सेर दूध और दो सेर पानी डाल के धीमी आंच में पकावै जब पानी जलजाय दूध अकेला रह जाय अग्नि पर से उतार शीतल कर छान लेय और उसी दूध को थोड़ा २ कर दिन भर रोगी को पिलावै अगर फीका दूध पीने में रोगी अरुचि प्रगट करै तो थोड़ी सी मिश्री दूध में मिलाय देय किन्तु प्रथम उपरोक्त विधि से सिर्फ आधपाव दूध तैयार करके पिलावै फिर जस २ पचता जाय क्रमशः बढ़ाता जावै। इस दूध के पिलाने से श्वास खांसी शिर दर्द पसुरी का दर्द जुकाम और पुराने ज्वर को फायदा होता है।

सितादि क्षीर।

सिताज्यविश्वखर्जूरी मृद्वीकाभिःशृतंपयः।
पृथ्वीचविल्वत्रपांभूपयश्चोदकमेवच।
क्षीरावशिष्टतत्पीतं तद्धिसर्वज्वरापहं॥

शोंठ छुहारा और मुनक्का बीजरहित तीनों चीजों को पूर्वोक्त प्रकार तौल में ले उसमें दूध को पानी के सहित तैयार कर थोड़ी

मिश्री और सहत डाल के पिलावै इस के पीने से ज्वर का नाश, कोष्ट परिष्कार और मेदे में ताकत आती है। अगर मल पतला अथवा आम का कुछ उपद्रव हो तो यह दूध पिलावें। बेल की गरी २ तोला शोंठ ६ मासा दोनों को एक पाव गौ के दूध में एक सेर पानी डाल के पकावै जब दूध अकेला रह जावे तो थोड़ा २ करके कई बार रोगी को पिलावें।

वर्धमान पिप्पली।

त्रिवृध्यापञ्चवृध्यावा सप्तवृध्याथवाकणा।
गव्यक्षीरेणसंपिष्टः पिवेद्दशदिनानिह ॥
एवं विंशद्दिनैस्सिद्धं पिप्पलीवर्धमानकम्।
अनेनपांडुवातास्त्रकासश्वासारुचिज्वराः ॥
उदरार्शः क्षयश्लेष्मवातानश्यन्त्युरोग्रहाः ॥

यद्यपि यह बर्द्धमान पीपल का योग, विशेष कर पांडुरोग पर है किन्तु अनेक बार देखा गया है कि श्लेष्म युक्तजीर्ण ज्वर को नाश करता है। शुद्ध छोटी पीपल को एक २ तीन अथवा पांच २ करके जैसी ताकत हो अर्थात् जहां तक पच सके गरमी दाह जलन पियास की आधिक्यता उत्पन्न न करै सेवन करै और उसके सेवन करने की दो बिधि है प्रथम यह कि पीपल को गौ के दूध में पीस लुगदी बनाय मुख में रख दूध से उतार जावै अथवा पीपल को टुकड़े २ कर पाव आध पाव दूध में चौगुना पानी दे के पकावै जब पानी जल जाय दूध मात्र रह जाय पीपल निकाल के फेक देय और दूध पी जावै और कितने वैद्य पीपल भी खिला देते हैं यद्यपि उसका खिला देना कोई हानि कर नहीं है किन्तु वह पीपल सत्त रहित है। पूर्वोक्त प्रकार पीपर चाहै जिस रीति से खावै दश दिन तक बराबर बढ़ाता जावै जैसे एक पीपल से आरम्भ करै तो दूसरे दिन दो तीसरे दिन ३ इसी प्रकार अगर तीन पीपल से आरम्भ करै तो

दूसरे दिन छ तीसरे दिन नौ ऐसा ही दश दिन तक बराबर बढ़ाता जावै दश दिन के बाद क्रमशः वैसा ही घटाना आरम्भ करैं इस प्रकार बीस दिन पर्य्यन्त निरन्तर पीपल सेवन से जीर्णज्वर पांडु रोग खांसी स्वास मन्दाग्नि और कफ का नाश होता है।

जीर्णज्वरे दुग्ध फेनम्।

गोदुग्धप्रभवंवाकम्बा छागीदुग्धमथापिवा।
भवेत्फेणत्रिदोषघ्नं रोचनंबलबर्द्धनम्॥
वन्हि वृद्धिकरंपथ्यं सद्यस्तृप्तिकरंलघु।
अतिसारेऽग्निमांद्येच ज्वरजीर्णप्रशस्यते॥

इस बात को हम कह चुके हैं कि जीर्णज्वरी रुक्ष रोगी को घृत अथवा दूध पिला के उसकी रुक्षता दूर करना नितान्त आवश्यक है और इसी लिये कई क्रियायें घृत दूध की भी लिख दी गई हैं अब इस बात को दिखलाना है कि अधिक दिन शरीर में बिमारी के रहने से मेदा ऐसा कमजोर हो जाता है कि घी दूध को कौन कहै रोटी दाल का पचना मुस्किल पड़ जाता है, दूसरे आजकल के हमारे सहयोगी वैद्यगण जीर्णज्वरी को सिर्फ रूखी अरहर की दाल और रोटी खिला के रोग आराम करने के पलटे रोगी के आंत, रक्त, मेदादि को इतना सुखा डालते हैं कि हजम होना तो दूर है दो तोला भी अन्न पेट में जाने से दस्त हो जाता है तो ऐसी अवस्था में रुक्षता निवारणार्थ सिवाय दुग्ध फेन सेवन कराने के अन्य उपाय नहीं। जब देखे कि रोगी निहायत निर्बल और कमजोर होगया है और अग्नि निहायत हद्दर्जे की दुर्बल है, तो दुग्ध फेन पिलाना आरंभ करै जब दूध का फेन पचने लगै तब क्षीर पाक अथवा घृत पिलावै॥

दुग्ध फेन बनाने की विधि यह है कि जैसे भांग छाननेवाले भांग को दो लोटों में बारम्बार मिलते हैं उसी प्रकार तात्कालिक दुहा गौ अथवा बकरी के दूध को दो लोटों में ले बारम्बार एक से

दूसरे में ऊपर की धार से उड़ेले उसमें जो फेन उत्पन्न हो उसे किसी बर्तन में निकालता जावे जब फेन आना बन्द हो जाय दूध अलग करदेय, दूध का फेन दूध के मथने से भी निकल सक्ता है किन्तु मथानी के मथने से फेन के साथ मक्खन (घृत) भी आ जाता है इसलिये मथने की अपेक्षा दूध को फेंट के फेन लेना उत्तम है। बस उसी फेन में जरासा मिश्री डाल के रोगी को पिलावे इसी प्रकार दोनों समय पिलावे यह दुग्ध का फेन त्रिदोष नाशक, रुचिकारी, बलबर्द्धक, जठराग्निबर्द्धक और एक प्रकार का पथ्य है तथा शीघ्रही तृप्ति कर एवं हलका है। इस दूध के फेन को अग्निमन्द, अतीसार और जीर्णज्वर में अवश्य पिलाना चाहिये ॥

लाक्षादि तैल ।

लाक्षाढकं क्वाथयित्वा जलस्य चतुराढकैः !
चतुर्थांश श्रृतंनीत्वा तैलप्रस्थं विनिःक्षिपेत् ॥
मस्त्वाढकं त्वगोदध्नस्तत्रैवविनियोजयेत् ।
शतपुष्पामश्वगन्धां हरिद्रां देवदारुच ॥
कटुकीरेणुकांमूर्वां कुष्टंचमधुयष्टिकाम् ।
चन्दनंमुस्तकं रास्नां पृथक्कर्षप्रमाणतः ॥
चूर्णयेत्तत्रनिःक्षिप्य साधयेन्मृदुवन्हिना ।
अस्याभ्यंगात्प्रशाम्यन्ति सर्वेऽपिविषमज्वराः॥
कासश्वासप्रतिश्यायत्रिकपृष्टग्रहास्तथा ।
वातपित्तमपस्मारमुन्मादंयक्षराक्षसान् ॥
कंडूंशूलंचदौर्गंध्यं गात्राणांस्फुरणंजयेत् ।
पुष्टगर्भाभवेदस्य गर्भिण्यभ्यंगतोभृशम् ॥

इस लाक्षादि तैल का गुण विषम ज्वर नाशक लिखा है और श्लोक में जीर्णज्वर का नाम नहीं है लेकिन यह तेल जीर्णज्वर को भी नष्ट करता है ऐसा अनेक बार परीक्षा करके देखा गया है। अनेक ग्रन्थोंमें लाक्षादि तैल अनेक विधि सहित लिखे हैं किन्तु उपरोक्त औषधियों के सहित यह तैल सब तैलों से उत्तम और गुणकर है।

पीपर की लाही तीन सेर १६ तोला लेकर १२ सेर ३ पाव ४ तोला पानी में एक दिन रात भिजा रक्खे अगर मट्टी के घड़े में भिजावे तो १ सेर पानी अधिक देवे दूसरे दिन मन्दाग्नि से पचावे, चौथाई जल बाकी रहै शीतल कर छान लेय काली तिलका तेल ३ पाव ४ तोला कढ़ाई में डाल उसी में लाही का पानी और गौ के दही का तोड़ ३ सेर ३ तोला डाल के पचावे और निम्नलिखित औषधों की लुगदी बना के उसी तेल में डाल दे। सौंफ असगन्ध, हल्दी, देवदारु, कुटकी, रेणुका बीज, मुर्रा, कूट मुलेठी, सफेदचन्दन, नागरमोथा, और रासन, इन सब दवाइयों को ले पानी में खूब महीन पीस लुगदी बनाय उसी तेल में डाल के धीमी आंच से पचावे जब पानी बिलकुल जल जाय तेल मात्र रह जाय अग्नि पर से उतार शीतल कर कपड़े में छान बोतल में भर कर रख देय। इस तेल को रोज सवेरे रोगी के समस्त शरीर में धीरे २ दो तीन घण्टा तक मालिस करै अगर रोगी सबल हो और स्नान करने की इच्छा प्रगट करै तो तैल लगाने के एक घंटे बाद स्नान करा देवे अगर रोगी कमजोर हो शरीर पर जल पड़ने से जाड़ा मालुम होता हो तो स्नान करा के बदन पोछ लिया करै। इस तेल के लगाने से जीर्ण ज्वर विषमज्वर खांसी स्वास जुकाम कमर पीठ का जकड़न वात-पित्त मृगी, उन्माद भूतबाधा खजुरी पेट का दर्द शरीर की दुर्गन्धता और अङ्गों का फरकना आदि नाश होता है इस तेल के मालिस कराने से गर्भिणी का गर्भ पुष्ट होता है।

अगर निम्नलिखित रूप से लाही का रस तैयार करके लाक्षादि तैल बनावै तो और भी अधिक गुणकर हो और सिद्धान्त ग्रन्थों का मत भी यही है।

दशांशंलोध्रमादाय तद्दशांशं चस्वर्जिकां।
किंचिच्चबदरीपत्र बारिषोड़शवामतं।
बस्त्रपूतोरसोग्राह्यः लाक्षायाःपादतोपितः॥

लाक्षादि तैल यह ज्वर रोग पर प्रसिद्ध तैल है और प्रायः सभी वैद्य इसे बनाते हैं परन्तु लाही का रस किस प्रकार निकाला जाता है इसे बिरलाही लोग जानते हैं इसका कारण यह है कि एक दो पुस्तक पढ़ा बस वैद्य बन गये यह सब बातें अनेक ग्रन्थों के अवलोकन से होती हैं लाख का रस निकालने की बिधि यह है कि जितनी लाख हो उसका दशवां भाग लोध लेवे और लोध का दशवां भाग सज्जी और अन्दाजन थोड़ी सी बैर की पत्ती पहले लाही को एक दो पानी से धो डाले ताकि लाही का गरदा मैल निकल जाय और लाही से सोलह गुना पानी डाल के एक रात दिन भिजा रक्खे दूसरे दिन लोध वगैरह डाल चूल्हा पर चढ़ाय धीमीं आंच से पचावै जब चौथाई जल रह जाय उतार कर कपड़े से छान लेय इसके रस से लाक्षादि तैल बनाना उत्तम होगा।

जिस जीर्णज्वर में दाह अधिक हो हाथ पैर के तलुये बहुत जलते हों गर्मी से बेचैन हो तो निम्नलिखित तैल को मालिश करे।

षट्तक्र तैल।

सुवर्चिकानागरकुष्ठमूर्वा लाक्षानिशालोहित-यष्टिकाभिः। सिद्धं हरेत्षट्गुणतक्रपक्व तैलंज्वर-दाहसमन्वितंच॥

सज्जीखार सोंठ कूट मूर्वा लाही हरदी सफेदचन्दन और जेठी मधु इन सब दवाइयों को समान भाग कर के एक सेर ले अधकचरा कर सोलह सेर पानी में रात में भिजा दे सवेरे अग्नि पर पकावै जब चौथाई पानी रह जाय मल के छान लेय और एक सेर काले तिल का तेल और तिस्से छ गुना गौ का माठा या गौ के दही का

तोड़ (पानी) सबों को कड़ाही में चढ़ाय धीमी आंच से पचाय लेय जब तेल सिद्ध हो जाय छान कर बोतल में भर के रख देय, इसके मालिस करने से दाहज्वर और शीतज्वर अर्थात् जीर्णज्वरी को चाहे जलन मालूम होता हो अथवा जाड़ा मालूम होता हो दोनों शांत होते हैं।

दुष्ट जल जनित ज्वर चिकित्सा।

बहुत दिनों का रक्खा हुआ जल के पीने से, रास्ते में तालाब, कुण्ड, सोता के जल पीने से, जिस जल में फूल पत्ती पेड़ के सड़ गये हों या मेड़क आदि कीड़े पड़े हों उस जल के पीने से अथवा उसमें स्नान करने से, बारम्बार बहुत जल के पीने से, अथवा कहीं से थका आया हो श्रम को बिना शांत किये ही अधिक जल पी लेने से प्रायः लोगों को ज्वर हो आता है और जो लोग कोमल प्रकृति के हैं, जिनका खाना पीना एक समय में अन्दाज से बन्धा है हमेशा एक ही कुआं का जल जिनके पीने में आता है उन्हें दूसरे देश में जाने से जुकाम या ज्वर रोग प्रायः हो जाता है इस लिये बिदेश जानेवाले को चाहिये कि रास्ते में जल बहुत बिचार के पिये या निर्मली आदि चीजों से जल को रोज शुद्ध कर लिया करै अथवा निम्नलिखित औषध को खाता जावै तो जल का बिकार न हो।

माहार्द्रकयवक्षारौ पीत्वाचोष्णेनवारिणा।
नानादेशसमुद्भूतं वारिदोषमपोहति॥

अदरख अथवा शोंठ चार मासा, जवाखार चार मासा, दोनों को एकमें मिलाय दो मात्रा करै एक मात्रा सवेरे और एक मात्रा साम को गरम जल के साथ पीता जावै तो बिदेश गमन के रास्ते में चाहे जहां का जल पीता जावै पानी का दोष न होगा॥*

भोजनादौनरैर्भुक्तं शुंठीराज्यभयोत्थितं।
कल्कंतुभजतेनित्यं नानादेशोद्भवंजलं॥

---

* हमारे यहां की सुधासागर बटी सदा सेवन करने से कहीं के पानी का असर नहीं होता दाम ॥) है।

शोंठ, राई और हड़ का बक्कल तीनों को बराबर चार मासा लेकर शिल पर पानी के साथ पीस के लुगदी बनाय लेय, बाद लुगदी को मुख में रख पानी से उतार जावे । इस लुगदी को जो मनुष्य हमेशा भोजन के पहले खाता रहै उसे किसे देश का जल बिकार नहीं करैगा यह अनुभूत है । अथवा रोज सबेरे थोड़ी सी नींब की पत्ती पीस के जलके साथ पीता जावै तो भी किसी देश के जल का बिकार नहीं होगा । अगर दुष्ट जल के पाने से ज्वर आगया हो तो इस चूर्ण को शहद साथ चाटने में निस्सन्देह ज्वर जाता रहता है ॥

किरातादि चूर्ण ।

कटुचिरायता, कालीनिशोथ, नागरमोथा, बायुबिरंग, कूट और शोंठ यह सब एक २ तोला, छोटी पीपल छः मासा सब को कूट कपड़छान कर दो मासे की पुड़िया बनाय लेय दिन में तीन दफे याने चार २ घंटे पर अर्थात् सबेरे दोपहर और शाम को शहद के साथ चाटै तो दुष्ट जल जनित ज्वर रोग बहुत जल्द आराम हो ॥

ज्वर खांसी का उपाय ।

खांसी बहुत कारणों से लोगों को आने लगती है किन्तु ज्वर रोग में अधिक शीतल जल पीने से, शरीर में अधिक शर्द हवा के लगने से, खट्टी चीजों के खाने से, अथवा यकृत अर्थात् कलेजे पर शोथ होने से खांसी आने लगती है । क्षयकास का लक्षण जैसा आयुर्वेद में लिखा है वही सम्पूर्ण लक्षण जीर्णज्वर में कलेजेमें शोथ हो के खांसी आने लगती है मिलते हैं फर्क यह होता है कि जीर्णज्वर होने के बाद खांसी आने लगती है और क्षयकास में पहले खांसी आने लगती है पीछे ज्वर होता है ॥

साधारण ज्वर से लेकर जीर्णज्वर तक किसी ज्वर में खांसी हो तो प्रथम इस बात को अवश्य विचार लेना चाहिये कि यह खांसी खुष्क है या तर और उसका पहिचान यही है कि खुष्क खांसी में बलगम मुस्किल से निकलता है, और पतला बलगम आता है । तर खांसी में बिना परिश्रम खांसी आते ही बलगम अंठा का अंठा झठ

से बाहर निकल आता है और खांसी बन्द हो जाती है। अगर तर खांसी आती हो तो इस दवा को चटावै॥

कासेकणाकणामूलं कलिद्रुमफलंरजः।
सविश्वभेदजंलिह्यान्मधुनावावृषारसं॥

छोटीपीपल, पिपरामूल, वहेरा का छिलका और बैतगासोंठ इन चारों चीजों को समान भाग ले महीन चूर्ण कर दो २ मासे की पुड़िया बनाय लेय, एक पुड़िया में तीन मासा रूसे की पत्ती का रस और तीन मासा शहद मिला के चटा दे इसी प्रकार शाम सवेरे चटावै अगर रात को खांसी की तकलीफ अधिक हो तो नौ दश बजे रात को भी उसी प्रकार एक पुड़िया चटा देय अगर रूसे का रस न मिले तो केवल शहद के साथ चटावै और निम्नलिखत गोली को तैयार कर रोगी को चूसने को देय अर्थात् गोली रोगी के मुख में पड़ी रहै॥

तरखांसी पर गोली।

तुल्यालवङ्गमरिचाक्षफलत्वचःस्युः सर्वैसमोनिगदितःखदिरस्यसारः। बब्बूलवृक्षजकषायुतंचचूर्णं कासान्निहन्तिगुटिकाघटिकाष्टकान्ते॥

लौंग, कालीमिर्च, वहेरा का छिलका तोनों चीजों को समान भाग ले और तीनों चीजों के बराबर खूब साफ पपरिया कत्था अर्थात् (जिसे हाथीपांव कत्था कहते हैं लेय) सबों को महीन चूर्ण करो बबूल के छालके काढ़े में खूब घोंटकर मटर के बराबर गोली बना लेय जब खांसी आवे एक गोली मुख में डाल के चूसे इसी प्रकार दिन रात में एक रोगी १० १२ गोली तक चूस सक्ता है किन्तु इस बात पर अवश्य ध्यान रहै कि बलगम सूखने न पावे। उपरोक्त अवलेह तथा गोली अगर रोगी को गरमी करै याने पेट में जलन मालूम हो, पियास बढ़े गला सूखे तो अवलेह और गोली की मात्रा कम कर देय

और इस अवलेह को बना के दिन में कई बार चटावै ताकि बलगम गीला बना रहे और निकलता जावे ॥

कफार्द्रकर अवलेह।

हंसराज १ तोला, मुलेठी १ तोला, तुख्मखतमी ८ मासा, उन्नाव ७॥ तोला, और जूफा ६ मासा इन सब दवाइयों को अधकचरा कर आधसेर जल में रात को भिजा दे, सबेरे मन्दाग्नि में पचावे जब आधापानी जल जाय शीतल कर मल के छान लेय और आधापाव मिश्री डाल के अवलेह बनाय लेय दिन रात में रोगी को जरा जरा कई बार चटावै। इस अवलेह के चटाने से कफ सूखने नहीं पाता। उपरोक्त बटी चूर्णादिकोंके देने से खांसी में कुछ शान्ति न देख पड़े तो इस चूर्ण को शहद के साथ दोनों समय चटावे। यद्यपि यह चूर्ण ग्रहणी रोग पर प्रधान है किन्तु खांसी और स्वास में भी इस चूर्ण का सेवन करा के देखा गया है कि बहुत फायदा करता है ॥

जातीफलादि चूर्ण ॥

जातीफललवंगैला पत्रत्वंनागकेशरम्।
कर्पूरचन्दनतिल त्वक्क्षीरीतगरामलैः ॥
तालीसपिप्पलीपथ्या कृष्णजीरकचित्रकैः।
शुंठीविडङ्गमरिचान् समभागानिचूर्णयेत् ॥
यावत्येतानिसर्वाणि कुर्याद्भंगांचतावतीम्।
सर्वचूर्णसमादेया शर्कराचभिषग्वरैः ॥
कर्षमात्रंततःखादेन्मधुनाप्लावितंसुधीः।
अस्यप्रभावात्ग्रहणी कासस्वासारुचिक्षयाः ॥
वातश्लेष्मप्रतिश्यायाः प्रशमंयांतिवेगतः ॥

जायफल, लौंग, छोटीलायची के दाने, तेजपात, दालचिनी,

नागकेशर, कपूर* सफेदचन्दन, कालीतिल, बंसलोचन, तगर, सूखा आंवला, तालीसपत्र, छोटोपीपल, कालाजीरा, चीते की छाल, सोंठ बायबिरंग, और कालीमिर्च इन सब औषधियों को समान भाग ले कूट कपड़छान कर उतना ही अर्थात् सब चूर्ण के बराबर धुली हुई भांग के चूर्ण को मिलाय, सबों के बराबर मिश्री मिलाय देय इसी का नाम जातीफलादि चूर्ण है इसका एक कर्ष† का मात्रा लिखा है और एक कर्ष १६ मासा का होता है (जो वैद्य अनभिज्ञ हैं, किताबी नुसखा से रोगियों की दवा करते हैं उनसे रोग का आराम होना दूर रहा और बिमारी बढ़ जाती है और अन्त में लोग वैद्य और वैद्यककी निन्दा करते हैं। क्योंकि १६ मासा के मात्रा में ४ मासा भांग हुआ सो जो कभी भांग नहीं खाते उनके लिये ४ मासा भांग बहुत अधिक है किन्तु जो एक मुद्दत से बीमार है जिसका दिल दिमाग निहायत कमजोर हो रहा है ४ मासा उसके लिये किस कदर हानिकर होगा? एक छोटी सी बुद्धि रखने वाला भी कह सक्ता है कि निस्सन्देह नुकसान करैगा। इस चूर्ण की मात्रा एक मासा पर्य्यन्त है और जो लोग भांग खाते हैं उन्हें भी ५ मासा से अधिक मात्रा नहीं देनी चाहिये। इस चूर्ण को सहत के साथ, या सरबत गुलबनफ्सा या सरबत उन्नाब के साथ चटाने से ग्रहणी,

---

* कपूर के तीन भेद हैं जैसे चीनिया कपूर पत्रकपूर आदि किन्तु शुद्ध कपूर लिखने से भीमसेनी कपूर समझना लेकिन मिलता तो है नहीं—बाज़ार में मामूली कपूर जो बिकता है उसी को खूब साफ निर्म्मल देख के ले लेय।

† वैद्यक शास्त्र में कर्ष के पर्य्याय १३ नाम लिखे हैं और व्युत्पत्ति में वे सब सार्थक समझ पड़ते हैं। जैसे अक्ष नाम भी कर्ष के हैं और अक्ष बहेड़ा को कहते हैं तो बहेड़ा के बराबर दवा के तौल को कर्ष समझना इसी प्रकार (पाणितल) गदोरी भर (तंदुक) तेंदू के फल के बराबर (षोड़शिका) इस नाम से कर्ष का प्रमाण १६ मासा का माना गया है आज कल के वैद्यवर कर्ष का एक मात्रा एक तोला मानते हैं किन्तु अप्रमाणिक हैं।

अतीसार, खांसी, अरुचि कफदाई, बात कफ, की वृद्धि और जुकाम आराम होता है। बहेरा का छिलका, अनार का छिलका, मुलेठी, खेर की डली मुख में रख कर चूसने से भी खांसी में फायदा होता है। दिन में कई बार गुदा में तेल लगाना भी खांसी को फायदा करता है।

खुश्क खांसी की गोली।

कतीरागोंद २ तोला मीठीलाकी की बीज की गरी १ तोला सबों को महीन चूर्ण कर तीन २ मासे की पुड़िया बना लेय. दिन में तीन दफे बराबर की मिश्री मिलाय जरा सा पानी डाल के गीला कर दो मासा सहत मिला के चटावे और निम्नलिखित बटी तैयार कर चूसने को देय॥

पपरिया कत्था १ छँटाक, खतमी के बीज २ तोला, गोंद बबूल १ तोला, कतीरा गोंद १ तोला बहेरा का छिलका १ तोला मुलेठी २ तोला कपूर ६ मासा। इन सब दवाइयों को खूब महीन चूर्ण कर बिहीदाना के लुआब में महीन घोट के मटर बराबर गोली बनाय ले जब खांसी आवे एक गोली मुख में डाल के चूसे, एक दिन रात में एक रोगी ८, १० गोली तक चूस सकता है। गोली चूसने की रीति यह है कि गोली मुखमें पड़ी रहे कुचल कर खा न जावे जिह्वाके रस (थूक) से गोली स्वयं पिघलेगी जैसे २ पिघलती जाय कुछ तो पीच उसका निगल जाय कुछ थूक दिया करै। इस गोली के चूसने से खांसी में छाती पर का जमा हुआ कफ पक के निकल जाता है और खांसी जाती रहती है॥

अगर खांसी प्रतिश्याय याने नजले के साथ हो अर्थात् पहले जुकाम हुआ हो, इसमें भी लोग बिना समझे बूझे गरम दवा खिला देते हैं यहां तक कि उसे बड़ी भारी बीमारी समझ रसतक दे देते हैं जिससे कि छाती का कफ सूख कर गला सांय २ करने लगता है और फिर भी बिना कारण समझे रस की बढ़ती किये ही जाते हैं अन्ततोगत्वा उस बिचारे पराधीन रोगी को यमालय का रास्ता तका देते हैं।

पाठकगण यह सब अमूल्य विषय जो हमने बड़े परिश्रम और आयुर्वेद से हासिल किया है आप लोगों की सेवा में अर्पण करते हैं आशा है कि आप लोग इस ग्रन्थ के अनुसार रोगियों की चिकित्सा कर के अवश्य यश के भागी होंगे सम्पादक को भी यश और धर्म के भागी बनावेंगे ॥

याद रहै कि अगर जुकाम से ज्वर हुआ हो तो कोई गरम औषध न देके निम्नलिखित हकीमी फन्ट को पिलावै ।

जुकाम पर फान्ट ।

गुलबनफ्सा, ६ मासा, मुलेठी ३ मासा, तुख्मखतमी २ मासा, मुनक्का ६ दाना उन्नाव ४ दाना और मिश्री १ तोला । आधपाव जल को एक गिलास में खूब गरम करै जब उफान आने लगै अग्नि पर से गिलास को उतार ऊपरकी सब दवाईयां कूचलकर मै मिश्री के उसी गिलास में डाल के ढांप देय, जब शीतल हो मल के छान कर पिला देय, इसी प्रकार दोनों समय पिलावे, छ सात दिन इस फांट के पिलाने से जुकाम बिलकुल पच कर आराम हो जायगा । बहुत से लोग जो इस बात को नहीं जानते कि जुकाम के रोकने से शरीर को क्या हानि पहुंच सकी है, जुकाम होते ही गरम दूध गुड़, या गुड़ अजवायन, अथवा अफीम या सराब पीलेते हैं लेकिन इन चीजों के पीने से नजला रुक कर बलगम सूख के छाती और मस्तिष्क में लपट जाता है जिससे श्वासादि बीमारी लोगों को हो जाती है इस लिये मनुष्य को चाहिये कि जुकाम को गरम दवाइयों से कभी न रोके ।

श्वासोपद्रव !

ज्वर रोग में प्रथम उपद्रव श्वास का है सो छाती पर कफ सूख जाने से होता है । यह भी उपद्रव ऐसा दुष्कर है कि शीघ्र यत्न न करने से शीघ्र ही प्राण हरण करता है प्राण हर रोग तो बहुत से हैं परन्तु जितना शीघ्र श्वास और हिचकी प्राण हरण करते हैं अन्य नहीं ।

छोटी पीपल, कायफल और ककड़ासिंही तीनों को समान भाग ले महीन चूर्ण कर एक मासा अथवा आधा मासा चूर्ण को दब जाता है। अगर बलगम का जोर बहुत अधिक हो और इस चूर्ण के चाटने से एक दो रोज में श्वास दबा न देख पड़े तो।

दत्त्वांमृगमदचूर्णं गुंजैकञ्चार्द्रकरसेन।
अपहरतिशीघ्रमेवश्वासं श्लेष्मोल्वणत्वञ्च॥

कस्तूरी आधी रत्ती अथवा एक रत्ती दो मासे आदी के रस में घोटकर पिलादे अगर रोगी कमजोर हो तो एकही दफे में न पिलावै एक १ चावल या दो २ चावल भर तीन चार दफे करके आदी के रसमें घोट के पिलावै अगर इससे भी श्वास दबा न देख पड़े तो

धतूरमूलमादाय छायाशुष्कंप्रकल्पयेत्।
तत्त्वचोधूम्रपानेन श्वासोनश्यतिसत्वरम्॥

धतूर के जड़ की छाल को छाया में सुखाय तीन मासा के अन्दाज चिलम में भर रोगी को धूमपान करावै यदि रोगी धूमपान करने में असमर्थ हो तो न पिलावै। छाती को धुरा अथवा पोटली से सेंक करै।

उद्धूलनप्रकर्तव्यं शुंठीभांधोश्चवक्षसि।
तेनशाम्यतिशीघ्रेण श्वासंपरमदारुणम्॥
वालुकापुटकैःस्वेदोलवणंवापियच्छति।
श्वासकासेप्रकर्तव्यंकफस्तम्भप्रवृत्तये॥

बैतराशोंठ को तवे पर अधभूंजा कर महीन चूर्ण बनाय छाती पर मलने से बहुत जल्द श्वास दब जाता है यदि शोंठ के धुरा से न दबै तो निम्नलिखित पोटली से सेंक करै।

भरभूंजे के भार का बालू और सेन्धानोन दोनों को एकत्रित कर दो पोटली बनावै, एक तवे को अग्नि पर धर उसी पर पोटली

को गरम कर आहस्ते २ छाती गला और गले के रगों को सेकें। बस अगर उपरोक्त उपायों से श्वास का दबना दृष्टिगोचर न हो तो गरम दवाइयों का देना बिलकुल बन्द कर देना चाहिये क्योंकि इससे अधिक गरम दवाइयों के व्यवहार से निस्सन्देह रोगी मर जायगा, उस अवस्था में जान लेना चाहिये कि इसे श्वास का जोर सरदी से नहीं है बल्कि गरमी से है और उसे जुकाम और खुष्क खांसी की चिकित्सा जो ऊपर लिख आये हैं उन प्रयोगों के द्वारा श्वास के वृद्धि को शांत करै। ऐसी अवस्था में लोग छाती पर पलस्तर लगा देते हैं अथवा एक प्रकार का ऐन्टमेन्ट हैलिन्ट में लगा के चपका देते हैं। इससे भी कहीं २ लाभ देखने में आया है किन्तु श्वास के लिये यह उपाय जो ऊपर हम लिख आये हैं निहायत परीक्षित हैं बिना किसी विशेष कारण के निष्फल नहीं जाता है।

मूर्छा चिकित्सा।

ज्वर का दूसरा उपद्रव मूर्छा है, मूर्छा बिहोशी को कहते हैं, जिसके वेग से रोगी की चैतन्यता जाती रहै उसी को मूर्छा, बिहोशी गफलत और असंज्ञता कहते हैं। यह भी उपद्रव ऐसा दुष्कर है (प्राणैर्विमुच्यते शीघ्रं मुक्त्वासद्यःफलाक्रियां) कि यदि उसमें तत्काल सिद्धि दायक चिकित्सा न की जाय तो मनुष्य शीघ्र ही मर जाता है।

मूर्छा को संस्कृत में असंज्ञता कहते हैं (असंज्ञता संज्ञोपघातः) असंज्ञता उसे कहते हैं जिसमें संज्ञा का नाश हो। मूर्छा याने बिहोशी अन्य रोगों के बढ़ने में भी होता है किन्तु ज्वर रोग की गरमी मस्तिष्क में पहुंचने से अक्सर मूर्छा हो जाता है। इसी को वैद्य लोग सीत में डूबा समझ रसों की भरती कर रोगी को यमालय पहुंचाय देते हैं। मूर्छावस्था में वैद्य को चाहिये कि बड़ी बुद्धिमानी के साथ चिकित्सा करके रोगी के प्राण की रक्षा करै क्योंकि जरा भी विपरीत चिकित्सा होने से रोगी बहुत जल्द मर जाता है।

इस स्थल में हमें यह भी बतला देना बहुत जरूरी है कि मूर्छा दो प्रकार की होती है एक तो मस्तिष्क (शिर का मध्य भाग) का खून प्रथम गरम होजाता है बाद श्लेष्मा के साथ मिल के जम जाता है यह प्रायः सन्निपात ज्वर में होता है और उसका लक्षण यह है कि ज्वर होने लगता है और मूर्छावस्थामें आंखें खूनके समान सहत में गीला करके दिन रात में तीन चार बार चाटने से श्वास लाल हो जाती हैं आंखें बिलकुल ढपी रहती हैं अथवा कुछ खुली भी रहें इसमें शीतल चिकित्सा जैसे शिरपर बरफ रख देना अथवा शिर पर शीतल जल का धार देना मना है ऐसी चिकित्सा करनी चाहिये जिससे रक्त बलगम से अलग हो अधोगामी रगोंमें फैल जाय दूसरा हृदय से बात पित्त की गरमी उठकर मस्तिष्क में जाके भरजाती है जिससे रोगी बदहोस हो जाता है।

चिकित्सा।

प्रथम प्रकार की मूर्छा में जो सन्निपात रोग में अञ्जनादि लिखे हैं उन उपायों से हटाना अथवा निम्नलिखित अंजन लगा के रोगी को सचेत करना॥

शिरीषबीजंगोमूत्रंकृष्णामरिचसैंधवैः।
अञ्जनंस्यात्प्रबोधायसरसोनशिलावचैः॥

सिरसाके बीज, छोटी पीपर, काली मिर्च और सेंधानोन एक एक रत्ती, मैनसिल आधी रत्ती, लासुन का टुकड़ा दो चावल भर सबों को चिकने पत्थर पर गोमुत्र में खूब महीन काजलके समान घोंट रोगी के आंख में अंजन लगावै निश्चय है इससे रोगी चैतन्य होगा लेकिन मूर्छावस्था में खाने के लिये कोई गरम दवा नहीं देना चाहिये छोटी पीपर का चूर्ण १ मासा सहद के साथ चटाना मीठे अनार का रस पिलाना अथवा मुनक्का छोहारा खस नागकेशर कमलगट्टे की गरी सब दवाइयों को समान भाग ले क्वाथ बना मिश्री डाल के दिन में कईबार पिलाने से फायदा देखा गया है॥

जो सिर्फ शिरपर गरमी पहुंचने से मूर्छा हुआ हो तो उसे निम्नलिखित उपायों से शांत करै॥

अंगूर अथवा ऊख का शिरका जिसमें कुछ मिला न हो दो तोला गुलाब जल अथवा सिर्फ जल १ पाव रोगनगुल अथवा गरी का तेल दो तोला तीनों को एक में मिला उसी में एक सफेद कपड़ा तरकर के शिरपर रक्खे और जब सूख जाय फिर भिजादे इसी प्रकार जब तक होश न आवे बराबर रक्खा रहै और सूंघने को हरा खीरा काटके या खस का अतर सूंघने को देय अगर देखे कि कई दिनोंसे दस्त नहीं हुआ है तो मुलायम रेचन द्वारा अथवा पिचकारी के जरिये से बहुत जल्द दस्त करा दे ऐसी २ बिमारियों मे मल मूत्र पर प्रथम ही दृष्टि देनी चाहिये क्योंकि मल मूत्र में गरमी पहुंचने से भी मनुष्य को सन्निपात, मूर्छा प्रलाप हृत्कम्प आदि उपद्रव उठ खड़े होते हैं और उन्हें साफ करने से निवारण हो जाते है॥

अगर बहुत दस्त आने से मूर्छा हुआ हो तो बहुत शीतल उपचार न करै नाभी पर गरम तेल मलै और सोंधी चीज सुंघावे तथा दस्त बन्द करने का उपाय करै अगर हिचकी आते २ बिहोसी हुई हो तो मुलेठी मैनफल का पानी पिलाके बमन करावै इत्यादि, किन्तु ऐसी अवस्था में विद्वान् सद् वैद्य की सहायता लेना बहुत जरूरी।

अरुचि।

किसी चीज का स्वाद न मालूम हो उसे अरुचि कहते हैं यह सर्व साधारण ज्वर में हो जाता है और जब तक ज्वर पूर्णरूप से निर्गत नहीं होता अरुचि नहीं जाती। अगर खांसी तेजी के साथ न हो तो कागदी नींबू में जरा सा कालीमिर्च और कालानोन का चूर्ण भर आग पर भूंज रोगी को चटावै।

बमन।

रोगी के पीने वाले पानी में थोड़ा सा पुराना चावल भिजादे आध घंटे के पश्चात् मल के छान ले और उसी जल को थोड़ा २

पिलावै इससे बमन बन्द होजायगा शायद इससे बन्द न हो तो कमलगट्टे की गरी एक तोला पावभर पानी में पकावै जब आध पाव पानी रह जाय मल के छान लेय और उसमें ६ मासा मिश्री डाल के दो २ घंटे पर पिलावै इससे जरूर बमन सूखी ओकी का आना बन्द होगा ।

हिचकी ।

ज्वर रोग में हिचकी का आना आकाश यात्रा के लिये मानो यमराज का पुकारना है ठीक हिचकी रोग वैसा ही है इसमें कोई सन्देह नहीं है वैद्य को चाहिये कि हिचकी प्रारम्भ होतेही चिकित्सा करना शुरू करै ।

नीरेणसिन्धूत्थरजोतिसूक्ष्म नस्येतिनूनं विनिहंतिहिक्कां । शुंठोहठाद्वासितयासमेता धूपो थवाहिंगुसमुद्भवश्च ॥

दो तोला पानी में तीन मासा निमक खूब महीन घोट नाश देने से अथवा ६ मासा सोंठ को आध पाव पानी में पकाय मल छान कर एक तोला मिश्री मिलाय उसे कई बार पिलाने से अथवा हींग की नाक में धूनी देने से सिर्फ एक ही प्रयोग से अथवा तीनों प्रयोग से हिचकी रोग का नाश होता है ।

शिरोलेप ।

विशेषमपरंचात्र शणूपद्रवनाशनम् ।
मधुकंरजनीमुस्तंदाड़िमञ्चाम्लवेतसं ॥
अंचनंतिन्तिरीकञ्च नलदंपत्रमुत्पलं ।
त्वचंव्याघ्रनखंचैव मातुलुङ्गरसोमधु ॥

दिह्यादेभिज्वरार्त्तस्य मधुशुक्तयुतैःशिरः।
शिरोभितापसंमोहबमिहिक्काप्रवेपथून्॥
प्रदेहोनाशयत्येष ज्वरितानामुपद्रवान्॥

सुश्रुत महाराज कहते हैं कि इसके आगे विशेष औषध ज्वर के उपद्रवों को नाश करने वाली सुनो महुआ के वृक्ष का फल वा अतर छाल, हल्दी नागरमोथा, अनार का फूल वा अमलबेत, अमिली की छाल छरीला बाल छड़ तेजपात, कमलगट्टे की गरी, दालचीनी व्याघ्रनख नामक सुगन्ध द्रव्य, बिजौरा नींबू का छिलका इन सबों को ले महीन चूर्णकर थोड़ा सा शहद अंगूर अथवा जामुन का सिरका मिलाय ज्वर पीड़ित वाले के शिर और माथे पर लेप करने से शिर की तीव्र पीड़ा शिरका जलन बिहोसी बमन अथवा जी का मचलाना या मुख में पंछा छूटना हिचकी और बदन का कांपना नष्ट होता है बस अब ज्वर के उपद्रवों की चिकित्सा समाप्त करके ज्वर छुट जाने के बाद क्या पहरेज करना चाहिये सो लिखते हैं॥

ज्वर छुट जाने का लक्षण।

लघुत्वंशिरसःस्वेदो मुखमापाण्डुपाकिच।
क्षवथूश्चान्नकांक्षाच ज्वरमुक्तस्यलक्षणम्॥

शरीर हलकी हो, शिर में खफीफ पसीना आवै, मुख की पियराई या मलीनता जाती रहै मुख कुछ पक जाय अथवा न भी पकै, छींक आवै, और भूख लगे तो जानना की ज्वर छुट गया॥

ज्वर छुट जाने पर परहेज।

परिषेकावगाहाँश्चस्नेहान्संशोधनानिच।
स्नानाभ्यङ्गदिवास्वप्न शीतव्यायामयोषितः॥

नभजेतज्वरोत्सृष्टो यावन्नोबलवान् भवेत् ।
त्यक्तस्यापिज्वरेणाशु दुर्बलस्याहितैर्ज्वरः ॥
पुनस्थापन्नोदहेद्देहं शुष्कवृक्षमिवानलः ।

झरना या बौछार से भीजना नदी या तालाबादि गम्भीर जलमें डुब्बी लगाना, तैल घी का पक्वान खाना अथवा स्नेहादि पीना बमन बिरेचनादि से शरीर शुद्ध करना खूब शिर से स्नान करना तेल उपटन लगाना दिन में सोना अधिक शीतल पदार्थ का सेवन कसरत और स्त्री प्रसङ्ग आदि कर्म्मों से ज्वर छुट जाने के पश्चात् जब तक शरीर खूब बलवान न होजाय पहरेज करै क्योंकि ज्वर से छुटा दुर्बल मनुष्य को उपरोक्त अपथ्यों से पुनः ज्वर आके ऐसे दग्ध करता है जैसे सूखे वृक्ष को अग्नि ॥

यावन्नप्रकृतिस्थः स्याद्दोषतःप्राणतस्तथा ।
ज्वरेप्रमोहोभवति स्वल्पैरप्यवचेष्टितैः ॥
निषण्णभोजयेत्तस्मान्मूत्रोच्चारौचकारयेत् ।
आरोचकेगात्रसादे वैवर्ण्येऽङ्गमलादिषु ॥
शांतज्वरोऽपिशोध्यःस्यादनुबंधभयान्नरैः ।

इस लिये ज्वर से छुटे मनुष्य केजितने दोष हैं जबतक बल से अपने स्वभाव में स्थित न हो ले तितने अहित पदार्थ का परिहार करना उचित है क्योंकि थोड़े भी बिरुद्ध चेष्टा अर्थात् बल से अधिक खाना पीना चलना फिरना आदि कर्म करनेसे ज्वर सहित बिहोसी आने लगती है इस लिये वैद्य को चाहिये ज्वर से छुटे रोगी को जबतक यथार्थ बलाधान न हो बैठे ही रक्खे अर्थात् रोगी से कोई भी शारीरक काम न कराके उसे दोनों समय अग्नि दोष के अनुसार भोजन करावे और ऐसी बल कारक औषध दे जिससे मल मूत्र भी साफ होजावे

अगर अरुचि बदन में दर्द मुख की पियराई या रूखा पन और शरीर का मैलापन ज्वर के छुटजाने पर भी बना रहै तो वैद्य को चाहिये कि फिर ज्वर होने के भय से उसके दोषों को शोधन करै॥

नजातुतर्पयेत्प्राज्ञः सहसाज्वर कर्षितः।
तेनसंदूषितोह्यस्य पुनरेवभवेज्जरः॥
चिकित्सेच्चज्वरान्सर्व्वान्निमित्तानांविपर्य्ययः।
श्रमक्षयाभिघातोत्थे मूलव्याधिमुपाचारेत्॥

बुद्धिमान वैद्य ज्वर से दुबले हुये रोगी को उसकी इच्छानुसार एक बार किसी चीज से कदाचित तृप्त न करै क्योंकि एक बारगी तृप्तकर देने से दूषित ज्वर उस मनुष्य को फिर हो आता है। हमेशा निदानों के व्यतिक्रमों से सम्पूर्ण ज्वरों की चिकित्सा करै और खेदज्वर क्षयज्वर अभिघातज्वर इन ज्वरों में वैद्य को चाहिये कि मूल व्याधि को दूर करै॥

स्त्रीणामप्रजातानां स्तन्यावतरणेचयः।
तत्रसंशमनंकुर्य्याद्यथादोषं विधानवित्॥

जिन स्त्रियों का बालक मरजाय और दूध के उतरने में जो ज्वर उत्पन्न हुआ हो उस ज्वर को आयुर्वेद विज्ञानदर्शी दोष अनुसार शांत करे।

इति ज्वराधिकारः प्रथमो भागः समाप्तः॥

अनुक्रमणिका ।

विषय		पृष्ठ
ज्वर उत्पत्ति	... ...	२
ज्वर का हेतु	... ...	५
" पूर्व रूप	... ...	"
बात ज्वर का लक्षण	...	६
पित्त ज्वर "	...	७
कफ " "	...	"
ज्वर में लंघन विचार	...	६
" जलपान "	...	१५
" गृहादि "	...	२०
" दूध खाने की विधि		२१
औषध खिलाने का नियम		२४
अपक्व ज्वर लक्षण	...	२५
औषध देने का समय	...	२७
वात ज्वर पर क्वाथ	...	"
पित्त " "	...	२८
" में दाह का यत्न		३०
बात पित्त ज्वर पर फांट		३५
कफ ज्वर की चिकित्सा		३६
सन्निपात के लक्षण	...	३८
साध्यासाध्य निर्णय	..	४४
सन्निपात चिकित्सा	...	४७
विषम ज्वर लक्षण		६१
प्रलेपक " "	...	६४
सप्तधातुगत " "	...	६५
वात बलासक " "	...	६६
आगंतुक " "	...	६७
ज्वर के साध्यासाध्य लक्षण		७०
मन्थर ज्वर लक्षण	"	७२
विषम ज्वर चिकित्सा		७३
जीर्ण ज्वर चिकित्सा		८३
ज्वर के अन्त में पथ्य		८५
पुनः जीर्ण ज्वर चिकित्सा		८६
स्वर्ण मालिनी बसन्त		८८
बसन्त मालिनी	...	८८
वासादि घृत	... ...	६०
पिप्पल्यादि घृत	...	६१
जीर्ण ज्वर में दूध	...	६२
वर्धमान पिप्पली	...	६४
लाक्षादि तैल	... ...	६६
षट् तक्र तैल	... ...	६८
दुष्टजल जनित ज्वर	...	६६
ज्वर में खांसी का यत्न		१००
तरखांसी पर गोली	...	१०१
कफार्द्रकर अवलेह	...	१०२
जातीफलादि चूर्ण	...	"
खुश्कखांसी की गोली		१०४
जुकाम पर फान्ट	...	१०५
श्वासोपद्रव	... ...	"
मूर्च्छा चिकित्सा	...	१०७
अरुचि, बमन, हिचकी		१०६
शिर दर्द पर लेप	...	११०
ज्वर छुट जाने का लक्षण		११[illegible]
ज्वर छुटने पर पथ्य		"

विज्ञापन।

यह तो प्रायः अखबार पढ़ने वालों को मालूम होगा कि आज कल पुस्तकों के रचयिता बहुत हो गये हैं और रोज २ हिन्दी की नई २ पुस्तकें छपती जाती हैं यह बड़े हर्ष और उन्नति का समाचार है किन्तु शोक इस विषय पर है कि मूल्य बहुत अधिक रख दिया जाता है यहां तक कि दो पैसे लागत की किताब का मूल्य चार आना बल्कि इससे भी अधिक ही समझिये इसमें प्रथम तो किसी को खरीदने का हिम्मत नहीं पड़ता दैवात किसी ने खरीदा भी तो विषय को न देखकर पछताने लगते हैं कि ठग गये। इस अभाव को दूर करने के लिये हम ने प्रेस का काम बढ़ा दिया है हिन्दी के उत्तम २ टाइप बम्बई कलकत्ते से मंगाये गये हैं अब यहां अनेक प्रकार के पुस्तकें उत्तम २ बड़ी शुद्धता के साथ छपा करेंगी किन्तु मूल्य उसका बहुत सस्ता रहेगा कि उस कीमत पर आज भारत भर में पुस्तकों का मिलना कठिन है इसके अतिरिक्त जो कोई महाशय कोई ऐसी पुस्तक जो दुनिया के फायदे की हो बनाई हो और छपाने की सामर्थ्य न रखता हो तो यहां भेज देने से छाप दी जायगी और १०० सौ पुस्तक रचयिता को बिना मूल्य दिया जायगा। व्यापारियों को जो २५) से अधिकके खरीदार हों उनको २२ जुज़से ६० जुज़ तक जिसका जैसा कागज़ है पुस्तकें दी जायगी। तथा जो कोई पुस्तक इश्तिहार, बिलफार्म खसरा आदि छपाना चाहें बहुत सस्ते में और बहुत जल्द छाप दिया जायगा पुस्तकों का सूचीपत्र मंगा कर देखिये॥

मैनेजर—

बुकचन्द्र ग्रंथालय-प्रयाग।

सर्व साधारण के परमोपयोगी प्राण रक्षक भारतवर्ष में एक मात्र ग्रन्थ।

आयुर्वेदमार्त्तण्ड पं० जगन्नाथ शर्म्मा राजवैद्य विद्यासागर कृत।

आरोग्यदर्पण पांचों खण्ड तैयार हैं।

इस पुस्तक की अधिक प्रशंसा करना अपने मुख मियां मिट्ठू बनना है, पढ़ने वाले की बुद्धि मनीषा स्वयं समझ जायगी। जो अपने जीवन को अमूल्य समझते हैं उन्हें इस ग्रन्थ को अपने पास अवश्य रखना चाहिये। इस ग्रन्थ में अनर्थक और मिथ्या लोगों को धोखा देने वाली एक बात भी नहीं है सब विषय देश कालानुसार परीक्षित और प्रमाणिक हैं, इसमें एक २ विषय ऐसे हैं जो लाखों रुपये खर्च करने वाले सेठ साहूकारों को दुर्लभ है। इसमें दवाइयों की बनाने की विधि साधारण, और औषधियां अति सुलभ सर्वत्र मिलने वाली लिखी हैं। आज कल औषधियों के जैसे झूठे विज्ञापन बटते हैं उन से लोग धोखा ही नहीं उठाते बल्कि अपनी असली शारीरिक दशा को भी खो बैठते हैं। इसी प्रकार विलायती औषधियां जो अति हिम प्रधान देश के मनुष्यों के प्रकृति के अनुसार परीक्षित हैं षट् ऋतु सम्पन्न के स्वाभाव वालों के लिये वैसा ही है जैसा क्षीर भोजी हंस को मांस खिलाना। इस पुस्तक को पास रखने से किसी से कोई औषध मंगाने की जरूरत न पड़गी, प्रत्येक पुरुष अपने रोगों का निदान मिला कर अपनी चिकित्सा आप स्वयं कर सकता है। भाषा बहुत सरल, प्रमाण में सुश्रुत चरकादि ऋषियों के बचन लिख दिये गये हैं और उसका ठीक ठीक भावार्थ भी खोल दिया गया है। पांच खंड की जिल्द बन्धी पुस्तक का मूल्य ५) और प्रत्येक खंड अलग अलग का १) डाक महसूल अलावा।

मिलने का पता—

मैनेजर सरस्वती भवन पुस्तकालय,

तथा एडवर्ड प्रेस-प्रयाग।